विकाशन।

करे भूडक शान वह राज गर्कनिङ होना छेपी होति। होत कान अन् रहेए ग्रीड के। नाहे, हिन्ह डाटन हाटने कृत्यक देश्यां वि स मध्यक्त अन्न रहें। से प्रसर्वन कन्न निवास्त्र, मरवा मस्या जैनारकनावा निर्दिश्च स्टेह रहे द्याव करि, और भूखक अवनंदमके ज स्थाक्त विकासाम्बर् अवम (अनीम घाजनरनेन लाट्यानरपूरी हरेट न ब्रिक्ट ह शतिरमस्य कुठळलात महिल निस्तनमं कहिएलाई, जिली নদীনান্ত কুল সমূহের ভেপুইটা ইনিপ্পেটর তীযুত বাসুস্তা-্থিকাগ্রসর মুখোপ্যারে প্রভৃতি আমার করেক জন শার্ম বিশ্ব এক এক বার পাঠ করিয়া এই তাতু মুদ্রিত করিতে 🖦 শ্সতি দিয়াছেন। আর আমার সহাধ্যায়ী পরম্বত্ জীবুত বাবু গিরীশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় অনুঞ্জু পুরুষের ইহার দালোপান্ত সংশোধন করিয়া দিয়াছেন 🛴

গ্ৰন্থ।

আঁমুক্ত বাবু কালীপ্রসন্ন সিংহ মহোরর সমীপেতু।

হথেছিত সমান পুরানের নিব্দেন্ট্রের আমি বহু হবে ও পরিশ্রমে এই বাস্থিকা নামক পুন্তক থানি প্রস্তুত করিয়া অপনাকে অর্পুন করিয়ান। বদি এতং পাঠে আপনি সভাই হন তাহা হইকে

कुर्नाभूतः। अश्यक ३३३१, ४ वे १९९वि ।

> उत्तांख रमध्य विद्यानीय मर्चा ।

বাসম্ভিক। ৷

and A. A. Commercial

প্রাপ্য নর্ন।

विश्विकात्म अहे आइउवर्रात वार्यात हिल्लावरी ताः ने नगरीरा विकारमन नाम। এक श्वेदलशाल नवलांक हिल्लन। डाइ।इ स्ट्रानवी नामी लक्ष्म क्लवरी माह्बी हिल उटकारन डाइ।इ स्ट्रानवी नामी कुलांक पृथिवीत सन्। दर्शन इटकारन शांत हिल मा।

अक निरम जूलान स्वाहानन ममिताहाद म्हामक लि विमय द्राक्तांचा भंगालाहमा कहित्वहित्सम, अम्ह भग्रेस প্রতিহারী আদিয়া প্রশিপাত বেঃमর কহিল, মহা-রাজ। ছারপুর হইতে একটা ছুত আদিয়া হারে দপ্তায়মান আছে, দে কহিল, হারেশরের সম্দেশ লইয়া আদিয়াছে সন্মতি হইলে নিকটে আদিয়া আছাত্তান্ত নিবেদন করি-তে পারে, একাণে কি স্বান্তা হয়। রাজা কহিবোন, স্থা-বিজে কহ।

অনন্তর সভাসপ্তলে উপসীত হইয়া দূল নুপতির চরণ-যুগলে গুণাস করিল এবং যথাস্থানে দঞ্জার্যান হইয়া নূপের, সম্ভাষণ প্রতীক্ষা করিতে লাগিল। কেন না স্থা-

र मिलिका पर

नमुक गाँक गुरुवामी कर्क किलानिक ने वेशक छात्र कार काका अत्याभ करा अ गांड अनु कर के में दिनक নূপতি দুতের অভিগ্রায় অনুযান করিয়া ভাইনা পার্কির নইতে মন্ত্রীর প্রতি ইঙ্গিত করিলেন। মন্ত্রী স্থান ইংকে পদ্ম তাহার পরিচরাদি লইয়া নুপতিলোচরে আগমন अत्याजन निर्दरन कतिए करिएलन। कुछ निमञ्जूष्टिन কাহল, মহারাজ! আমরা প্রভুড়াগ্যোপজীবী, তুতরাং প্রভুৱা বর্ধন যে আদেশ করেন, ভাছাই সম্পাদন করিতে হয়। হ'ত এব 'কামি জাপন প্রভুর যে সংবাদ সইরা আ-দিরাছি, শুনিতে আজা হউক। কিন্তু মহারাম্ব ! সামি य मकल वाका विलय, छाहा श्रमितल आंभागात तकांध हहे-বার মন্তাবনা। কেন না সে সকস কথা আপনারই অহিত পরিপূর্ণ। आমি छ।পনকার মনপ্রিফিনা উক্ত বাকা সকল যদি প্রভূমিদেশের বিগরীতব্বপে বর্ণন। করি, তবে অপিন প্রভূকে ও অপেনকাকে বঞ্না করা হয় এবং স্বৰূপ বলিতে সেলেও আপনকার ক্রেন্ধ হইবে, সন্দেহ নাই। অতএব প্রার্থনা করি, এই অবঞ্চক জাতির সদসং বাক্য গ্রহণ করিবেন না। যেনেতু মাদৃশ জনের মুখ নইতে হিড--কর অথচ মনোহর বাক্য নিগত হওয়। অতি তুর্গত।

দৃত এই প্রকার বাগাড়যরের পর প্রস্তান বিষয় কহিতে শারম্ভ করিল। মহারাজ! শ্রবণ করুন, আমানিগের প্রস্তু প্রবল প্রতাপান্থিত মহারাজ কীর্নিপ্রিয় দিয়িজয়ে বাজা করিয়া প্রায় মাসত্রম পারসা দেশান্তর্গত শ্রীরাজনগর জবরোধ করিয়াছিলেন, প্রতিপক্ষেরা স্বদেশ শক্তহত ইতে উদ্ধার করিবার নিমিন্ত নানাপ্রকার কৌশল ও খোরতর সংগ্রাম করিয়াছিল, ক্লিছুতেই ক্লতকার্য হইতে

स्थानिक में प्रतिक निर्माणक कि स्थान करिन, ताका क स्थानिक कि स्थान करिया करिन, ताका क स्वादि स्थानिक स्थान करिया करिन, ताका क स्वादि स्थान करिया करिया करिया करिन प्रमुख्य करिन क्ष्या स्थान करिया कि स्थान करिया कर

দৃত এই শেকারে কথা নমান্ত করিলে মাধ্যাছিক তেথী-ঘোষণা হইল। রাঞ্চা দৃতকে বাসস্থানাদি দিতে মন্ত্রীর প্রতি আদেশ দিয়া অন্তঃপুরে প্রবেশ করিলেন। তথার মানগোলনের পার মহিনীকে দৃতক্ষিত তাবং রুভান্ত ঘোষণত ক্যাইলেন। রাণী কহিলেন, নাব ' ভবেত অ্থি-লয়ে সমর্বামগ্রী আয়োজন করিতে হয়। মুদ্ধার্ণ প্রবজ্ঞ রিপু খোগতপ্রায়; অভ্যাব সৈনাসংশোধন, মুর্গের জীর্থ-সংস্কার, অন্ত্রশন্ত্রাদির শার্শক্রিয়া স্বরায় সমাহিত করা উত্তি।

বাজা কহিলেন, প্রিয়ে। তোমার এই সকল বাকা জা-পাতমনোরম, কিন্তু আঘার মন বছপ্রাণীনাশকা, যুণান্ধর বুদ্ধকার্যো প্রান্তত হুইতেছে না, স্থান্ধর। বল দেখি, ক্ষণ-জন্ম নাংলারিক সুখলনা শত শত জীবের প্রাণ নধ করা কি উপযুক্ত? নমর করিলে যে কর লাভ করিব ভাষারও স্থিত। নাই, কিন্তু ইয়া দির নিস্কান্ত বহিলাহে দে, 8

রণ করিলে জবশাই প্রাণীবিমাশ ক্রান্ত বিরেজ प्रति, अरका गर्मगान जामा स्वर्गान स्वर्गान भारात किशि॰ कर । वित्मवण्य विवश्रक्ष एक हुन श्री कीन इत ना। राहाता विवश्वन कामरम व्यक्ति इत्या ভাৰার বিষমম কল ভোগ করে, তাহারা নির্ভত্ত বছুগায় व्यक्ति वन, भरमार नारे। दिवसद्य-शत्रवण स्टेटल किट ফর্জতাবিমূচ শ্ইয়া নানাপ্রকার কুক্রিয়ার আসক্ত হইতে হয়। যেন্ন মাতকেরা মত আলানে বদ্ধ থাকে না এবং জাধোরণের প্রহরণও প্রাহ্য করে ন। তেমনি বিষয়াসক ষ্ট্রানেরা ধর্মৰূপ শৃখ্য উল্লেখন করত সতুপদেশহরূপ অঙ্কুশশাসন আহা করে না, আমি আর এপ্রকার সংঘার-क्षेत्र कांद्राशाद्व वह थाकिट्ड हाहि मा। अक्कट्ट बटन किया জগদীখরের আরাধনায় কালাতিপাত করিব। প্রিয়ে। ধদি তোসার ইচ্ছা হয়, তবে সেই আগন্তক শক্তর সহিত বরুং যুদ্ধ না করিয়া ভোষামোক্ত সন্ধি প্রার্থন। করিও, ভাষাতে দৈ প্রসন্ধ হয়, ভা**লই, নতু**ৱা তোমার পিতৃগ্হে গমন করাই ক্ষির রহিয়াছে অথবা যদি পরোপাসনা মানহীনকর বোধ ম্মা, তবে অত্যেই জনকগৃহে গমন কর, নারীগণের পিতৃ-शृद्ध अ शिष्टिशृद्ध ममान अधिकात । आमि वनगमनकिंद्रिल ष्मगूर्वर्जिनी इहेरण शाहिरव ना, किन ना कल्लान नाना-श्रकात्रष्ट्रांच। त्यश्रोत्न कांक नांहे, क्रम नाहे, शृह नाहे, दक्तज विश्खक अखुटङ প्रतिभूर्व, अमन कि नमदम् कूशात अन ड পিপাসার জল পাওয়াও কঠিন, তুমি রাজনন্দিনী, রাজার শৃহিণী, কোন দিন ক্লেশের লেশঙ জানদা, হঠাৎ একে-नार्क नर्गाय प्रथमाठ स्ट्रित (क्यन क्रिया महा क्रित्र। বেৰ, সকুমার শিরীৰ কুত্ম মধুকরের চরণসঞ্চার সহ্য

विवास स्थान असी गर वर्ग असी गर वृद्ध अपना वृद्ध अविद्यासम्बद्धाः वृत्ति क्षा विदिष्ट शृहर (३ म स वितिमाक रिविक कि वनरामसना आकृषिक विवस ह लाइका कार्य स्ट्रेंट्स ? कामि श्रतिशाम विद्वकता कृति তোলাকে পিতৃগৃহে বাস করিতে বিধি দিলাম। करिएम, ना, जाशनात नीडिशर्ड वहनेश्वरकात धन জামার অন্তঃকরণে একপ্রকার বিমদা ভানের দক্ষা **दहेल.** ज्ञांभति ास. এ मोज्ञामत ऋकिषिणकत मः मात ल्या হার কবিতে অভিলাষ করিরছেন, তাহা সঞ্চতোভাং त्यावका । त्यादक करें मश्मावदक ग्राथत थाय करके, कि ইহাতে হুষের দেশনারাও নাই। প্রভাত প্লেশের এ ्मव, निर्मा किकिट विख्य शांक्रिक कायात शर्म शर् विषय्भारस्य भागकः। बहे मन्त्रारत समस्य समस्य (দকল সাকৃত বিপাদ উপস্থিত হয়, তাহা মারণ করিলে শরীরের সহদায় শোণিত ওক্ষ্ট্য়া বায়। কখন । ভাষদনজন্ত্র পতিবিয়োগ, কখন বা প্রাণাধিক পুত্রকনা निथन, कथन या वस्तुदामन, अ ममूनात मश्मादा थाकिए। शास मस्तनारे नहां के ब्रांड इत्र। अमन छ किछि ८ क গ্ৰাজন হইতে বনবাস শতগুণে প্ৰশংসনীয়। গৃহবাসে ঘাহা দিনের খন বিব্রু হ্ইরাছে, ভাহাদিনের নিক্ট এই সুরুম <u>গৌখাবদী অপেকা পর্ণকৃতীর যে কত স্থারে স্থান তাং</u> বলিতে পারি না। যাহারা বনে বাস করিয়া প্রকৃতির মনো व्त काङ्गिक अन्मर्भन क्षेत्रस, काश्मित्रत हिन्द कि अञ्च श्र्व भानमागारत निषय इष्ट। यथन इतिशकुरलय नः নৰ ছকাছুৰ ভোজন কৰিতে কৰিতে ইডছত: জমন, শাহী क्नरमत केमच अज़ल्सन बिखातिक शूर्वक मृत्रा अवर कारा

ভাবে উপনৰ্থ পরিবোভিত পাল্মক কুলাভাৱিত কুলাভা বাভাবিক জলাশন্ত ও গিরিনিব গ্রহণতি পাটিত কেন্দ্রপূর্ণ পতিত হয়, তথন নৃত্যকারিণী বার্নিবিকা কিন্দ্রী পরিবেনিত ব্ল্যাপরিশোভিত কৃত্রিম কাননবুক্ত মনিমর ব্যক্তথানাক ভুক্ত বেবি হইতে পারে।

क् कीविट उच्छ । जाशमि आभारक त्रहातिमी स्ट्रेट नि বেধ করাতে পামার ভাগোর প্রতি এবং জাপনার দেই क्रमाहिक क्टरमव श्रांख यूनश्रद महत्त्वह छेश्रविख इटेन, नाथ 🛒 षाश्रीन कि हैश कारमने नां. शिंड्सिवडांता कथनहे खड़त হ্টয়া থাকিতে পারে না। যথন আপনি আমাকে দেই **रबस्थुविक वारका वरपांधम कविता करिएउम, शिरव**े এ জীবন থাকিতে কথমই ভোমার সহিত বিচ্ছেদ হইবে না, তথ্ন সেই ব্যুকা, আমিও যথাৰ্থ ভাবিরা বিশাস কৰিত।ম কিন্তু এক্ষণে সেখকল কথা বিপরীত অর্থে পরিণত চইছে-तह, थामि विमन्न कतिन्। करिएङ्डि, अहे अमगाविङ क्र्डाशारण मानीव अठि मरामृना क्रेट्टम ना। याप यानहें अकास धारेरवन, उत्त आयार्क मिन्नो करून। एथन चनमस्या क्यान्ति त्याच म्हेर्त, उथन आहिन भगरमया कतिराउ অনেক সুক্ত ২ইতে পারিবেদ, স্থীদিগের পভিই এক-মাত্র সহায় ও একমাত্র বন্ধু। পুরুবেরও সহধর্মিনী জা-ভীয় প্রেমপাত্র, আমি কিঞিৎ শারীরিক কটের জন্য স্বামীর অমুবর্তন করিব না, কেবল লোগভূফার্রপিনী রাক্ষমীর সেবাতেই দেহাতিপাত করিবন হা বিধাতঃ ৷ আমার ভাগো এই ছিল, যে অবলা কুলকামিনীকে পরি-ভাগে করিয়া পতি পলায়ন করিবেন। মহারাজ! আমি মুছা ৰলিবার ভাষা বলিকাম, একণে আপনি শান্ত্র ও

প্রতিষ্ঠাতি হার ক্রিটে হয়, ভাষাই করন। এই ব্রিরা নামানিক উল্লেখন, জাল অসংগার্গী কইবা ভাষার মুগ্র করেন ক্রিটা ক্রিটা ব্যবহান।

মালা মাজনে, প্রিয়ে পামি ভোমাকে পরিভাগ करिए देखा कति मा, उर्द अने समा পिতृश्ह दाम कतिए अंद्रमिक मित्राहिनाम, य जीकाणि अठिक्रविमा, कश्मह ं क्षिम महिएक शांदर मा। विद्यान काम्नि शक्ति हहेन्ना रकसम কয়িয়া কোন প্রাণে বনগমন করিতে জনুমতি দিব। প্রিয়ে। यथन मिवांकरतत करवे या कृषा कृषात्र राजाति हक्त्रपन মলিন হুইবে তাছা কেমন করিয়া দেখিব। তমি নিতান্ত मह्म गाइरव कानियां मात्र वात्र कविन मा किन्दु (एड ভয়ানক ক্লেশ ভূমি কপ্ৰই সহিতে সমৰ্থ হউতে না ৷ বেংগ श. আমি বনমধ্যে তোলাকে ছারাইব। প্রিয়ে। মনে পড়ে, १९४ मिन निर्माशकारण अभवाद्धे जिलाहा जमन করিতেছিলান, একেত অভিশয় গ্রীয়া, ভাগতে পদক্রজ ভ্ৰমণ, তুমি একান্ত ক্লান্ত হঠকা মুদ্ধিত হউলে আমি জ-लिभिक्त मिनिन माता राष्ट्र निक्रम ७ मूर्स स्मीटन कन সেচন করাতে কিঞ্ছিৎ সংজ্ঞা পাইয়া কাতঃ স্বরে কহিয়া-ছিলে " বড় ক্লেশ ক্ইভেছে, আর যে বাচিনা, প্রাণ যায় " र्जामि अमम्ब कानिसा स्त्रिमा किञ्चकादत दहार-एक मटक সাইতে কহিব, যাহা হউক, কলা অতি প্রজ্বাবে নীগ্যান্তাঞ্চল বনগমন করিতে হইবে। একণে মন্ত্রীকে ভাকিয়া नःकाख इंजिक्ड्रवाडा द्वित्र कता गाउँक। এई वृत्तिमा निक्छि अक कर मात्री हिन जाशांक करितन, वृक्षमजित्क ভূমি তুরার মন্ত্রীকে ডাকিয়া আন। দাসী যে আজ: ৯-হারাক বলিয়া মন্ত্রীর নিকট গমন ক্রিয়া রাজাজা জামা-

ইলে, তিনি তহ কণাৎ নুপতিনহালে ইলিছেই কলিছে।

বাফা সন্মান্ত এক থানি আন্দেন কলিছে চিনা নিজ হতি দিলেন। তিনি উপবেশন করিয়া কলপুতি কিজানি ছেন্

মহারাজ! কি জনা আহ্বান করিয়াছেন, অনুমান কলিছা কলিলেন, সথে! " আনি তোমার প্রতি বাজজানি হোর ভাবাপণ করিয়া কিছু দিন তীর্ষভ্রমণ করিব, ভারেক্র দিয়জয়জন) সন্বরেই এই খানে জানিবেন, তাঁহাকে কহিবে, আমাদিণের রাজা তীর্ষপ্রাটনে গমন করিয়াছেন, সন্দিক্তির ভার আ্যার প্রতি আছে; হরু দানি কর্তন নতুবা এর জাপন অধিকারভুক্ত করিলেও করিছে পারেন।"

মন্থী এই সমস্ত শুনিরা প্রথমটিঃ লাজাকে তীর্ণপর্যাটনে কান্ত করিবার সনেসে বনপর্বকাদি অভিত্যান স্থান, প্রভ্রমণ ক্লেকর বলিয়া নানা উপদেশ দিতে লাগিলেন। রাজা কিছুই শুনিলেন না, তগন মন্ত্রী অগতা। রাজা রক্ষারে কানতের সম্প্রভার কহিলেন, হরে আপোন নিতান্ত ঘাইবেন ফারণ শুনিলেন না, এক্ষণে প্রনাজনা কি কি আংয়োজন করিব। প্রতা কহিলেন, কিছুই আংলাজন করিবার আনশাক নাই, কলা প্রাতে আমরা প্রীপুরুষে পদত্তকে প্রস্থান করিব, ভুমি আ্যার গমনের পূর্বের একথা কাহাত্তেও কহিও না। এপ্রকার কহিলা সমাদরপূর্বকে মন্ত্রীকে বিদার করিলেন।

রাত্রে জাহার করিয়া শমন করিলেন কিন্তু উৎকণ্ঠায় নিদ্রা হইল না, প্রস্কৃত্বে উঠিয়াই নৃপদম্পতি কেবল পাঠা পুস্তক কয়েক খানি লইয়া অতিহীন কেনে সংগোপনে রান্ধপুরী পরিত্যাগপুরঃসর উত্তরমুখে যাত্রা করিলেন।

প্রভাবে নর্ভকীরা বীণা, বেণ, মৃদক্ষ, মুর্ক্পপ্রভৃতি প্রত-মধুর বাণা বাঞাইতে বাজাইতে, সমানবয়ক স্ততেরা তব শিক্তি শক্তিত রুপতির নিতা তল করিতে শরনমণ্ডণে ক্রিটি হইমা দেখিল, তথায় রাজা নাই, তথন অন্তঃপুরে, কেলীকাননে, অন্যানা স্থানে, নগরমধ্যে, সর্বত্রই রাজার ক্রিমান হইতে লাগিল। অন্তঃপুরিকাগণ রাজার বিপদ্ আশক্ষা করিমা রোদন করিতে আরম্ভ করিল, কনে সর্বত্র নুপতির ধনগমনসংবাদ প্রচার হইল।

বাজা অত্যন্ত ধার্মিক ছিলেন, কেই ক্লোকে মুনয়া বা যুদ্ধকার্য্যে প্রকৃত্ত হইতে কলিলে, তিনি মেই সকল নৃশাল বাপের সাধনে কথনই সম্মত ইইতেম না বর্ণ মুক্তপুত্তে প্র সকল কর্মের লোখোকটেনসূর্বক সকলকে উপদেশ দিছেন। তালাতে সামান্য লোকেরা রাজাকে কাপুরুষ বিয়োই ছানিত, এফাণে ভাঁছার বনগমনে সকলোর মানে সেই আশারু, বন্ধান্ত হালার হইল। পূর্বে যালার নুপত্রির মানার করিতে আরম্ভ করিত, একাণে তাল্যাই তালার নিন্দারাদ করিতে আরম্ভ করিত। অনুরদনী লোকেরা মহতের নার্না দেখিয়া প্রথমে উন্মান জান করে কিন্তু বিচক্ষণ মন্ত্রী রাজাকে কোন দিন নিকোপে বা ভীরুষভাব মনে করেন নাই, তিনি রাজার অভিপ্রায় জানিতের মুতরাণ উল্লার কার্না নাম্ব্রাকস্ক করে করিবন, তালাতে আর সন্দেহ কি।

গে দিন রাজা রাজ্য পরিতাগ করিয়া বনগমন করিলেন, দারেশরও সেই দিবস সসৈনো চণপাবতী নগরে উপস্থিত হন, রাজমন্ত্রী নানাবিধ উপায়নসহকারে রাজসন্দর্শনে নগর হইতে নির্গত হইলেন এবং রাজগানীর প্রান্তভাগত প্রান্তরে সহস্র সহস্ত সেনাপরিবোঠিত শিবিরসমিবেশ দেখিতে পাইলেন, অস্থগণের ফেনারবে, গজগুধেব রুংহিত রবে, সৈন্যসমুহের কলরবে সে স্থান পরিপূণ হইখাছে,

ক্রমে ক্ষাবারের মধ্যে গিয়া দেখিতে কার্মিনার, কোরা দিগে গোব'ছ শকটপরিপূর্ণ অন্ত শক্ত, কোনার বা অনুনাই পরিবেটিত জয়লর দ্রবাজাত, স্থানায়রে র্ণাছত শেলা-দিগের দৃশ্চিকিৎসা ক্ষত শরীর, কোন স্থানে কলিকাণ-রোধিত কারাস্থান, কোন দিগে অন্ত শস্তাদির পরিমার্ক্তন এবং অশিক্ষিত সৈন্যগণের সমর্শিক্ষা, কোথার বা বীণা, বেণুপ্রভূতি বিশুদ্ধ তাললয়সহক্ষত রণবাদ্য, এই সকল প্রত্যক্ষে দেখিয়া শুনিয়া ভয়ে মন্ত্রীর স্থংকন্স হইতে লাগিল।

ক্রমে রাজা যে পট্রপটমগুপে ছিলেন, তাহার ছার-নেশে উপস্থিত হইলে প্রতিহাররকী রাজার নিকট গমন করিয়া কহিল 'মহারাজ! এই রাজ্যের রাজমন্ত্রী নানা-বিধ উপায়নসংকারে আপনকার সভিত সাক্ষাৎ করিছে আসিরাছেন," অনুমতি হইলে সলুপে উপস্থিত হইনা আমহন্তান্ত নিবেদন করিতে পারেন, তিনি দ্বারে দণ্ডা-বমান হইয়া আপনকার অনুমতি প্রতীক্ষা করিতেছেল। কি আজা হয়। রাজা কহিলেন, আসিতে কল, অনন্তর রাজমন্ত্রী নুপসমীপে গমন করিয়া অভিবাদনপূর্বক এক পার্ম্বে দাঁড়াইয়া সভার শোভা সদ্দ্র্যন করিতে লাগিলেন।

দেখিলেন, মহামূল্য নণিময় নিংহাসনে রাজা সমর-কালীন বয়স্তগণসহ বসিয়া আছেন, উর্দ্ধ দিলে মণি-মা-ণিকা-মুক্তাকলাপথচিত চক্রাতপ, তাহার মধ্যে মধ্যে লৌহশলাকায় লয়মান কাচবিনির্দ্ধিত দীপাধার দেখিলে বোধ হয়, যেন তরুণ অরুণ ও পূর্ণ দাশগর নির্দ্ধাল নভো-মপ্তলে যুগপৎ উদিত চইয়া তারাপুস্পহারে সুশোভিত ২ইরাছেন।

रामि छक।।

বিশের করে কোবনিয়াপিত পাণিত কর্বার পারণ কবিশের করে কোবনিয়াপিত পাণিত কর্বার পারণ কবিশালীয়ে ভাবে রহিয়াছে। দেখিলে বোধা হয়, যেন
ক্রান্তে জন্ত ধর্মাধিকরণে নিযুক্ত রাজপুরুষেরা দৈনাগণের ন্যারান্যায় বিচার ফরিতেছে। দেখিলে বোধ
হয়, যেন সাজ্ঞাৎ ধর্মারাজ অন্তর্গণসহ ধর্মাসনে উপবিউ হইরাছেন, রাজমন্ত্রী জনিমেষ লোচনে এই সকল
সন্দর্শন করিতেছেন, দ্বারেশ্বর উহোর প্রিচন লইতে
সুবন্ধু নামা স্বীর পাশ্বচরকে ইক্লিড করিলেন।

রাজবয়ত মন্ত্রীকে জিজ্ঞান। করিলেন, মহাশয়! প্রাপ্রনি কে? এবং কি নিমিত্ত জানিরাছেন? মন্ত্রী কহিলেন,
আমার নাম সমত, আমি এই রাজ্যের রাজমন্ত্রী, আমি
যেজনা এখানে আসিয়াছি, যদি শুনিতে নহারাজের সময়
থাকে,তবে বলিতে পারি। সুবন্ধু মহারাজের কি আজ্রো হঃ,
এই বলিয়া মহাপের মুখমগুলে দৃষ্টিপাত করিলেন। রাজ্য কহিলেন, একণে আমার সময় আছে কি বলিবে বল,
তথন মন্ত্রী আদ্যোপন্তে সমত বৃত্তান্ত কাইতে উপক্রম
কবিলেন।

মহারাজ! আনরঃ স্বাভাবিক নিঝের স্তরাং ভূগতিদিগের স্বভাব কি প্রকারে জানিব। সহজেই বাহা-দিগের চরিত্র বুঝিডে পারি না, উাহারা যে কিপ্রকার বাকো সম্ভূট বা অসম্ভূট ১ইবেন, তাহা অন্যাদির বোধ-গম্য হইবার বিষয় কি। অথবা মহৎ ব্যক্তিরা অপ্রিষ্থ

अहे अकात धार्थम आलारशत शत कहित्वन, महाताकः

আপনি ইতিমধো আমাদিনের প্রস্তুর নিরেট যে ক্রাচার পাঠাইয়াছিলেন, তাহা শুনিয়া তিনি বন্পস্থান করিয়া ছেন। সন্ধিকার্য্যের ভার আমার প্রতি আছে एकि निक করিতে হয় করুন অথবা এই রাজ্য আপন অধিকারভুক করিলেও করিতে পারেন, কিন্তু মহারাজ! আমাদিরের রাজা যে আপনার ভয়ে বনপ্রস্থান করিয়াছেন, এমন্ত नरह। विक दरलन, उरद वनशमतनत अरम्राजन कि जारांत्र ভাবণ করুন। নৃপতি অতিধার্মিক ও দয়ালু ছিলেন। তিনি কখনই পরের ক্লেশ সহ্ করিতে পারি-**टिंग मां, कश्चन युक्त दा मृश**शं कतिश की दिश्मा करतन নাই, তিনি কহিয়াছেন, মনুষাশরীরেশ একবিন্দু রক্তপাত শত শত রাজ্যনাশ অপেক্ষা ক্লেশকর। মহারাজ। তী-হার গুণের কথা শুনিলে আশ্রহ্যা জ্ঞান করিবেন। পর্ম করণাময় রাজা কথনই কোপকৃটিল আতা ও উদান-কোদও হইয়া কাহাকেও দণ্ডভয় দেখান নাই, তথাপিও লোকে তাঁহাকে যমস্বৰূপ দেখিত, কেহু তাঁহার উপকার করিলে সেই উপকারককে যে পুরস্কার দিতেন, তাহাতেই তাঁহার ক্লভক্তা ব্যক্ত করিত এবং মধুর সম্ভাষণেই অনু-জীবীরা প্রাণের বিনিময়েও ভাঁহার কাঁট্য করিতে উদ্যত হইত। দণ্ডার্হ ইইলে তিনি পুত্র ও শত্রুকে উপযুক্ত শান্তি দিতেন, কখনই পক্ষপাত করিতেন না। বেমন অক্লি কাল সর্প কর্তৃক দংশিত হইলে তাহা ছেদ করিতে হয়, তেমনি ছুটাস্বভাব প্রিয় বস্কুকে পরিতাগে করিতেন কিন্তু নীতি-পরারণ শত্রুও তাঁহার নিকট সমাদৃত হইত। তাঁহার স্থবি-**ठाटत अ म**न्छटम अञ्चाता मञ्जूर्गकाटन मर्खना सूची हिटा। অপাত্তে দান ও মনুবোর অপমান তিনি অমেও করেন

নাই, মহারাজ কাধিক বলিবার প্রয়োজন কি, যে সকল প্রথ বাকিলে লোকেরা মনুষাপদবাচা হর, তিনি সেই মুদার ওবের আকর ছিলেন। যাহারা তত্ত্বতে ইচ্ছা করে, তাহারা তাহার চরিত্রকে আদর্শস্বরূপ জ্ঞান করিরা আপন ক্লাব সংশোধন কর্ত্বক এবং ইহাতেই সমুদার বলা হইল। এক্ষণে আপনাকে অন্যুরাধ করিটেছি, সেই ধর্ম্মাররণ নাারবান ভূপতির বিষয়ে হস্তার্পণ করিবেন না, দেখুন, মহারাজ ধর্মানিস্ত্রে কথিত আছে, যাহারা পরের দ্রুরা অকারণে অপহরণ করে, তাহারা ইহ্কালে লোকনিন্দা ও মনস্তাপ এবং প্রকালে নরকভাগী হয়। বিশেষভঃ এক জনের যথাসক্ষর বলপুর্বক গ্রহণ করা ক্রবড় জনার। কে নরেম্বর! এমন ন্যাযবিরুদ্ধ, ধর্মবিরুদ্ধ, নিন্দাকর কর্মো হস্তকেপ করিয়া কথন জ্রবণাহ কলক্ষ্মাগরে নিন্দা হস্তকেপ করিয়া কথন জ্রবণাহ কলক্ষ্মাগরে নিন্দা হস্তকেন না।

भराताक । यथन अहे नकल छेलटाक यथार्थ विन्ना लाकिन्छित इन्द्रक्षम इहेट्द, यथन यूक्षकार्छ, छीविन्छित्रा, शतकालहरून कार्याटक लाल विन्ना कार्निट उथन क्षताम- त्राविक्षिक एत्रायाटम अवर क्षतामत्राविद्धिक एत्रिटामात छूत- त्याटक कार्माटक कार्नित विद्याय थाकिट्द ना। श्रे खुट्ट के छूट्ट के छूट्ट के छूट्ट के छूट्ट के छूट्ट के छूट के छूट्ट के छूट्ट के छात्राक्षण कार्नित क्षा के हिंद कार्नित वा छोट्ट क्षित क्षा क्षा क्षा कार्नित कार्म कार्म कार्नित कार्म कार्नित कार्म कार्नित कार्म कार्नित कार्म कार्नित कार्म कार्नित कार्म कार्म कार्नित कार्म कार्य कार्म कार्य कार्म कार्म

রাজা ইবৎ হাস্ত করিয়া কহিলেন, তুমি যাং। যাত বলিলে, হঠাৎ কেমন বরিয়া তাহা বিশ্বাস করি। ভোগাদি-গের রাজা অ্যানাৰ আগমনধার্তা শুনিয়া বন্যমন করি- রাছেন অথচ ভয়ক্রমে নহে, একথা শুনিলেকে হারা নামর্থ করিতে পারে? ভাল, বল দেখি, জিনি বদি যুদ্ধ করিছে পাণীবিনাশ আশকা করিয়াছিলেন, তবে দক্ষি করিছে কি হানি ছিল, তুমি যে সকল উপদেশ দিলে তাহাও যুক্তিযুক্ত বোধ হইতেছে না, কেন না রাজারা অনা রাজাকে লয় করিয়া আপন অধিকার হৃদ্ধি করেন, এই প্রণালী চিরকালই প্রচলিত আছে। বিশেষতঃ ভোমাদিগের রাজা যদি রাজা পরিত্যাণ করিয়া থাকেন তবে এই অস্বামিক রাজা অধিকার করিতে কোন পাপ নাই।

মন্ত্রী কহিলেন, আমি পূর্বেই সকল কথা মহারাছকে কহিয়াছি, একণে আপনার যেমন অভিক্রচি। যিনি আনাদিগকে চিরকাল প্রতিপালন করিয়াছেন, তাঁহার হিতা নুষ্ঠান করা আমাদিগের পক্ষে সর্ব্রেগভাবে করিবা। প্রণাম করি, তবে একণে আমি বিদায় হইলাম এই বলিয়া মন্ত্রী আপন আবাদে গমন করিলোন। ত্বারেশ্বরণ বিক্রমনেবের সমুদায় রাজ্য অধিকার করিয়া স্বদেশে প্রস্থান করিলোন।

्वामिङ्कि।।

कि जीस भर्ग।

🧦 'अम्रिट्ग होषा अभूगात्र मिन शर्याष्ट्रेस्वत शत अशर्ताटक প্রিয়তমার দহিত এক নিবিড় অরণ্যে উপস্থিত হইলেন व्यवः वनमधा स्ट्रीट अपी कडक यनकन व शन्दानंत अन আনিয়া কুষাভুৱা রাজ্ঞীকে কিঞ্চিৎ দিলেন আরু আপনিও কিছু খাইলেন। ক্রমে বেলা অবসান হইল। দিনকর टीनकृत हरेता भिष भिर्शतिह भितारताहर क्रिस्टन, सूर्गस् শীতল সন্ধাসনীরণ সন্দ মন্দ বহিতে লাগিল; শুক শারি-প্রভৃতি বিস্থাপ্রেণী কলরব করিতে করিতে দিগ্দিগমন্ত্র হইতে আগন <mark>আপন কুলারে আসিতে লা</mark>গিল; দ্বাভীত বাত্রিচর শক্ষীরা তপ্রভয়ে তরুকোটরে ও গিরিগুলায় লুক্তারিত ছিল, এখন তাহার। তিমিরের সমাগম দেখিয়া কোটর হইতে মুখ বিনির্গত করিয়া ইতন্তত: দৃক্তিপাত ও কুধার জ্বাসায চীৎকার করিতে আরম্ভ করিল। ক্রমে करम विভारती अन्नकांत्रका कृष्ण बज्ज श्रविधानशूर्वक जू-करल अवसीर्व हरेला, भगरन अमधा जातकार्वाल मानिक প্রভার দীপ্তি করিলে, চক্রবাকমিথুনের পরম্পর বিচ্ছেদে কাতর স্বর আতিপথে পতিত হইলে, রাজীর মনে বিলক্ষণ **उन्न प्रकात रहेल। जिम्म कहितन, इर माथा वक्रा**न वीठाइरात शथ अनूनेसान करून। के प्रधून, वताहकून বিশাল দশনাপ্রভাগ দারা ভূমি খনন করিয়া মুত্তা অংগ্রণ क्तिएडरङ। भिन्छ, शांख, ब्रकश्चिष्ट श्राभरन्ते। हेरछरः

ভ্রমণ করিতেছে। হরিপকুল প্রাণ্ডরে আইন করি।
পলাইতেছে। পালে পালে গণ্ডার এবং মহিনকাল কি
পান হইতে উঠিয়া মূতন মূতন তৃণ অন্নেষ্ণ করিয়া বেডাই
উতেছে। করা, করভ, করেণুকুল দলবদ্ধ হইয়া মৃক্ষ উঠিল করিয়া
করিতেছে। পালে পালে ভল্লুকেয়া দৌড়া দৌজি করিয়া
বেডাইতেছে। শিবাকুল যেন দিবার শোকেই আতুলী
হইয়া ঘোর রবে জন্দন কবিতেছে। এক্ষণে কি করি, স্বরার
উপায় অবধারণ করা উপযুক্ত।

রাজা কহিলেন, প্রিয়ে। আরে বিলায়ে প্রয়েজন নাই, এফাণে বদ্ধণারিকর হও, এই সনিহিত কলত তরত্ব অগ্রাহ্মান উঠিয়া লাল উভরে রাত্রিবাস করি। কলা প্রাচে এফানে পাস্যোগা একথানি পর্ণকৃতীর নির্মাণ করা যাইবে। পরে রাজা ও রাজী সেই মহারুহের উপরিভাগে আরোহা পূর্ত্বক একটা স্থল শাখায় বাসিয়া উভয়ে চতুর্নির লাহাকন করিতে লাগিলেন। দেখিলেন, কোন দিগে নেম হইতে নিদ্বাদমি নিঃফত হইতেছে; কোন ছানে বনমধ্যে পেচকনিচয় রাত্রান্ধ কাকের কুলায়ে মাইয়া চঞ্চামাত ছারা বৈর নির্মাতন করিতেছে; কোন ছানে ক্লারে হইয়া ঘোরতর চীৎকার করিতেছে; কোন ছানে কেলরিকুল করিকুদ্র বিদারণ করিতেছে; কোলায় বা সিংছে ও শার্দ্ধিল যোরতর সংগ্রাম হইতেছে; এই সমস্ত অনুক্রপ্র বিদারণ করিতেছে; এই সমস্ত অনুক্রপ্র বালার দেখিয়া শুনিয়া রাজী ভারে নিতান্ত জড়াডুত হইলেন।

ক্রমে যত রাত্রি অধিক হইতে কাণিল, তৈতই পশু-সকল বনস্থলী ত্যাগ করিয়া দিখি দিগে আহারাম্মেরণে গমন করিল। বনস্থলী যেন ভাছারদিগের বিরহ্জনা ফুংখেই নিঃ

रागछिक।

বিদ্যালয় এবং লোকে যেন পত্ররপ লোচনসকল হতে নিশির শিশিররপ অজ্ঞানা বিসর্জন করিতে লা-বিশ্ব। আর ক্ষণে ক্ষণে মন্দ মন্দ সঞ্চারিত অনিলছকেই ক্ষিনিয়াস পরিত্যাগ করিতে আরম্ভ করিল। গভীর মিশার স্থিবী নিম্বর, তরুগণ নিম্পন্দ ও জীবলোক নিদ্রায় অচৈতন হইল, তথন নির্মরপ্রধাতের শব্দ ও নিল্লিরব এবং মধ্যে মধ্যে শ্রালের ধনি তাহাদিগের শ্রুতিপথে পতিত হইতে লাগিল।

নিশীণসময়ে পুর্বাদিয়ধূর ভূষণঅৱপ, গগনমগুলের শোভাস্বরপ, বিভাবরীর পুণ্যকলস্বরপ, বিরহিণীগণের মা-काद कालस्वल, जनवान् कूम्हिनोनाग्रक कृष्यर्ग वञ्च দ্বাবা অধ্যক্তি গোপন করত উদিত হইলেন। তা-शांटा भृषियी क्रीयूनीयम श्रेटन वाथ रुवेन, व्यव वतनी তিমিরজপ কুফবর্ণ বস্ত্র অপবিত্র ক্রান করিয়া জ্যোৎমা-कश सङ्क वमन शर्तिशांन कतित्वन। निर्माल मीलवर्ग आकारन ক্লানিধি কি এক অপুর্ব্ব শ্রীধারণ করিলেম, দেখিলে বোধ হয়, নেন সাগেরের মীল সলিলে বাড়বানল ছলিতেছে। নিশাকর কিঞ্ছিৎকাল পৃথিবীকে শোভাবিশিট করিয়াছি-লেন বটে, কিন্তু অল্প কণের মধ্যেই পুর্বস্থিত মেঘসকল রাছর ন্যায় আদিষা তাঁছাকে আছন্ন করিল। পৃথিবী, নেঘ পাছে চন্দ্রমাকে পরিতারি করিয়া জামাকে আছাদন করে, মনে মনে এইৰূপ ভয় করিয়া এমন এক অন্ধকার গৃহে লুকায়িত হইলেন যে, ভাঁচাকে অনুসন্ধান করিয়া বাহির করে কাহার সাধ্য। মনদ মনদ র্ফিধারা পতিত হইতে লাগিল। তাহাতে ধদোতিকা জার আর্ড পকে উ ভিতে না পারিয়া ক্ষুদ্র কুম্র তরুগণের আপাদমন্তক পর্যান্ত



ষ্টিয় তাবে বসিলে বোধ হইতে লামিন বৈদ মুদ্ধ নামান কলভবে অবনত হইয়া রহিয়াছে। তথান রাম্মানিটার ভূতবোনির ইতিহুত্ত শৃতিপথানা হইল। ভর কলৈ বানি প্রকার বিভীবিকা দেখা যায়, বিহুৎপ্রভায় পুত্র শৃত্ত আদিলে অকার বিভীবিকা দেখা যায়, বিহুৎপ্রভায় পুত্র শৃত্ত আদিলেলন এবং কিন্ধিৎ ভূরন্থিত শুম্ম পর্ণরাশির উপর পশুলিকে এবং কিন্ধিৎ ভূরন্থিত শুম্ম পর্ণরাশির উপর পশুলিবের পদস্পোরে যে মব্ মব্ ধনি হইতেছিল, তাহা ভূতবোনিকৃত কোন প্রকার শন্ধ শির করিলেন। হঠাৎ রুক্ষান্তর হইতে অনা হুক্রে একটা বানর লক্ষ্য প্রদান করিয়া পড়িলে তিনি ভয়ে চীংকার করিয়া উটিকেন। রাজাত্থন নানাপ্রকার ভাবার বায়ক্ল ছিলেন, রাজ্বীর চীংকার শুনিয়া তাঁবার অন্যাক্ষরণা বিলক্ষণ ভয় স্থার হইল। তথন নানাপ্রকার কলেবরে কহিলেন, প্রিয়ো ভয় কি, ভির হও; যা তোমার নিজার উল্লেক হহয়। থাকে, তবে আমার ক্রেণ্ডে শ্রামা হও। নিজা হইলে ক্রেশের অনেক উপশ্য হইবে।

রাজী নূপতির আনেশানুসারে ভাঁচার উল্সলে মস্তক রাখিয়া কহিলেন, নার! আপানার জোড়ে শয়ন করিলাস, তথাপি আমার ভ্যনিরাত ইউলেছে না। ঐ দেখুন, একটা ভূত ভাল ধরিরা ঝুলিডেছে। আমার বোদ হয়, ও য়েল আমাকেই লক্ষ্য করিয়া আছে, সলাই লুদারে বিনাশ করিবে, নাথ! রক্ষা কয়ন রক্ষা কয়ন। ঐ দেখুন, ও যেন আশার দিগে ক্রোধলোহিত লোচনে এক এক বার ইক্ষণ করিভেছে, রাজা মনে মনে ভাবিলেন, ইনিত অবি-ভাক্স ভূতের ভয়ে ভীতা হইয়া ঐ বানরটাকে প্রভাবোনি কম্পনা করিয়াছেন, অথবা হওয়াইত সম্ভব। কেন না টোলোকেয়া শিশুদিগকে ভূতাদির ভয় প্রদর্শন করিয়াও

क्षाम नामा नगुणिन्तक रेजिन्छ किना दिल्लात মার্কা করে পুতরাং সেই সকল উপদেশ চিরকাল क्रिमें विद्यान इहें बा थाटक। यमि वानानकां म अहे স্বৰ্ণ বিজীবিকা না দেখান যায়, তবে কম্পিত প্ৰেডগোনি अर्जुक्क रहिस्टिल ७ कर्यन व्यष्टःकतर्ग जरात नक्ष्मत इत मा। ' त्व इंखेक, शक्रात छेलातम निया हैश्रीत सनम क्हेट इंट्रित ভয় দূর করা উচিত। নত্বা উত্রোভর জাস হদ্ধি হইলে মৃত্যুষ্টনাও ইইতে পারে। এই প্রকার নাম চিন্তা কারয়। कहिरान, श्रिरव । उन्न कि, रिहा में । जूनि चाहोरक প্রেতদেহ ভাষিত্তেত্, ক্ষণকাল কোষণ চিত্তে বিবেচনা করিয়া দেখ দেখি ওটা কি? তোমার ভাষ দেখিয়া ছাপে হাসি পা-ইতেছে, ভাল, বল দেখি, ভূতের কি পশ্চাৎভাগেলেল धारक ? शहे। त्य जाक लविभिन्ने प्रकृष्ठे । जाइ अञ्चल त्नरा जोना हैदात रक्षक्ष्यको अव**हो** महत्त्व महत्त्वध विद्यादह । ওটাত কথনই ভূত নব, খার যদিই হয় ভাষা চইলেই বা উহার নিকট ভোনার ভব কি। উহার ভুমি কি ক,রমাছ त्य. छ उटाभात अभिके कतिता। विश्वकटः आधि शांकितः ভোষার প্রতি দৌরাক্সা করে, কাছার সাধা। তোষার কিছুমাত্র ভয় নাই, অশক্ষিত চিত্তে নিদ্রাধাও, আমি সমূদায রাত্রি স্থাগরণ করিতেছি; আর রঙ্গনীও বড় অধিক নাই। পূৰ্বাদিগ্ প্রিকার দেখাইতেছে।

• রাজ্ঞী এই সমস্ত শুনিয়া স্থির ছইলেন, কিন্তু উন্নির অশুংকরণ হইতে ভয় এককালে দূর ছইল না। তিনি ক্ষণ-কাল চক্ষু: মুদিত করিয়া থাকেন ও এক এক ব্যর ভয়ে চতুর্দিশ্ অবলোকন করেন, এই প্রকার করিতে করিতে উচ্চার চক্ষে নিজ্ঞাকর্ষণ ছইতে লাগিল।

CILILIA CONTRACTOR

কিন্তু পরিশ্রম ও ভরজনা তাঁহার সুনিতা করা না অতিশীয়ই জাগিয়া উঠিলেন। কেন না প্রশ্নম জ্যাহার ভাবনা, রাত্রিজাগরণপ্রভৃতি হেতুবশতঃ তাঁহার সমুমার শরীরের শোণিত উক্ত ও শরীরের হুর্ফলতা ইইয়াছিল, তে-মন অবস্থাতে কথনই সুনিতা হয় না। হুত্রাং তিনি নিজাকর্ষণমাতেই জাগিয়া উঠিবেন না কেন।

यटनफ रेक्ट्रां उद्यामी रेंखेक, मःत्रात ल्यान क्रिया अध्या কেইই ভাক্তচিন্ত হইতে পারে না, রাজা সংলার পরিভাগি করিয়া দেশিন নিতান্ত কাতর ছিলেন। আ : কি করিলান কি হইল এই ভাবনাই তাঁহাকে নির্ন্তর ব্যাকুল করিল। বিষয়মমত্ব শীতা নাশ হয় না। তিনি ভাবিতে লাগিলেন, যদি দ্বারেশর বিনা সন্ধিতে আমার সমুদায় বিষয় অধিকার कतिया थाक उत्त सामात कहे नकल शिय वस्तु अकर्प कार्यत मरनावक्षन कतिरङ्ख धदः रमरे नाना ७१युङ প্রভুতক সুমন্ত সহিবেরই বা কি দশা হইয়াছে, কিছুই জানিতে পারিলাম না। এই প্রকার নানা চিন্তা, আবার দেই যোরতর রজনীতে হি'তে জন্তপরিপূর্ণ ভারণ্যে নার্রা-সহ রক্ষোপরি বাস এবং পথশ্রম, ক্ষা ও থনিতা, বিশেষতঃ আবার আকাশে ঘোরতর মেঘ হইয়া কড়মড় শব্দে বিছ্যু-দলিপাত ও মুধলধারায় গৃটি হইতেছিল, সেই রাত্রিকে ভাহাদিগের পক্ষে কালগাত্রি বলিয়া বর্ণনা করিলে অত্যক্তি इस मा

यठ ताबि भाष इहेर्ड लागिल, उठहें आकाशमञ्ज्ञ পরিষার इहेर्ड नागिल, পশুসকল উদর পূর্ণ করিয়া আ-হার করত মনদমন্থর গমনে বনমধ্যে আসিয়া আপন আ-পন আবাসে শরন করিল; মহিষেরা বিশাল বিষাণদ্ধর

शामां करे।



ত্র করের করে করিল ও বোমত করিতে লাগিল। শুনমার্মিরার পিকাল সুমধুর পরে গান করিয়া উটিল।
প্রাণক্ষিত পরণ উদয় হইয়া অন্ধকারকে দুর করিবেন।
মহতের স্বভাবতঃ উচ্চ পর্যগামী, ইহা জানাইবার জনাই
যেন চল প্রাচীনকালে তাদৃশ হতপ্রী ও হীনপ্রভ হইয়াও
অশেশ অশেশ চর্মাচলের উন্ধত শুক্ত অবল্যন করিতে
চলিলেন, পক্ষীসকল কলরব করিতে, করিতে দিগ্দিগন্তরে আচার ত্রেমল গ্রমন করিতে লাগিল। দিনপতি
বেন ক্যলকলিকার বহিন্দ্রী দেখিয়াই অত্ন্ত নয়নে
করণৰূপ সহস্র কর দ্বারা আলুলায়িত করিয়া ভাহার অশুল্কমী দেখিতে লাগিলেন।

সেই সময়ে রাজা ও রাজী বৃক্ষ হইতে অবতীর্ণ হইয়া প্রাতঃক্ষতা সমাধানাতে ইতস্তঃ ভ্রমণ করিতে করিতে করিতে ক্রিকে পাইলেন, একটা শালালী রক্ষের যককল একপ বৃদ্ধি ইইয়াছে যে, তাহার মুলদেশকে এক বানি বাল্যোগ গৃহ বলা থাইতে পারে। তথন সেই অ্যব্রসঞ্ভ গৃহের অভ্যন্তরে প্রনেশিয়া তাহার দৈঘা, প্রস্কৃত উছতোল্রভূতি গোহায় তথ্য বাস করিতে মনত করিলেন। তিন দিগে বৃক্ষবক্তলে বেন্ডিত কেবল এক দিগে একটা ছার্যযোগ্য স্থানমাত্র জ্বনাত্ত ছিল, ক্তকগুলিন বৃক্ষশাখা শুদ্ধ লতা দ্বারা বন্ধনপূর্ণক সেই দ্বারের কপাট করিলেন। রাত্রিকালে ছার রক্ষ করিয়া সেই গৃহসংখ্য থাকিতে কোন প্রকার ভয় হর না।

মন্ত্রের কি মহতী সন্থাতি । ঘাঁহারা পূর্কে রাজ-প্রাসাদে বাস ও রাজনোগ আহার তথা স্ককোমল বধন-মণ্ডিত পর্যান্তে শর্ম করিয়াও ক্লেশ শোধ করিতেন। উা- হারাই এখন দেই প্রকার গৃহে বাদ ও কটু তিজ্ঞ বিশ্বত আহার এবং ভূজলতা উপধান করিয়া গুদ্ধ প্রকাশির টালার শরন করিতে কিছুমাত্র ছঃখ বোধ করিতেন না

রাজী একাকিনী আশ্রমে থাকিতেন, রাজা জারুর্বনী ও লতারচিত ফল আনরনের পাত্রমাত্র উপকরণমহকুরে বনে বনে জমণ করিয়া নানাপ্রকার কল আনিতের তাই:-তেই नृপদম্পতির জীবিক। নিবরাহ হইত। একদিন রাজা কলাথেবণে গমন করিতেছেন দেখিয়া রাজী কহিলেন, নাথ! আজি আমি আপনার সহিত যাইব। রাজা কহি-লেন, হানি কি আসিতে হয় এস, রাজী ভাঁহার সঙ্গে সঙ্গে চলিলেন। উভরে বনে বনে জনণ করিয়া একটাও কল পাইলেন না। তাহাতে রাজা নিতাত কতের ইয়া মনে गत्म ভाবিতে লাগিলেন, আङि कि ध्रेक्षित, किছूमा। লাভ হইণ না, প্রিয়াকেই বা কি খাওয়াইব আর অপেনিই বা কি খাইব। এই প্রেকার চিম্বা করিতে করিতে তাহার নয়নদ্বিত্য হইতে অঞ্চধারা নির্গত হইতে লাগিল। রাজা অকন্মং তাঁহার উদুশী অবস্থা দেখিয়া কোন জুনিঝচনীয় হেতুবশতঃ ভীত হইয়া জিজাসিলেন, নাথ! এই আপনি আমার সঙ্গে হারারসপ্রসঙ্গে আসিতেছিলেন, সহস। এমন ইইলেন কেন, বোধ করি, আমি কোন অপর'ধ করি-য়াছি অগবা আপুনার মনে কোন অস্ত্রথের কারণ উপস্থিত হইরা থাকিবে।

রাজা কহিলেন, প্রিয়ে তুমি যে আশস্কা করিতেছ, আমার এদশা ঘটিবার কারণ তাহার কিছুই নহে। অদা সমুদার কানন পুখায়পুষ্মরূপে অন্তসন্ধান করিয়াও কিছু-মাত্র খাদ্য আহরণ করিতে পারিলাম না। সেই তঃথেই

বাসন্তিক। ।

ক্রিন ক্রিক যথন বৃত্তকার তোমার চলুবদন নলিন হইবে লাল ক্রিন করিয়া দেখিব, রাজী কহিলেন, মহারাজ!
ক্রিন জাপনার সে গম্ভীরাকৃতি এখন কোথায় নেল একক ক্রির হইলেন কেন। ক্রান্ত ইউন, ভুচ্ছ বিষরের জনা এত কাতর হইবার জাবশাক কি। বনসধ্যে কিছু পাওয়া গেল না চলুন, ঐ পর্য়তের উপার গমন ব্রি। শুনিয়াছি, গিরিকাননে নানাবিধ কল থাকে, ওথানে কিছু পাওয়া ভালই নতুবা জগদীশ্বর বা করেন, ভাহাই হইবে, তার জনা এত ভাবনা কি। এই প্রকার বলিয়া উভয়ে প্রত্যে এক স্মাণ্ডিকা করে শ্রেপ আড়েছেণ করিলেন।

মধাত্রকাল উপস্থিত, দিনকরের প্রথম কর দারা জগতীতল উত্তপ্ত হইয়া উঠিল, পথের তপ্ত বালুকণা অ্থিছিল। উত্ত বাষু দারা উভিতে লাগিল, মহতেরা প্রাণাহেও নীকের শরণাগন্ধ হয় না। ইহাই গেন জানাইবার ক্রান্ত নিম্বল নদীপ্রচৃতির উপাসনানিমুপ চাতক প্রফারণ উচ্চ স্থানাহেন্দ্রী তোরাধারের নিকট এক এক বার কাতর স্বরে জল প্রার্থনা করিতে লাগিল, ববাহেরা পরশেষ পল্লে দন্তবানিত গর্কে সমুদায় মস্তক পর্বান্ত প্রবেশিত করিয়া দিয়া মৃত্যা ভক্ষণ করিতে লাগিল, দেখিলো বোধ হয়, যেন ভাষারা গ্রীমের স্থালায় ভূতলে প্রনেশ করিতেছে। কুক্ররসকল প্রহণ্ড উত্তাপে মুখ ব্যাদান ও লোল জিলা বিস্তার করিয়া ছায়ার উপবেশনপুক্ষক ঘন ঘন স্থান তাগে করিতে লাগিল।

দেই সময় নৃপদশাতি সেই অভাক্ত মহীধরের শিখরে আরোহণ করিয়া নানাবিধ ফল চয়ন করিলেন, পরে তথা হইতে অবরোহণ করিবার প্রা নিয় বিশেলের সঞ্চার দেখিতে পাইলেন, রাজ্যহিনী অধোজারে নেতার সঞ্চার অবলোকন করিয়া অভ্তপুর্ব বিশ্বরুষাগরে নিয়ম হইলেন। পরে রাজাকে সহোধন করিয়া কাইলেন, নাথ! নিম নিগে অবলোকন করিয়া এক আশ্রুমা বাগোর দেখুন, ঠিক বেন ঘনীভূত কুয়াশারাশি বারু দ্বারা ইতত্তহ সঞ্চালিত হইতেছে এবং বিছাতের ন্যায় আন্নি নিঃহত ও মেঘের তুলা গর্জন করিতেছে। এই দেখুন, কিঞ্ছিৎ সংলগ্ন হইয়া আমার বসনাঞ্চল আত্র হইল। উহা জামানদিবের অদৃউপুর্ব কোন আশ্রুমা বাগোর না হইয়া যায় না।

বাজা কহিলেন, প্রিয়ে। এপ্রকার আমিও কথন দেখি নাই। তবে যেরপা শুনা আছে, তালতে বোধ হন্ মেঘ হইবে। বিশেষতঃ বিছাৎ ও বৃজ্যাতের ধনি মেঘ তিল্ল আরু কিনে হন্ । রাজী কহিলেন, নাথ! সে কি, মনুযা কি কপন মেঘের উপর উঠিতে পারে। মেঘ শীলার ন্যায় গুরু ও কঠিন, এ ধুমরাশির তুলা লঘু পদার্থ। অপর কুরাাদের। মেঘ ঘাইতে আইলে কুলিশধারী দেবরাজ্ঞ ইন্দ্র স্বয়ং এরাবতে আরোহণ করিয়া তাহাদিগকে বজ্পপ্রহারের তর প্রদর্শন করেন, তাহাতে রক্ষকুল প্রাণভয়ে ব্যাকুল হইয়া পলায়ন করিলে দেবহণ্ডী উচ্চ রংহন করিয়া উঠে এবং নিজেবণজনা শক্রহন্তান্তি কুলিশের কণা ভক্ষ হইরা মহাবেণে ঘোরতর গভীর গর্জ্জন করিতে ক্রিতে ভূলেল পাড়িয়া ঘায়। এই প্রকারে বিজ্ঞাদ্ধি, বজুপাত এবং মেঘণজ্জনের উৎপত্তি হয়। উহা যদি মেঘ হইলা, তবে সে সমান্ত কেন দেখিতে পাই না।

বিশারণ কিনেন কিনেও তুলি বাহা বাহা কহিলে, অপবিশারণ কিনানের এইনপ বিশাবই বটে। কিন্তু বিশেষ
অন্তর্গাল করিয়া দেখিলে এ সকল কুনংস্থার হৃদর হইতে
এককালে দুরীভূত হয়। কেন না উঞ্জাত ললীর বাপাশুল্ল ও দুনপটল একত্রিত হইলে দেঘ জলে। আর তাহা
শীতে ঘনীভূত হইলে জল হইয়া ভূতলে নিপতিত হয়।
বিশ্বাৎ বজুধনি মেঘ হইতে শ্বভাবতই জলো। তাহা কোন
পেবতা কর্ত্ব আত নহে। আর মনুষ্যেরা যে মেঘের উর্কে
উঠিতে পারে না ইহাও নিতান্ত আলিক, কেন না প্রাচীন
কবিয়া প্রত বর্ণনা করিতে করিতে কহিলাহেন দে, পর্কন
তত্ত্ব মুনিসকল র্ফির সময় গিরর সরৌদ্র গুলে আংরাহণ
করেন তথন নেঘ তাহাদিদের অবোভাগে বারি বর্মণ করিতে থাকে। আর যথন তাহারা রৌদ্রতাপে কিন্তু হন,
তথন প্রত হইতে অবরোদ্র করিয়া নিম্ন্স মেঘের শীতল
ভায়ায় বান করেন।

এক্ষণে বিবেচনা করিতে হইবে, প্রথমতঃ বাপা ও
ধূমজাত মেঘ কি কথন শীলার নাায় কঠিন হইতে পারে।
দ্বিতীরতঃ রাক্ষদৈরা একপ দ্রবা ধাইতে আসিবে কেন।
জার দেবরাক্ষরা তাহাদিগকে তাড়ন করিবেন কেন।
ভূতীয়তঃ মেঘ পর্বেতের মধাদেশ পর্যন্ত থাকে, আমরা তাহার উপরে অনেক দূর উঠিয়াছি। স্ত্তরাং মেঘ আনারদিগের নীচে থাকিবে, তাহার সন্দেহ কি।

ताखी, हैनि जाभारक श्रमां श्रद्धारणंत दात्रा नित्रस्य कितिरान वर्षे ; किन्तु अ मकल कथात्र जामात कथनहे विधान हम्र ना। याहा हन्जेक, हैहांत मरनातक्षणनकमा वृधिलाम विद्या जान किति। मरन मरन श्रहेक्श दिस्तहना कितिथा क

हिलन, हैं। हहेटल हहेटल शाद, अन्तर्ग स्वर्गिक नहें के दारशाम इड़ा दफ किन। अकरा तहें स्वर्ग जा के शाम प्रार्थ वायुत्वरण हिस जिस हहें सा राजा। हतून, आमप्त कृतित यारे। ताजा किटलन, हैं। जात निमस् अद्यापन नारे। शिरा ! नावधान हहें सा जात निमस् अद्यापन नारे। शिरा ! नावधान हहें सा जात विमस् अद्यापन कित्र शिरा वारेद । ताजी किटलन, हैं। जात्व आरख नामिर्छि। अहे विमस छें जात शर्व हहें स्व जाति कित्र गमन कित्रलम। अहें स्वर्ण कित्र काल गरे हहें सा जात्वर गमन कित्रलम। अहें स्वर्ण कित्र काल गरे हहें सा जात्वर ।

বসন্তকাল উপস্থিত। বাসন্তি প্রভাত কি রমনীয় ! छेड्यून श्रामन नव पूर्वापरन मिनित्रमीकत वालास्थिकत्र সিন্দুরে সম্মার্কিত মুক্তাকলাপ ভ্রম হয়। দিনপতি দকি**ং** দিশ্বপুকে পরিত্যাগ করিয়াই যেন উত্তর দিগস্বৰূপ কামিনীর কর পীড়ন করিলেন। তাহাতে দক্ষিণ দিগ্র যেন ष्ट्रांत्य मनग्रामिलहत्न मिश्राम क्वित्य नागिन। छेनात्म ওঁবনে সশোক, কিংশুক, কুটজ, নাগ, কেশরপ্রভৃতি কুম্বন-विक्रिक रहेल। सबुकरततो ७१ ७१ मनि कंत्रक अक श्रूला ছইতে অপর পুষ্পে অপর পুষ্প হইতে মনা পুষ্পে মধু প।ন क्ति लागिल। मतायत क्यूम, कब्लाव, कमलक्ष्रि कलभूष्ण अक्षू हिरु हड्ल। भूरिकाकित्तता (रान जनगाना ঋতুতে হর সাধন করিতেছিল, একবে বসস্থসমাগ্রম ত। रात्री निक्षमत्नात्रथ रहेशा कुछ कुछ त्रत्व वित्रविनिशत्क विष्-ঞল করিয়া তুলিল। জীবগুণ ক্রিয়া দারা দ্বন্দুভাব বিস্তার कतिए नार्शिन। क्तककृत गृक बाता न्यानस्थिनियिन-তাকী প্রিয়ার কণ্ডু অপনোদন করিতে আরম্ভ করিল। কামোক্ত করেণ্ডাসকল করিদিগকে প্রণয়বশতঃ পদ্ম-

বাৰপ্তিক।।

क्षिक्रमात्रि व्यक्तवन मान कदिए वाणित। इन्द्रमता ज क्षिलकुक विषे व्हाता काम्रामद्यायर उद्शत हहेत। उनस्य-ক্লানিয়াপ্ত পৃপান্তবকবিশিউ, অধ্যৱপ কিসলয়যুক লভা-বধুনিবকৈ তরুসকল বিন্দু শাখারপ ভুক ছারা জালিকন कतिरा जाधिक। পृथिती स्वन जनभीश्वरतत स्नवा कतिराउ প্রকৃতিসহচরীর সহিত সুসক্ষিত হইতেছিলেন। ভাঁহার অভিনক্ষি বৃঝিতে পারিয়াই যেন শৃতুরাজ নানাপ্রকার আভরণ উচ্চার যথাযোগ্য স্থানে সংলগ্ন করিয়া দিলেন। এক দিবস গ্রাক্তা নিদ্রিত ছিলেন, নিশীথসময়ে স্থাত্রত इहेश। ब्रांकारक कहिरलन, नाथ : आमि धकी सक्ष प्रि-लाम। त्राका कहित्वन, श्रिटा ' कि चन्न प्रिथित दव प्रिथि। बाड्सी कहिरलन, नाथ! आणि करश्न स्मिथाम, एान आ-পনি শুকু কুমুমের মালা গ্রন্থন্তক আমার গলার প ताहेश। पिटलट्टन। हेरा त्मियेटल त्मिथटल्टर निक्या जन्न হইল। আমি গুরুপরস্পরায় শুনিয়াছি, এ প্রকার স্বগ্ন-मर्भन मञ्जाननक। ताका कवितान, श्चिरमः धर्मिरशत চরিত ও স্বপ্ন এবং দৈবাঁ উৎপাৎ, এ সকল কাকভাদীয়ের मात्र मकल इत्। घडनव स्टात छोता ए महनामकत হয়, তাহা পণ্ডিতের অবিশ্বাস্ত। তবে শুনিয়াছি, ওপ্লকার স্থাসন্দর্শনে সন্থান হয়। ভোমার এস্থলে যদি স্বপ্নের অনুযায়ী কল কলে, তবে বিলক্ষণ ক্লেশ হইবে।

রাজ্ঞীর সন্তান হয় নাই, তিনি সর্বাদাই অপত্যকাম নার স্ত্রীবৃদ্ধিস্থলত কার্য্যের অনুষ্ঠানে রত হইয়া কখন বা বালাধিষ্ঠাত্রী ষষ্ঠী দেবীর কখন বা অন্যান্য দেবদেবীর আ রাধনা ক্ষরিতেন। সূত্রাং সন্তান হইবে শুনিয়া মনে মনে মৎপরোনাস্থি সন্ধৃট হইলেন। কিন্তু বাহিরে লক্ষ্যা দেখা- ইবার নিমিত্ত কহিলেন, সকলেতেই জাগনায় এক রকম, আমি কিছু শুনিতে চাহিতেছিনাক কই প্রাথান কথোপকখন করিতে করিতে উভরে নিজা থেলেন, ক্ষাপ্ত এ রক্ষনীতেই রাজমহিনীর পর্তের সঞ্চার হন। দিন দিন উাহার গর্ভের উপচয় হইতে লাগিল। ক্রমে সপ্তম মাস বিগত, এই কালে সম্পূর্ণ গর্ভবতীর লক্ষণ হইল। অলমে শরীর অবশ, সাহার করিলে তৃথি জলে না, মুগে সর্বনা ভূত্তন ৪ অল্প অল্প বমন হয়। বজিনেশ ক্ষীত, ক্ষীরভরে প্রোধর অবনত হওয়াতে মন্দ্রমন্ত্র গতি হইল। যথেছা শরনে, অমু এবং দক্ষম্ভিকা ভোজনে অধিক ইন্ডা ক্রিলা।

व व्यवहार यहन वाम कर्ता ताक्रमहिवीत शक्क दिलक्षण क्रिक्त हहें से छेठिल। छिनि क्थन कथन छारवन, यिन दाकार मंठ हर, उरव लोकालर मनन करि। वक मिन ताका वक्षी खानुश्चमृत्य हर्मी छल मीलाउरल विमा भूछक शार्र करि- उद्दिन । ताक्षी छाविरणन, वथन ताकारक कि छात्रा कि, छिन लोकालर यहिए मंग्युड हन कि ना। वहें छाविरा मंश्रिक निक्षे भगन करिरणन, ताक्षा छाहात मिर्छ पृष्ठिशा मंश्रिक विद्या करिएन, खिरा ! आभात निक्षे कि छामात कि छ छात्रा करिएन, खिरा ! आभात निक्षे कि छामात कि छ छात्रा करिएन, खिरा ! आभात निक्षे कि छामात कि छ छात्रा करिएन, बिरा ! अभाव करिएन, ना वभन करिएन। वह विद्या स्थि भीलात वक परम छेशर्यमन करिरणन। श्रिक क्षा कथा कथा करिरणन, नाथ ! छितकालहें श्रुष्ठक शार्र करिता मगत्र वाशन करिरणन, नाथ ! छितकालहें श्रुष्ठक शार्र करिरणन ना। खाशनामिरणत नाम मन्यारक जामता छो- लाक हहेता कि छेशरणन करिर। खाशनारक छेशरमण मिरा

कि ना रमयण यत्। कतिएछ.कहिएछ हि। यत्न कक्षन रम्थि, शृद्धि ना कि हिलन, आंत्र अथन कि श्रेताहन, उदिनेत भूक शुक्ररवत्रा वनश्रवक त्व तावा छेन्द्रजात करियादन ভাহা ক্ষাপনার হস্তবহিভূত হওয়াতে দেশমধ্যে যে ছুর-পদের অপ্যশ হইয়াছে, তাহা আর বলিবার নহে। তং-कारण यूरक विश्र्थ रहेशा जान कर्य करतन महि। भश्या ! <লুন দেখি, দুটের দহিত ভদ্র ব্যবহার করিলে কি নিন্দার আছে ? যেমন বস্তাদিতে অসংহত অঙ্গ শীঘুই অত্ত কৰ্তৃক **एक रहा। एकानि भार्कत निकंते महत्राला कहिएल पास पार**न বিপদ হইবার সম্ভাবনা। যে যেনল লোক, ভালার গছিত ভক্রপ বাবহার কর।ই উচিত। আপন।দিলের বিচিত্রবরণা চিত্তর্ত্তি মাদৃশ জনের বোধগমা ইইবার বিষয় কি,কেন ন: श्रुटर्स तामरजारम घठ ज्लि ना इहेज ; अकरन करें , जिल, ক্যায় বনকল আহার করিয়াও তাহা হইতে অধিক তৃত্য रमथा यात्र। कि काम्बर्गाः चिनि स्ट्राह्मान पूर्वत्कनार्थ-নিন্দিত তৰ্পমন্তিত পর্যান্তে শরন করিতেন ও মহল-মহা স্ততিগীতি দারা বিনিত্র হইতেন, তিনিই একণে শুদ্দ পর্ণরাশির উপর বাছযুগল উপধান করিরা শ্বান এবং শিবাগণের অশিব ধনিতে বিবোধিত হয়। এসকল मत्न कतित्व समय विमीनं श्रेत्रा शांत्र।

হে নাথ! একণে আমি একটা অনুরোধ করি, অবহিত চিত্তে প্রবণ করুন। আমার বে প্রকার ছঃসময় উপস্থিত, তাহাতে লোকালয়ে থাকা নিতান্ত কর্ত্তবা, আর যদি চিরকাল মনুবোর আবাদে থাকিতে অপিনকার এ-রান্ত না হয়, তবে প্রসবকাল পর্যন্ত থাকিয়া এই বনে আসিব। থাকিবার নিমিন্তেও কাহার তোষাযোগ বা, माश्या थार्चना कतिए हरेरत मा। आमात अवक्षामी अमाणिक कीविष बारहन। आमारक शाहरण है। इति रय कुछ मुक्क स्ट्रेटिन, छोहा विलाख भारि मा। विरम्भक्ष পিতার পরলোক হইলে আমিই রাজ্যের উত্তরাধিকারিণী হইব। আপনি আর এই হিংক্র জম্বপরিপূর্ণ অরণ্যে বাস क्रिंदिन ना। वटन वांत्र क्रान्न द्वांन सूथ नां₹, ब्राङ्गाडः अरमय द्वार्थ। महातार्षः शत्राम्यत मार्गाह्यक निसम क-तित्र। मसूनानिगटक त्मे मभाकष्टक वर्क क्रिया**ट्य**न. ङंशास्ट अत्नक छेशकांत्र आह्म। आमता अनिमादत्त সাক্ষাৎ আজাস্তৰপ সেই সামাজিক নিয়ম উল্লেখন করি-उछि, डाहोर्ड कि यामामित्रह भाभ हहेत ना। अधून **त्निय, পশুরাও বিপদ্ হইতে উদ্ধার হই**বার জন্য সর্কান। नल-বন্ধ হইয়া থাকে। পশুদিগেরও আসক্ষলিক্ষা বৃত্তি আছে। আমর। মনুবাসমাজ পরিতাগে ক্ররিয়া ভাল কর্মা করি নাই। যদি মানবমগুলী-সমাঝীৰ্ণ নগুৱে বা গ্রামে বাস করিতাম তবে এই সকল ছঃখের শতাংশের একাংশও স্কুতুভব ক-রিতে হট্ত না। জামার বোধ হয়, প্রজাবা জন্যবিধিও कांशनात शत्क आह्य। ज्यन गिन तिर्म यहिया श्रका हि-গের স্থিত যুক্তিপূর্বক সমর করেন, তবে অনায়াসেই জয় ী ও রাজালক্ষ্মী লাভ হয়। আমি নিশ্চয় কৃষ্টিতেছি, রাজার। কামনাখনা মুনিগণের নাান্ন জিতকোণ হইরা কথনই श्रुशी इंडेर्ड भारतम मा। अन्त aर मक माम कतिर्ट सङ्गीत হউন। ধলুন দেখি, লক্ষীপতির চিত্রহরূপ রাজমুক্ট পরি-ত্যাগ করিশ্ন কটাধারণে কি স্থা হয়?

রাজা রাজীর এইৰপ উত্তেজনাতে প্রথমতঃ লোকা-লয়ে যাইতে সক্ষত হইলেন। কিন্তু পরক্ষণেই মমুঘাগণের

কাৰ্যার উহার স্থৃতিপথে পতিত হওয়াতে সে के अकर्नाम पूर करेंग। जथन बाब्जीटक कहित्तम, ब्रिट्स क्रिम मसुरामिटनत यञाव कान ना, এই निमित्त লোকনিরে বাইতে চাহ। মন্তব্যের ন্যায় নৃশংস জন্ধ আর ছিতীয় নাই। এই পরপ্রতারক প্রাণীকে যে বিশ্বাস করে. टम हित्रकाल क्रःथंगरूटन मध्य रहा। हेरांद्रा मण्ण्यकात्ल স্বকার্যা সাধনজন্য যত আদর করে, বিপুৎকালেও তেমনি: ভাচ্চল্য করিয়া থাকে, আমরা বাহ্যদিগকে পুত্রনির্বিশেষে পালন ও ধন ছারা নানা প্রকার উপকার করিয়াছি। এ-कर्प टाशमिरगत निक्रे भई अवसा क्रानाईटल हिनियां চিনিতে পারিবে না। সম্পৎকার্নে যাহারা অনেক যতে নিমন্ত্রণ করিয়া গুলে লইত. এই অবস্থার ভাষ্যালিগের আন নামে গেলে আপদ জ্ঞান করিয়া তিরস্কারপুর্মক দূর করিয়া ण्टित । अहे निमल्डे कानीता करिया बाटकन, मनुवानन লক্ষার বর্ষাত্র। এই অধম জাতির মধ্যে কদাচিৎ ছুই একটী মনুষ্য ভদ্র হইয়া উঠে। ধেমন একটা বংশবিউপীর কিয়দংশ বংশী হইয়া সুস্তুরে বাজিতে থাকে, অপরাংশ প্রাঙ্গণসন্মার্ক্সনী হয়। তেমনি এক বংশে জনা গ্রহণ ক-तिहा (कर्वा यथार्थ मनुधानमनाहा हरे(छ ह आत (कर्वा মনুষানামের গৌরব নষ্ট করিতেছে। প্রথমাপেকা শে-याङ मनूबाई व्यक्तिकाश्म।

পরমেশার এই অভিপ্রায়ে মনুষাকুলের স্থান্ট করিয়ান য়াছেন, যে তাহারা প্রত্যেকে পুথক পৃথক কর্মে ব্যাপৃত থাকিবে। কেহ ধনী, কেহ নির্ধন, কেহ প্রভূ, কেহ ভূকা, ইত্যাদি পরস্পার অবস্থাভেদের কারণই স্থারের নিঃম, যদি সকলের অবস্থা সমান ছইত তার। চইলে কখনই সংসার চলিত না। অভএষ এক একটা সময়ের প্র একটা ভিন্ন ভিন্ন রুত্তি অবলয়ন করা ক্লমনীন্ত্রের অঞ্ মোদিত, তাহার আর কোন সন্দেহ নাই ভিতৰীৰ বাঁহার: এক একটা স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র রুদ্ধিতে ব্যাপুত আছেন, উাহারাই প্রশংসার পাত্র। যাহারা অনোর অনলমিত ह-ভির অনুগামী হইরা চলেন, তাহাদিগকে মনুষ্য না বলিয়া। ছিপদবিশিক নরপশু বলাই উচিত। কলতঃ তাহা-দিগের কার্ষ্যের সহিত পশুগণের কার্যা ভুগনা করিলে कान इंडत विस्मय स्मर्था यात्र ना। साहा इंडेक, जामि स পদবীতে পদার্পণ করিয়াছি, সেই ভাল। আর পরপ্রদর্শিত পথে कथनरे विघर। कांत्रिय ना। जुमि श्रामवकारन क्राम পাইবে এই আশক্ষা করিতেছ, কিন্তু নিবেচনা করিলে সে-ভয় কোন কার্বোর নহে। বল দেখি, যাহা হইতে এই व्यमःश्रा मनुषाकुरमञ्ज छैदशिष्ठ महिशास, रमहे व्यानिभनाती কি প্রসব হইয়াছিলেন না। বিশেষতঃ ইতর জন্মরা প্রস বকালে কাহার সাহায্য প্রার্থনা করিয়া থাকে। অহত প্রসাব হইতে কোন ক্লেশও পার না। যে জগদীশর গ-র্ভের সংগার করেন, প্রস্বকালেও তিনিই সাহায্য করিয়া খাকেন। তাঁহার তুলা দরালু কি আর আছে। আবার जिनिहे त्रहे मग्रः अपूर वांनत्कत ज्ञानावस्थात जाहातत कना करनीत खन सूर्यांनम छूत्र होता पूर्व कतिया तात्थन, व्यनर्थक हिन्छ। कतियात প্রয়োজন নাই, गाँशत जानना जि-নিই ভাবিতেছেন, তুনি নিশ্নিস্ত ুইইয়া থাক। ।প্রয়ে! **এখন মনে পড়ে, जामि जाउधरे और मकल** लाविशा छा-भारक कनकशृरह याहरे अतामर्भ निवाहिलाय। जूमि जर-काल ठाहा छन माहे, अकर्प इथा पिन्ठा कतिव्रा कि इरेर्प ।

নিজ্ঞানী থাইৰপ কথোপকখন হইতেছে, এমন সময়ে দিকি কিনি ছইতে "ছে হরিণলণ। তোমরাই স্থানী" এই শেষদি কিনি ছইতে "ছে হরিণলণ। তোমরাই স্থানী" এই শেষদি কিনি দিলের অনিকাশি পাতিত হইল। নামন মারমান হয়, তেমনি দেই অসম্যাবিত মন্তবোর হঠেনা কাহারা স্থির কর্নে শুনিতে লাগিলেন। তথান রাজারা কাহারা স্থির কর্নে শুনিতে লাগিলেন। তথান রাজারা কাইর কর্নে শুনিতে লাগিলেন। তথান রাজারা কাহারেন কাছির কিন্তু এক দিন্ত কোন মন্তব্যান কাম কর্নকুল্বে প্রবিষ্ট হয় নাই। হঠাৎ কথানে কো আন্দ্রান করিতে হইল। রাজী ক্রেন্সেন, নালা বিষয়ে আনুসন্ধান করিতে হইল। রাজী ক্রেন্সেন, নালা বিষয়ে আন্দ্রারও ক্রেন্ড্রেন জ্বিরাছে। ক্রুন, সে

भनस्त ताका ও ताक्यि स्वि । पिटल एमरे कर देरहिंदिल, अल्ले अल्ले ११ कर ति कि । कि । अले कर्म करिया
हिंदिलन, अकी शुक्य करतक जन ही अमां जन हिंदा
हिंदिलन, अकी शुक्य करतक जन ही अमां जन हिंदा
हिंदिलन, अकी शुक्य करतक जन ही अमां जन हिंदिल कर्म
हिंदा कर्म हिंदिल कर्मिया
हिंदिल क्रिक्तिन, अति । अर्थ एम म्याली कर्माहिल । व क्यादन आति हाहि, जेहाल एम्स्कि जात असार । कार्या
हिंदिल आति । क्रिक्ति । क्रिक्

সেই বনাগত পাত্ব কাননের শেন্ডো দেখিয়া অভান্ত

সন্তুত ইইয়াছিলেন। কতকগুলি হরিণ ইতপ্ততঃ হরিছেছিল ও চঞ্চল লোচনে উলিনি কহিতে লাগিলেন, হেন্থরিণগণা ভোমরা কি তপদাা করিরাছিলে যে. বিধাতা তোমাদিগকে কাহারও অধীন করেন নাই। তোমরা পরিস্রান্ত হইলে পরম স্থপে নিজা হাও। কাহারও নিকট যাত্রা কর না অপ্রচ কোন অভাবও নাই। পৃথিবীতে তোমরাই স্থী। ঠে বনস্থ বিটপিদকল। হে নদীপুলিন। হে উপল্থপ্রদকল। ভোমরাও ক্থে আছ। আমি সপরিবারে তোমাদিগের প্রতিবাদী ইলান। তোমরা আমাদিগের সহিত চিক্ত

হা অধম সমুষ্য। তোরা কি নির্দার। তোদিখের আবীয় নাই, বন্ধ নাই, কার্যাকালে আন্ধীষের সহিত্ত শক্ততা
এবং শক্তর সহিত্ত মিক্তা করিস। তোদিগের ভূলা
স্বার্থপর ভিত্তক জীব জার নাই। বনস্থ শাপদ পশুও
তোদিগের হইতে ভয়ন্তর নহে। তাহাদিগকে পালন
করিলে তাহার। প্রতিপালকের অপকার করে না। তোর।
সপা হইতেও খল। কেন না ঔষধ দ্বারা বিষণরকৈ
নিবারণ করা ধায় কিন্তু তোদিগকে নিবারণ করা ভেবজের
অসাধ্য।

হা পৃথিনি! তুমি আর কত কাল এই পাপ কুলের ভার বহন করিবে। আর আবিশ্যক নাই, যথেক হইয়াছে। একংণ রসাতলে গামন করিয়া পাপভারবহন হইতে মুক্ত হও।

তে প্রমেশর । তুমি যে কি অভিপ্রামে এই নরজাতির সৃষ্টি করিয়াছ, তাহা বলিতে পারি না। বরং এই জগতের ইত্র জন্তু দ্বারা তোমার সৃষ্টির শোভা রুদ্ধি ইইতেছে।

বাসন্তিক।

কিছু এই জাতি ছারা তোমার নির্দাত বিখের সপক। কই উপকার নাই। এই অধম জাতির মধ্যে দৈনারত কাহাদিশের চরিত্র সংশোধন হইরা উঠে, তাহাদিগের ছার। এই স্থানির বে কিছু শোভা রুজি হয়। কিন্তু তাদৃশ মন্ত্য অতি বিরল।

धेरै क्षकारत जिनि नाना चारकभ कवित्छ नानियन। पाका तास्त्रीत्क कश्तिम, श्रिया । त्वाम श्रीमत्व ठ, वृधि भूमदास अहे महुवाशनमङ ताम कतिरट अखिनाव कते। त्लामता चालि निरस्वाथ। त्य ब्लेक, अकरन छेड्डामिरशत সম্মুখীন হইয়া পরিচৰ জিজ্ঞাসা করি। পরে তাঁহার। সেই নমাগত ব্যক্তিদিগের নিকট গমন করিয়া দেখিতে লাগি-্লন, ভাঁহাদিংগর শ্রীর রুশ ও ছুর্বল এবং তৈল বিনা अञ्चरमीन्म्सः माल्यन । मञ्चन्यः कुछन्मकल क्रिंगित्य हरे-য়।ছে। বস্ত্রগণ্ডসকল স্কেনিদ্ধ করিয়া পরিদান করতে বোধ হইল, যেন তাহাদিনের পরিহিত নানা রঙ্গের বস্ত্র-খাওে নানাপ্রকার ছংখা প্রচার হইতেছে। এক দিলে গুটী কতক স্ত্রী শ্যামল তৃণাচ্চাদিত ভূমির উপর বসনাঞ্ল পাতিয়া শ্যানা ছিল, তাহাদিগের বক্ষঃস্থলস্থিত বালিকার। ন্তন পান করিতেছে। এই সকল দেপিয়া রাজা শেই পুরুষটাকে अञ्छात्रिलनः, महानतः आश्रनाता कः ? এবং काश इंटेर्ड आमियाहिन आत कान द्वान है त गाई-বেন। যদি কাৰ্যাক্ষতি না হয় তবে নিকটে আমার পাঞ্জয আছে তথার আদিয়া অতিথিদৎকাব গ্রহণ করুন।

রাজার সেই জমায়িক বাকা আরণ করিয়া তিনি ক^{তি} লোন, মহাশয়! কাণেক অপেকা করুন, আমার আর ডুইটা সচোদর বনমধ্যে ফলায়েষণে গমন ক্রিয়াছেন, তাহার। সাইবে নকলে একর হবরা জাপনার অক্রেন্দ্র থাওয়া বাইবে। বলিতে বলিতে তাহারা ক্রুক্তিনি করা নাইয়া তথার উপস্থিত হইলেন। রাজা তাহারিনাক পরের চিত সম্বর্জনা করিয়া আআমে বাইতে অস্ক্রেন্দ করিয়ার তথন তাহারা নৃপতির সহিত তদায় আআমে উপস্থিত ইয়া সান করিলেন ও বনস্থলত কল মূল আহার করিয়া গতক্রম ইইলেন। পরে সকলে এক শীলাতলে উপবেশন করিয়া পরশ্পর বিশ্রমালাপ করিতেছেন। য়ালা কহিলেন, আমি আপনাদিপের বরল হভাব দেখিয়া পরিচয় জিজ্ঞানিত সাহস করিতেছি। আমার এ উদ্ধৃতা মার্ক্ত্রনা করিকেন বিদ্যান পরিচয় পরিচয় পরিচয় পরিচয় পরিচয় পরিচয় পরিচয় পরিক্রান করিয়ার বাদ করিয়া আমার কৌত্হলাক্রান্ত চিত্তরভিকে পরিচয় পরিলান করিয়া আমার কৌত্হলাক্রান্ত চিত্তরভিকে পরিচয় প্রতান করিয়া আমার কৌত্হলাক্রান্ত চিত্তরভিকে পরিচয় তথাক করেন। আপনাদিপের আকার প্রকার দেখিয়াবোধ হইতেছে যে, আপনারা কোন অন্তুত কারণবশতঃ সংসারাশ্রম পরিতাগে করিয়া থাকিবেন।

পূর্বে থিনি রাজার সহিত প্রথম আলাপ করিয়াছিলেন, তিনি কহিলেন, মহাশর ওত্তম অন্তত্ত্ব করিয়াছেন। আমরা গৃহস্থাআম ত্যাগ করিয়া বনে বাস করিছে
আনিয়াছি। যে কারণে গৃহস্থার্ম ত্যাগ করিয়াছি, তাহা
আবণ করুন। মহাশয় থেই ছুইটা আমার কনিষ্ঠ আতা,
পূর্বেই শুনিয়াছেন। তাহার মধ্যে এই পৌরাজটা মধাম,
ইহার নাম বলভূৎ। আর এই বলাহক নামা খ্যামল বর্ণটা
কনিষ্ঠ। আনিই সর্বজ্যেন্ত। যাহার নিকট ঐ ব্যাক্টা
করিতেহে, উনি আমার সহধর্মিনী। আর ঐ কর্টা
আমারিগের বিধ্বা ভগিনী। মধ্যমের বিবাহ হইয়াছিল,
আশা দিন গৃহশুনা হইয়াছে। কনিষ্ঠ আলাপি আবিবাহিত

শারেক টোন কবিরাছেন, বিবাহ করিবেন না। আমরা তারিকার সালেক শারুরোধ করিয়াছিলাম কিন্তু কিছুতেই মাসত হন মাই। একাণে বনাগমনের কারণ প্রবণ

-

তৃতীয় নৰ্ম।

निरवकी कश्तिन, मश्रमञ्जा श्रमिता शाकितन। हिमानदंतत निकन शन्तिम मिर्टंग आशीर्वर्ड नांटम अक প্রসিদ্ধ দেশ আছে। ঐ দেশে চম্পাবতী নামে এক বি-गांज नगत जथाकांत ताज्यांनी। य शांत हेतावजी नगेत नील वर्ग निर्माल मिला श्रवाहिण इंहेप्डएह। विश्वास्त्र मन র্বন। বদস্থপতু বিরাজমান এবং নকল পৃথিবীর মধ্যে ए। এक উৎकृष्टे स्थान, त्रिशासन विक्रमात्रन नास्य अक প্রবলপ্রতাপ নরপতি ছিলেন। আমি ভাঁহার ধর্মাধি-रतारा निवुक्त हिलाय। तांका मत्न मत्न कहिएछ लाजि-लम। এ ए आमारक है नका कतिया नकन कथा कहि-তেছে। ভাল শুনা যাউক, প্রকাশে হা : মহাশয়। ভার পর। তিনি কহিলেন, জামাদিগের রাজা কোন কারণ-वर्गाउइ तत्न श्रम्भान कतित्वन । ताका मत्न मत्न श्री ! यथा-র্বই ত আমি বনে আসিরাছি। প্রকাশে তার পর কি হ-ইল। তিনি কহিলেন, আমি রাজার প্রধান সচিব ছিলাম। नमशयनकोटल जांगात क्षांक मधुनास कार्त्यात जांत्रार्थन क-রিরা প্রস্থান করিলেন। আমি রাজার বনগমনের পর धकाकी ताई सुविखीनं तांत्जातं कार्या कि धकारत निस्तार कतिव हेश विद्वारमा कतिराहि, ताला मरन मरम है। अ आमात ताइ अधान मही समग्रह उ रहि! कि आन्ध्यां!

त्म श्रकात वर्ग नाहे, इसम्युग विके हरेगाहे। त्माना गर्गा हिमिए भारा यात्र ना। अकार्य वस्त्राम् । कामि स्मिर्छि, जात शत। समन करिर्णम, मराने কোখা আমি কার্যা নির্বাহের চিস্তা করিছেছি আর কো थात रमहे दाका काना दाकाद किर्वातकुरू हहेगा आ-मामिरशत तांका य मिन वन शमन कतिरणम, भारे मिन बात-পুরনিবাসী রাজা কীর্ন্তিপ্রির জাসিয়া সেই রাজ্য অধিকার করত আমার কর্মে এক জন আপন লোক নিযুক্ত করিয়া क्षांन कतित्वन। महत्वहै आमि उथन विवेषकर्पानुना হইলাম। সঞ্চিত ধন ব্যয় করিতে আর্ম্ভ করিলে আর क्छ-मिन शादक, वित्मयण्डः किছूमां आत्र हिल ना। किन्ह मर्द्रमा माना कार्सा राज्ञ कतिरु इहेड, आमि अण्य नि-त्नित्र मरशाहे निश्ममन हहेशा পজিলাম। তথন **অ**তি কটে দিন্যাত্রা নির্বাহ হইতে লাগিলঃ কোন কোন দিন সমস্ত দিবারাত্রি দপরিবারে উপবাদ করিয়া থাকিতেও হইয়াছে। এত কট পাইয়াছি, তথাপি আমার মনে এক पित्नत निमित्त्र शहतत निक्छे याक्का कतिए अछिलाय इम्र नारे।

হখন জদৃত নক্ষ হয়, তথন নানাপ্রকারে বিষয় নত হইতে থাকে। গৃহস্থিত জনাজাতসকল কতক অগ্নিকে লগ্ধ কতক চোর কর্ত্ব জপদ্ধত হইল। মহাশয়! বলিলে বিশাস করিবেন না, সে সময়ে আমি যে কত কটে পড়ি-লাম ভাছা জার বলিতে অপেকা কি। জখন মন্থবারা কি পাষণ্ড। আমার সেই প্রকার বিপদ্সময়ে পূর্ব শক্ত-ক্ষা থক্তাহত হইলা বৈর শোধন করিতে লাগিল। আমি যথম ধর্মানিকরণে নিযুক্ত ছিলাম তথন নিভাস্ত আর্থ-

লার বারে ক্রিকোচ লাইরা বিচার করিতাস না। विकासका मान्नीत टार्बार छनितार वधार्थ वधार्थ दिव कवित्रीतः बहु नरह । चत्रः हचद्वर्ण समन्भूकंक जागात নিপ্র তথ্ স্থাত হট্যা বিচার নিপাত্ত করিতাম। মনু-बाह्रे जान कित्रिंख भारत माम दत्र, त्मरे कात्रण तमलक লোক আমার প্রতি বক্ত ছিল, এক্ষণে শুভ যোগ পাইরা বৈর প্রতিকার করিতে জারম্ভ করিল। গৃহমধ্যে আছারা-দির কট উপস্থিত হইলে পরিবারেরা বিরক্ত হইয়া খাকে, **তथन महक्र कथात्र कुनर रहा। आ**नि तम ममत्य गृहर किश স্থন্য লোকের বাটীতে কোন স্থানেই নিশ্চিন্ত হইয়া যে ছুই দণ্ড বসিব, সে যোছিল না। তাহার কারণ কাহারও বা-টাতে গেলে প্রতিবাসীরা কৌশলে বিজ্ঞপ করিত কিন্তু ছঃবের মধ্যে এই ছিল, তাহারা যে আমাকে সে প্রকার নিন্দাবাদ করিত তাহা যে জামি বুরিতাম, ইহা তাহারা বুকিতে পারিত না। তথা হইতে ত্যক্ত হইয়া গৃহে আইলে অবার পরিবারের দ্বন্দ শুনিতে হইত। আমি এই সকল কারণে কোন ঠাই ডিষ্ঠিতে না পারিয়া বিরক্ত হইয়া উঠি-তাম। ত্যক্ত হইলে কত দিন স্বভাব ঠিক্ থাকে। ক্রমে-कत्म नाना प्र्कावनात्र आमारक निजास जेमारनत नाव इहेर्ड॰ इ**हेन्नाहिल। त्म ममरत्र रय कि कति, कि श्राह, का**-পায় যাই, কিছুই স্থির হইত না। কেবল কি ছিলাম, কি रहेलाम, और छादनाई आभात मत्न नित्रसत जांगनक दिल। তৎকালে বাঁহারা স্বপক্ষ ছিলেন, ভাঁহারাও বিপক্ষভয়ে আমাদিধের সহিত জালাপ পর্যন্তও রহিত করিরাছিলেন। শাক্ষাতে আমাদিগের কোন ক্ষতি হইতে দেখিলে কেবল मरन मरन्हे अञ्चलाश कतिराजन। उद्यक्तारत आमता व

श्रीमनं किकांनां कृषि अमन अक्षे श्रीम श्रीवेष क्षेत्रके हुई हो छित्राहित । जामि नकन गाइका नाम्बाह्य के छात्र वित्रक इरेगा अक मिन अरे चांच्य मिन स्मानित हुई हो कि हिनाम, अकार मानता कि कृषि श्रीक ख्यानित हुई हो कि काम स्मानित क्षेत्रके अकार काम स्मानित क्षेत्रके काम अकार काम स्मानित क्षेत्रके काम अकार काम स्मानित काम

अहे नकल कथा खिनिया मधामासूक किश्तिन, जार्शिन (य नकल कथा किश्तिन, जारा निजां पुलियुक, त्कन ना दाशात्म अकी त्वाक खनक नाहे, नकत्वहें विश्वक, त्वधात्म वान किश्तिन कथनहें मझल रहाना। नक्षमधा वर्जाठ कश्रात छहें क्षकांत पाय, क्षकाः मर्यमा मनखांशः हि-छीत्रकः कथ्य कि घरेना रह जारां किश्ति नाहें। क्ष्मणणः विश्वकम खनीतः मध्या थाका कथनहें फेरिंच नहा। खानी त्वादकां किश्तिकम खनीतः मध्या भावा कथनहें फेरिंच नहा। खानी त्वादकां किश्तिकम खनीतः विश्वकम क्षितः ।

एथन हैनि धरे श्रकांत किंदिणन, ज्यन आमात धरे किंग्छ खांठा हिलाहिल्डाहिल, अञ्चानश्रलादिर रेलेक, अथवा क्वाट्यर रेलेक, किंदिणन, धक्करण आमता कि कांश्व-स्टायत नामात प्रभालांग किंद्रमा श्रणांचन किंद्रमें, लांश कर्य-ने रेहेरव ना। देवर धर्म बादन शाकिया देवरलिखन क्रिया प्रथा गाँछक। अक्विप्रश्रा खानिक किंद्राल शिवा मन्न ख व्याच्यत । हाल बाल क्वोच्या स्थमन किंद्रमा रेस प्रभाल ख किंद्रम किंद्रिए हेंद्रदेश आश्रमाता महात्रका करतन आगरे स्त्रुवा आमि धकाकीर हुके लांकिनगरक स्थमनमादन क्याप्रभ

বাদান্তিক।

विश्व प्रिकान घर दिनांग, अकता विश्व बारे किस कि तार परचक्त निवादर, जालन वा दनून किथ. अवानत गताकाष्ठ कगतिकृत त्य भनावमानं त्मत्वत श्रीठ क्षालकृष्टिन स्वटंब छर्षामृष्टि करत, जाहात कातन कि ? न्या-किई तिथा गाहिएएछ, गीत शूक्रायता कथनहे बारनात नज्जि সম্ করিতে পারে না। দেখুন দেখি, পশুরাও শত্রু দমন করিয়া থাকে। আমরা যদি জরাতিভয়ে প্লায়ন করি তবে। त्य इंडत जन्ड इंट्रेंटंड निकृष्ट रहेत। शतरमभत अहे **অভিপ্রায়ে আমাদিগকে জিঘাংসা রুলি দিয়াছেন যে, অ**-মরা এই রুজির সহায়তায় শত্রহত হটতে জীবন রক্ষা করিতে পারি। এমন হল ভিন্ন ভার কোন স্থানে এই রাগ ও প্রতিহিংসা রুক্তি চরিকার্থ করিব। অপত্যোৎপাদ-त्मत्र निमिष्ठ कामः भक्तममनकना काथ : **अ**तीत्रकात হেডু লোভ ; স্বজন পালনে মোহ : ঐহিক মুখ সাধনজন্য यम अवर श्रवस्थात श्रम ७ मर्यामार उरमत कावन माध्यर्यः यपि अ मकन इंजि शहरमखंत , त्नांकपिरशंत च्रांविषक्षं क-রিয়া না দিতেন, তাহা হইলে এই পৃথিবীতে বতপ্রকার सूथ ভোগ करा यात्र ভाशात किष्टूहे हहेंछ मा, लात्क अहे ममछ ইन्फ्रिय्त्रत चलाव ७ कार्या ना क्रानिशाह तिशु वनिशा ব্যাখ্যা করে। যদি যথাস্থানে নিবেশিত করিয়া এই সকল রবিগুলিকে চরিতার্থ করিতে পারা যায়, তবে ইন্দ্রিয় দারা যে কি স্থখ তাহা কার্যাকালেই অনুভব হইরা থাকে। কিন্তু ইহার বিপরীত করিলেই দোষ। যাহা হউক, এক্ষণে शैनवीर्या शुक्रत्यत नात जीकृषात गांत श्रेता जीवादन ना, भक्त प्रमम कतिहरू शाहन करून। माहन कतिहल कर्य क्रम लांड क्या गाम, विश्नवंदः विश्नकोरम क्लांक्छ इन्या छ-

চিত নহে। কেন না বিপাদে হৈব্য ক্রেছে আছিবৰ সাজন ক্ষমা প্রদর্শন করিবে ও যুদ্ধে বিক্রম ক্রেছেইছে। স্বর্ছালা দিপের এই সকল প্রকৃতিসিক্ষ শুণ।

रवमन निवादनारन शृथियी जिमिरत चाक्त एक, राज्यति हेरात वादकात राम्य रहेराय आधान विख्यास्य संक्रामी-ধ্বকারে আছাদিত হট্ল। আমার লোকের উপর নিতান্ত হুণা ও ছেব ছিল, সহজেই কনিষ্ঠের বাক্যসকল আমার मत्नत मुक्क हरबाटक भागि छाशाल मचल दहेता करिलाम. ভাই! **कारण बुक्त कविशाह,** मिलल काक वक्वाका हहै गा चामामिन्नदक द्वान मिटलटक, विश्वकात इम. लाहामिन्नदक श्रे किन बिर्फ स्ट्रेंद । किन्न किश्रकात कतिरन कि स्ट्रेंद, উপায় অবধারণ কর। ইনি কহিলেন, কেন অন্য উপায়ের আবশ্যক কি, এই ত এক সম্ভূপায় আছে, যাহাকে ষেখানে পাওয়া যাইবে তাহাকেই বধ করা যাইবে। আর রন্ধনী-ষোরে চৌর্বাত্বতি অবলয়ন করিয়া সকলের ধন অপহরণ করিব। তাহা হইলে সকলকে বিলক্ষণ প্রতিকল দেওয়া इदेरव। এ कर्म कतिरत जामानिशत्क इत्रृष्टे जाती । इहेर्ड इहेरव ना। किन ना आयताँ छ खाँखा करिशत किहू क्रिकि कतिव ना। देवंतककिनिमिख यांश कता यात्र, जांशांक পাপমাত্র নাই। যেমন অন্যায়কারী ছুই লোকদিগকে ব্ধদপ্তগ্রভৃতি দপ্ত করিলে রান্ধার কোন পাপ হয় মা। তেমনি জুরকর্মা লোকদিগের প্রতি নিষ্ঠ রাচরণ ক্রা তাহাদিগের পূর্বারত পাপের প্রায়শিত মনে করিতে केट्द। এ मकल भेतामर्भ क्विल आमनाई छिन महा-सदेत सानिमाम । जावधान त्रबिद्यनुः त्यम चाटनात निक्षे व्यक्तान ना इता छोहा इदेल विषय विशव चिति।

वामिकिका।

বিশিক্ষা নিয় কৰা ও ৰখনতে জীবন নাল হইতে পারে।

কালি কালিলি, ভাই এ সকল কথা প্রকাশ হইবার

কালিলে কার হবা। কেন না ওপ্ত কথা বাজ করিতে গেলে

কালিভে পারিবেন না। কিন্তু একপ করা কর্নাই উচিত
নহে। ইহাতে মহাপাপ হইবে। কনিষ্ঠ কহিলেন, নহা
শক্ষা আপনি যা বলুন জার তা বলুন, জানি বথার্থ কহিভেছি, স্বলেশীর পক্ষম্ভেলনির হুছের পরিমান মুখনী দেবিয়া এবং কোমল মুখমগুলবিলিই বালকবালিকার রোদনধনি গুনিরা কখনই বৈর নির্যাতনে কাল হইব না। বরং
ভাহাতে সম্ভুইই হইব। খখন আলকাশূনা রিপুনারীগণের
নরননীরে দেশ উচ্ছলিত হইবে, তখন কাল্ড হইলেও হইতে
পারি। ইনি এই প্রকার প্রতিজ্ঞাক্ত হইরা দেই অবিধি
কিসে লোকের জনিই হয়, এই চেকী। করিতে লাগিলেন।

वक निम निभीवममात् यथन कीवालांक निकांत कार-जन हिल, जथन हैनि वाणि इटेट विदर्श इटेसा वक गृहत्यत जाजाम उभिष्ठ इटेसा जाहात यथामकात्र जानतम कित्री कठक निमेत काल विमर्जन ६ कठक वाणिए जानतम कित्र लान। क्रजमकात्र गृहत्यामी आए छेठिसा भूना गृह मिश्ति। धनांगांक मभतिवादित विखत द्यामन कित्र । जाहांमिरशत द्यामनधनि खनित्र। हैहाँत मान उदकाल यक्षण जाल्याम इटेसाइन, जाहा वात्मात्र बाता अकाण कता यात्र ना। मश्म जात जानि हेहाँत वह मकल नृभश्म वावहात्र मिथिस। नि-लात कानि हेहाँत वह मकल नृभश्म वावहात्र मिथिस। नि-लात कानि हेहाँत वह मिल्लाम ना। वह अकारत हैनि य कंड कुकम कह स्वारक्त आण वध कित्रसारका, कि हांशित

नः यो कविए नाटा । जार अस वन के अधिकान कर्त कार्त्रात्रम, मस्त्रात्मका धाराव कार्या कर्त्रा हैनि भारतक द्वा कतियां क कार्य के कि कार्य शांतिका ना विकति थात्र (भव हरेता नात्र, जातिका भाग किहूरे वरेन ना। शदा वाजी भामित्रा भागातक कहि-रणन। भाग ! व्यून, भामको असान स्ट्रेंटर सानाख्य शनासन করি। অদা যে এক কর্ম করিয়াছি তাহা আনেকে জা-निटंड शांतियादह। तसनी असाउ स्टेटनरे विभाग छेशस्डि इरेरेव । এই প্রকার কলিপত বছন দ্বারা আমাদিগকে নগর व्हेर्ड वर्विशंड कतित्तम। **इं**हांत्र मत्न त्व **फा**ंत वक পুণিত অভিপ্রায় ছিল পশ্চাৎ তাহা ব্যক্ত চইল। ন্ত্রামরা প্রথমে তালার বিন্তুবিসর্গঞ্জ বুঝিতে পারিয়া ছিলাম না। ইনি এই প্রকার স্নারোপিত বাকো স্বামা-দিগকে বাটা হটুতে বাহির করিয়া একেকালে নগরের प्रकृषितां अधि जालिया पिरमन। अरनक जुशाकानिङ গৃহ থাকাতে অপ্শ ক্ষণের মধ্যেই অনল বায়ুর সহায়তায় পর্বভপ্রমাণ ত্রিয়া উঠিল। দে সময়ে কেই জাগ্রত থাকে না। নগররক্ষকেরাও সমুদার রাত্রি স্থাগরণ ও পরিজ্ঞম করিয়া তথন নিক্র যায়। বিশেষতঃ প্রভাতকালের স্থগর सुनीडेल शक्षवद्दत मन्म मन्म मक्षात इटेंट्ड थारक, उथन পীড়িত ব্যক্তিরও শরীর স্তস্থ হয়। সকলেই নিদ্রায় অ-ত্তেন হট্যা পড়ে। অভি সমুদায় গৃহে বাাপ্ত হইল, আমি रबाध कविलाम, मेगुत जन्मानरभव रुकेदन, आत अक्षी क्षांगी की विष्ठ शांकित न। महे नक्ष लाकनिकाकत कार्या मिश्रिता उथकारम आमात अन्द्रकतरण ए निर्द्धम উপস্থিত হইরাছিল, ভাহা বর্ণনা করা কঠিন। যেন সে সময়ে

विकास के दिन में विकास में जा बार के बिर ক্রিয়ার স্থামি কি পাবও। বিজাতীয় কোর-ব্যক্তি হা একেকালে শত শত ব্যক্তির প্রাণ বৰ করি-क्षीत्र विभाव नगरक अवन खरूउत स्मरम वार्गात र-ইছে ছেৰিয়াও বে আমি নিবারণ করিলাম না। তৎকালে गांतन कड़िटन ए कथन रे कनिष्ठ जबन कड़िट्ड भाहित ना হা কি পরিভাপ, আমি শক্ত নাশ করিতে গ্রিয়া কত বস্তুর অস্ত্রনাশ করিয়াছি। এ পাপ হইতে কি মুক্ত হইতে পারিব। হা মৃত্যু! তুমি এই মহাপাপকারী নরাধমকে কি বিশৃত হইয়াছ। শীব্র আমাকে গ্রহণ কর। আমি যে মহাপাতিত। করিয়াছি ইংাতে অনন্ত কাল পর্যান্ত নরক্যন্ত্রণা ভোগ ক-রিব। আহা ! যথন সকলে একত্র থাকিয়া পরস্পর শক্ততা করিতাম দেও এক স্থা ছিল, এখন আর কে দ্বন্ধতে आमिरत। आमि कि कतिलाम, त्म हम्भावजी मनेती जुम-श्रात दूरात। त्कत श्रवण ७ भृषितीत जूवनश्रकण ध्वः हालांक्रिरशंत अहकात्स्यक्त छिन, अमा रमहे काम आमा কর্তৃক ভন্মাবলেব হইল। কি কুকর্মা করিয়াছি। অকৃতা-পরাধ পশু গন্ধীপ্রভৃতি ইওঁর অদ্ভদকল বধ করিয়াছি। थ छ्त्रपृष्ठेकना कामात नत्रक कान शहरव ना।

হা দশ্ব বিধান্তঃ। এই খোরতর মহাপাশ করিতে কি
তুমি আমাকে হজন করিয়াছিলে, কি আশ্চর্যা। এখনও
আমার মন্তকে শত শত বজাবাত হইল না। এখনও
পূথিনী রুমাতলে গেল না। এখনও প্রসম্মাল উপস্থিত
হইল না। জামি যদি সদসৎ বিবেচনাপুনা ইন্তর জন্ত হইরা
আস্থ এইণ করিতাম, তাহা হইলেও অনেকের অনেক উপকাবে
আসিতাম। জামা কর্ত্বক মনুষা নামের গৌরব নাই হইল, আ-

मात पूना संभूक कर्मावशाम मात्र कुतानि नाई। तम्बाह्य প্রকার বে আরও কতরাপ অনুতাপ করিয়াছিলাম করের নে ময়ুবার জার স্বরণ হয় না। তৎকালে শুদ্ধ কেবল প্রমুতাপ করিয়াই কান্ত ছিলাম এমত নহে। এই পাপ প্রাণ পরিত্যাপ করিতে প্রস্তুত হইয়া মধ্যমানুত্রকে কহি-লাম, জ্রাতঃ! আর এ জীবন বাখিয়া আবশ্রক নাই। প্র-ভাতঃ যত কাল জীবিত থাকিব, তত দিন কেবল মনস্তাপ-क्ष कराम क्ष इहेव। अकार अहे श्रेष्ठामिक छ्डामारन প্রবেশ করিয়া সকল যন্ত্রণার শেষ করি এবং প্রতিবেশী-গণের অনুবর্ত্তন করিয়া তাহাদিগের সম ছংখভাগী হই। তुমি आमात निकारे पाइँम, ভোষার সহিত জামের মত আলিক্স করিয়া লই। হা জননি ! তুমি কি এমন কুসস্তা-नक् अत्रव कविशाहित्त, अ ठूनाञ्चात्रक प्रमान प्रमान प्रमान উদরে ধারণ করিয়া যে ক্লেশ পাইয়াছিলে, এ অক্কতক্ত তোমার কোন উপকারই করিল না। বরং তোমাদিগকে লোকনিদার ভাগী করিয়া পরিশেষে আব্বশ্বাতী হইল।

 ক্ষিত্র পরে ধার্শিক ন্যারবান মনুব্যের ও অজ্ঞানের তুল্য নার্থার করিয়া কাকেন। ক্রোধোনত কত লোককে বৃহত্তে ক্যুক্তরা, পুত্র, কলত্রপ্রভৃতির প্রাণ নাশ করিয়া পরিশেশে আক্ষ্ত্যাকপ মহাপাপ পর্যান্তর করিতে দেখা গিয়াছে।

লাজহত্যা মহাপাপ, জাল্বহাতীরা জনস্ক কাল নরকানলে লগ হইবে। শান্তকারেরা কহিরাছেন, লোকে যতপ্রকার পাপ করে, অন্তর্ভাপপূর্বাক ঈশ্বরের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিলে তিনি কথঞিৎ ক্ষমা করিলেও করিতে পারেন। কিন্তু জাল্বহাতির কথনই নিজ্তি নাই। কেন না মে প্রাণ পরিত্যাগ করিল সে কেমন করিয়া পশ্বাৎ তাপপূর্বাক পরমেশরের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিবে। সহাশ্মারে মহাপাপ করিয়াছেন, তাহার প্রাশ্বনিত্ত না করিয়া পুনরায় আত্মহননরূপ পাপপক্ষে পতিত হইতেছেন ধৈর্যান্তক্ষন কর্মন। একেকালে মূড়ের নাায় চেতনাশ্রা হাইবেন না। হায়! রিপুপরতন্ত্র হইলে কিছুই বোধ থাকে না। এখন মনে পত্তে, আমি পুর্বাবে যে সকল পরামর্শ দিয়াছিলাম, তদর্মারে কার্যা করিলে কি হইতে। আমি আর কিছু বলিতে চাহিনা এক্ষণে বিবেচনাপুর্বাক কার্যা কর্মন।

वामि मधारमत ताई क्षांत्रमुत উপদেশবাকাসকল कावण कतिया कहिलाम, जाई! जामि छ निर्जास विट्राटन इरेसाहि जामात्र महिल जात श्रुतामर्ग कितवात समय नाई। अकृत्य याहा कतित्व जाल हत, जुमिरे वित्वहमाशूर्यक लाहा कता मधाम कहित्वम, महाभाव: त्यक्रश ज्यास वर्ष कता हरेताल याच रहात किल्लियात तालशूक्यिन्त्यत कर्मा कता हरेताल याच रहात किल्लियात तालशूक्यिन्त्यत कर्मात्राहत हम जत्व क्षमान हरेत्व। ज्यामानिर्णत ज्यानक भक्त, श्राक्तियात स्थम यात त्य कृत्वि हरेगोटह, छा-

शता नकरगरे जामाश्रितकरे करिकाल किंदु क्यान त्या शात्र नाहे जाशास्त्र क्यान व्यवस्थात विशादन दक्र वामानिशतक स्मिश्टि शाम रेंशांता नगत मक्ष कतिया भनारेटलटक, प्रत्ना वह क्रम निमिद्ध । एक ये अर्थ कथामाल कृष्टिया य काल इहैर्स এমত নহে। রাজভারে নীত করাইবে ও অনেক শান্তি দিবে। হয় ও বিচারপতিরা প্রাণ দণ্ড করিলেও করিতে भारतंत्र। এই बना कहिराडिं, आंत्र धर्थात्व शांकाम श्रीनगुरू नाहे। यमि ध ऋत्म वात्र कहा ना इह उर्द ला-কালরে থাকাও উচিত নহে। কেন না পাপ করিলে তাহা कथनके अभिनन शांदक ना। चूछताः देव वेमेन्ट्रिक गाहेव ু পাপী - বলিয়া তথাকাঁর লোকেরাই দক্ষদা বিরক্ত করিবে। लाकानास राथात्मरे थाकि मा कम, ताजा जानिए श-রিলে সেই খানেই বিপদ। অতএব আমি এক প্রার্থ ৰলি, যদি আমরা কোন জরণ্যানী আশ্রয় করি তবে কোন প্রকার ভর থাকে না। কারণ সেখানে রাজা নাই ও মনুষ্য नाहे मिथारम काशांत्र छेलाममा कतिए इहेरव मा, आत কাহারও প্রতি ক্রোধে লোহিতলোচনও হইতে হইবেং मा। तर अक ऋरनंत सान, राशात मान नाह याद्धा नाह তথাচ তদভাবে কোন কেশও নাই। সে স্থান সর্বাদা जात्यात পরিপূর্ণ রহিয়াছে।

মহাশর ! বেখানে ঘোগীদিগের নরন্ত্তিরবিনি-গঠি আনদান্ড অক্তবিত শকুতগণ নিঃশক্ষ চিত্তে পান করে; যেথানে হরিশকুল কোনল হরিছর্ণ তুণ ভোজন করিতে করিতে হর্ষবিক্ষারিত বিচম্পল লোচনে ইভক্তঃ সক্ষান করিতে থাকে, যেথানে পক্ষীদিগের সুষ্ধুর ধনি

रामिखका।

প্রতিষ্ঠিত বিশ্ব বিষয়ে কর্ত্য শীতল হয়। যেথানে প্রপ্রতিষ্ঠিত বৈশ্ব কর্ত্য করিয়া জোধরজ্ঞেক বিপুন্দন পেপ্রিয়া স্থানিয়ক লোচনন্ত্য যুড়ায়, সেই এই ধরাতলে অনিব্যবস্থায় স্থান্থ আম্পদ।

একণে চলুন, আমরা সেই বিষয়বিরক্ত যোগিগণের
প্রার্থনীয় কাননকপ মনোহর স্থান এবং পুণাপ্রম দেখিয়া
আআকে চরিভার্য করি গিয়া, আর এই গৃহস্থাপ্রমক্ষপ
মারাময় কারাগারে আশাপাশে বন্ধ থাকা উচিত নহে।
যদি বলেন, বনে নানাপ্রকার হিংস্র ক্ষম্ভ আছে, তাহারা
নরমাংসলোলুপ; মনুষ্য দেখিবামাত্রই সংহার করিয়া মাংস
ভোজন করে, এমন স্থলে কিপ্রকারে বাস করা যায়।
বিবেচনা করিলে এ আপত্তি যুজিযুক্ত নহে, কেন না বিষয়কাপ বনে যতপ্রকার স্থাপদ আছে, কাননে তত নাই। বন্য
পশুরাএকেকালে জীবন নাশ করিয়া কেলে, কিন্তু সংসারক্রপ
কাননে যে হিংসা ভ্রেমপ্রভৃতি কতকগুলি হিংস্ত পশু আছে,
তাহারা জীবিত রাখিয়া নানাপ্রকার ক্লেশ দেয়। যাহা হতক,
অনর্থক কাল হরণ করিয়া কোন কল নাই উপস্থিত
কার্য্যে সম্বর হউন।

জামি তথন মধ্যমের উপদেশমতেই বন গমন করিতে দখত হইরা সপরিবারে চলিতে জারম্ভ করিলাম।
ভাগ্যে জামরা তথন এক কুত্রিম কাননের অন্তরালে পজ্রাছিলাম তাইতে নিস্তার নতুবা বিলক্ষণ বিপদ ঘটিত।
নগরমধ্যে কতকগুলি বিদেশীর অতিথি রাত্তিকালৈ ছিল।
রাত্রি থাকিতে পথ চলা সুবিধা এজনা তাহারা তথন নগর
হইতে বহির্মত হয়। আমরা তাহাদিগকে দেখিতে পাইরাছিলাম না কিন্তু: ভাহারা আমারদিগেক সমুদার কর্যো

দেখিরাছিল। কলতঃ আমাদিগকে আন করে কিছে করি নাই বথন আমরা নেই উদ্যানের জনবাতে প্রজ্ঞান তথন করেক জন অখারোহী প্রামরক্ষক সেই বিশে ক্ষরত পূব দশ্ব ও কও লোক হতাহত হই রাছে, তাহার সংখ্যাকরিতে আইল। তাহারা দেই বিদেশীর লোকদিগকে দেখিরা জিজাসা করিল তোরা কে? তাহারা রাজপুর্ক্ষণিনকে দেখিরা ভরে কাতর হইয়া কহিল, মহাশার । এ অমির বিষর আমরা কিছুই জানি না। জন করেক লোক এই মাত্র অমির দিয়া পলাইয়া গেল। দোহাই মহাশার । আমরা এ বিষয়ের ছন্দাংশও অবগত নহি। আমরা প্রশ্বিক লোক।

রাজপুরুষেরা এইরূপ প্রভাবের শুনিয়া সাদ্দিহান হইল ও তৎক্ষণাৎ তাহাদিগকে বন্ধন করিল। তাহারা আপনা-দিগকে নির্দ্ধোরী জানাইবার জন্য যত প্রমাণ প্রয়োগ দিল, নগররক্ষকেরা তাহার কিছুই শুনিল না। কেবল কহিতে লাগিল, বেটারা তোরাই এ কর্মা করিয়াছিস। তোরা হয় ত রাজা বিক্রমদেনের প্রেরিত হইবি নতুরা জার কোন বিপক্ষ নূপতির রাজা হইতে আসিয়াছিস। চল তোদিগকে বিলক্ষণ শাস্তি দিব। জানিস না যে এ রাজা কীর্দ্ধিরের অধিকার। এই প্রকার তর্জ্জন গর্জ্জন করিতে করিতে তাহাদিগকে শাস্তিরক্ষকের নিকট লইয়া চলিল।

যথন এই গোলবোগ হয় তথন আমরা এক জরণা-বৈটিত গর্ত্তে পুরায়িত ছিলাম। মনুষোর স্বভাব আর বিশীবিদা রতি কি আশ্রেষ্ঠা। যে কণকাল পুর্বে অগ্নিপ্র-বেশ করিতে উদ্যত ইইয়া উপদেশ পর্বাস্থিত অগ্রাস্থ করিতে

বাশন্তিক। 1

জাতের সাধার অকণে রাজপুরুষদিগের ভবে আপ্--ক্রাপ্ত করিল। অতএব সমূদ্যের যে কথন কিবপ ক্ষাৰ্থ হয় ভাহা নিৰ্দেশ করা অতি কঠিন। যাহা क्षेत्रक त्रांकभूक्रदयता शमन कतित्व स्नामत। क्ष्रकट्वटश পना-इंटि आत्र कतिलाभ । एत हहेटल कि ठला बात । उदकारल বোধ इইতেটুলানিল যেন আমারদিনের পদস্বর প্রস্তর-जुना क्ष्म हर्देशांट्ड । जात भंतीरत रनभाज नाहे। जातात দিনকরের কিরণে পূর্ব দিগ পরিদার ইইতে আরম্ভ হইল। कि कृति, उश्रम बात क्लाम करिश रमशारम थाक। यात्र मा। সাধ্যামুসারে দৌভিতে লাগিলাম। নগর হইতে যথন উ-অরমুখে প্রায় চারি ক্রোশ পথ আইলাম তথন রৌদ্র উঠিল। সেই সময়ে এক স্থানে বদিয়া প্রাতঃক্বতা স্মাধা করিলাম। তার পর ক্রমাণত তুই দিন ভ্রমণের পর অদ্য ভাগাবশতঃ আপনার নিকট আদিয়াছি। আমাদিগের ইচ্ছা ৰে আ-পনার নিকট বাস করি। এই নিবিড় কাননে থাকিলে क्टि आमामित्रात्र अञ्चनकान शाहेत्व ना। वधातन निष्कित्व হইয়া থাকিতে পারিব।

সুমন্ত এই প্রকারে আত্মহন্তান্ত বণন করিয়া রাজাকে কহিলেন, মহাশর! আপনার যে প্রকার স্বভাব ও সদ্ধানহার তাহাতে আমার মন নিতান্ত অহঙ্কৃত হইয়া কিছু জিজাসা করিতে বাধিত হইতেছে। আপনি অন্তগ্রহ করিয়া আমার এ উদ্ধাতা মার্ক্সনা করিবেন। মহাশয়! আপনি যেমন আমাকে পরিচিত বোধ করিয়াছিলোন, আমিও তেমনি মনে করিতেছি যেম আপনাকে কোথায় দেখিয়া থাকিব। কিন্তু জানেক ভাবিয়া চিন্তিয়া দেখিলাম, কোন প্রকারেই চিনিত্রে পারিতেছি না। অনুপ্রহ করিয়া পরিচয়

দিলে পরমাপারিত হই। আর আগনার সম্বিদ্ধান্ত ক্রিয়ার নারীটা বুনি মহাশরের সহ ধর্মণী হইবেন। ক্রমণা হাধারের আর সন্দেহ কি, উহঁরে শরীরগত লক্ষণই ভাষ্টার শরীরগত লক্ষণই ভাষ্টার শরীরগত লক্ষণই ভাষ্টার শরীরগত লক্ষণই ভাষ্টার শরীরগত লক্ষণ বি করিয়া লক্ষ্যার অবনতমূখী হইরা রহিলেন। রাজ্ঞীর মনোগত ভাব বুঝিতে পারিরা মন্ত্রীও কিঞ্ছিৎ লাক্ষত হইলেন। কেন না ভদ্রের নিকট এতক্রপ প্রশ্ন করা উপযুক্ত নহে।

রাজ। কহিলেন, মহাশয়! যথার্থ জাজ্ঞা করিয়াছেন, উনি
জামার সহধর্মিণী। নদ্রী কহিলেন, আপনাদিগের খেরূপ
স্কুমার আকার দেখিতেছি, তাহাতে বোধ হইতেছৈ, আপনারা কোন ধনীর জথবা কোন রাজর্ষির কুলে অবতীর্ণ
হইয়া থাকিবেন। আপনি তাদৃশ বংশে জন্ম গ্রহণ করিয়া
যে একাকী নাদ্রীসহ এই হিংস্র জন্তপরিষেবিত নিবিভ বনে
বাস করিতেছেন, ইহার কোন জ্বন্তুত কারণ থাকিবে।
অতএব অনুগ্রহ করিয়া আত্মহতান্ত বর্ণন করুন।

রাজারা স্বরং আত্মপরিচর দিতে লক্ষিত হন। বিক্রমসেন যদিও রাজ্য পরিত্যাপ করিয়া বনে আগমন করিয়াছেন, কিন্তু তিনি নূপতির স্বভাব ত্যাগ করিতে পারেন
নাই, এক্ষণে পরিচয় দিতে চিন্তা করিতে লাগিলেন।
এক বার ভাবেন, সমুদার বলি না কেন, আর বার বিবেচন
করেন কি বলিয়াই বা পরিচয় দিব। রাজা বলিয়া পরিচয়
দিতে লক্ষা বোধ হইতেছে। অথবা কৌশল করিয়া এক
কথার পরিবর্তে অন্য কোন বিময় উপস্থিত করিয়া দেই।
এই প্রকার বিবেচনা করিয়া কহিলেন, মহাশয়! আপনি
যাহা জন্মান করিয়াছেন, তাহা নিতান্ত জমুলক নছে।

বিশ্ব এত বাব কি বিআদ কর্ম। কানেই কান্ত্রীটো । এক ছানে বাকিতে হইকো আপনিও আ আই কাল জানিবেন এবং জামিও আপনার তাবৎ র্ডান্ড সার্থাত হইব। রাজার এই বাকা শুনিয়া রাজ্ঞী কহিলেন, মহারাজ। হানি কি ইনি ত আমার্রিনিগের সেই প্রম্মিত ইহার নিকট পরিচয় দেওয়ায় দোষ নাই। বিশেষতঃ আ-পনি যদি পরিচয় না দেন তবে ইনি মুর্গেণ্ড হইবেন।

मञ्जी ताञ्जीत अरे नकन बठन धावन कतिता मटनाटयान-পুর্বক দৃতি করত রাজাকে চিনিতে পারিলেন এবং তাহার নরন্যুগলে আনন্দাঞ নিপতিত হইতে লাগিল। তৎক্ষণাৎ পূর্ব প্রভুৱ পদতলে পতিত হইলেন। রাজা त्रामनवमरन वाक अभावभन्यक जाहारक जूनिया जानि-क्रन कतिरतन । आनत्म क्षेर्याथ इउहाटि क्रनकान वाका-লাপ না করিতে পারিয়া উভয়েই উভয়ের মুখর্মগুল নি-तीकन क्रित्र। त्रिस्टिन, किस्थकन विवाह स्थास श्रम अन वष्टत करिटलन, महाताक ! हेश कात मतन हिल ना त्यं शूनतात जाशनात ও ताजमहिबीत हत्व मर्मन कृतिहा क्र-र्जार्थ रहेव। आर्थना कति, जानमात्र निक् শিট বাবহার করিয়াছি ও অবক্তবা বাকা কৰিয়াছি; তাহা মার্ক্কনা করুন। রাজা ক্রিলেন, তুসি এমন কি वावशांत कतित्रांह त्य, जाशांट कीमि सके इहेव। बकात य शतम करूनानिधान विश्वविधानकाही विद्यश्वत आया-मिशक वस्कारणत विराह्दमत श्रुत मिलन कतिरलन, छाराक অদ্ধাপুর্বক সারণ কর, এই প্রকারে নানা কথোপকখন করিতে লাগিলেন। জ্রমে দিবাবসান ইইলা

ি সাধ্যা দেবী কিন্দিণানিসৰূপ তালমূভ ধারণ করিয়া

अमी बारत राम्यार्थ जानमन कतिरसम् विमणे वि नात्र किरमत পति अस्पत भत व्यमविकाल केक निश्वास्त्र বিদ্যা কণকাল বিভাম ও সারংসন্ধা সমাপ্র করিয়া निक्कांत्र। हात्र। मह द्वान अक निक्ठ जारम नतम कतिरह रशलन। कमलिमी त्रज्ञभतात्रन कुज्ञनरगत्र क्षां राम মান করিয়া দল্কণ বসনাঞ্লে মুখ্যগুল আচ্ছাদ্ম করি-লেন। তাহাতে যেন অমরেরা তাহার মান ভঞ্জনজন্য গুণ গুণ ধনিৰূপ তোষামোদ করিতে লাগিল। কমলিনী राम छोड़ारङ असुछ मा इहेंग्रा मन्म मन्म भन्नवर कर्ड्क আন্দোলিত হইয়া এই ভাব ব্যক্ত করিলেন। যেন শির-শালনপুর্বক অলিকুলের তাবৎ অমুনর অপ্রাহ্ন করিতে-, ছেন। সধুকরের। যেন ভাহাতেই নিরাশ হইয়া কল্পার রবে রোদন কবিতে করিতে আপন আপন আশ্রমে গমন ক-तिन । **উড्ডीन दिङ्करम**ता निधिनिक् स्टेंट निक निक नीट्ड প্রতাবর্ত্তন করিতে লাগিল। ক্রমে রাত্রি এক প্রাহর ইইল। রাজা মন্ত্রীপ্রভৃতির সহিত বং কিঞ্চিৎ আহার করিরা (मह इक्कटकां छेरत मकरल मिलिया भयमशूसक निक्का शासन। প্রভাতে গাত্রেপ্রান করিরা অবশ্ব কর্ত্তব্য কর্ম সমাধানাত্তে সকলেই এক তরুতলে উপবেশন করিলেন। রাজা ক-हिट्टान, आंत्रता वर्थन क्रेस्टरत अपूर्वार अदनक्खनि भरि-বার হইলাম। অতএর যাহাতে আমাদের কোন প্রকার ক্লেশ না হয় ভাষার উপায় করা উপযুক্ত। সর্বাত্রে বাস-স্থান 👂 আহাৰ্বের আবশ্রক স্বত্রব এই ছুই বিষয়ের क्रिकी श्रथरमे इंग्या वाडिक। बाकाब क्या खनिया मजीव জাতুত্ব হুই তিন ধানী কুটার প্রস্তুত করিতে চেটা করি-শেন কিছু তাহাতে কোন কল দৰ্শিল না, কেন না তাহা-

ক্ষিত্র ক্ষিত্র কোন প্রকার আর ছিল না। স্কার্ত্রের প্রক্রের অক্ষেত্র হয়। বাহা হউক, উাহারা উপায়ান্তর-ক্ষিত্র বাহার অবস্থাত ত শুহারির চেন্টা করিতে লাগি-ক্ষিত্র ভাষাত স্বিধানত পাওরা গেল না। স্তরাং সকলে মিলিয়া এক ঘরে বাস করিতে হইল।

বাজিদিগের যখন যে বিষয়ে অপ্রভুক উপস্থিত হয়, জগদীল বাজিদিগের যখন যে বিষয়ে অপ্রভুক উপস্থিত হয়, জগদীন দীন্দর তখন সেই ছংখের দশা হইতে তাঁহাদিগকে উদ্ধার করিয়া থাকেন। রাজমহিনী প্রস্বকালের ক্লেশ্ভরে লো-কালমে যাইতে নিভান্ত বাগ্র হইয়াছিলেন, কয়ণাকর বিশেষর তাহার সেই ছঃখ দুর করিবার জনাই মন্ত্রীকে সপরিবারে যেন তথায় আনিয়া দিলেন।

-

ठकुर्च मर्ग।

রাজ্ঞী অন্তঃসত্তা ছিলেন, তিনি বথাকালে তুইটা ধনজ সন্তান প্রসব করিয়া অনন্তর প্রদববেদনায় অত্যন্ত কাতর ইইলেন। মন্ত্রীপরিবারেরা অনেক শুক্রাবা করাতে তান্থার সকল ক্লেশ দূর হইল। অনন্তর অভিনব জাত কুমার্দ্রিকে দেখিয়া তাহার মনে যুগপৎ হর্ষ ও বিধাদের আনিবিধি হইল। তথন অঞ্চপুর্ণ লোচনে বালকযুগলকে সমোধন করিয়া কহিলেন, হা হত্তরাগা জীব! তোমরা কি পাপে আমার গতে আলিয়া লম্ম প্রহণ করিলে। আর কি সান ছিল না। হা বিধাতঃ কত রাজারা সন্তানাভাবে নিরন্তর খেদ করিতেছেন। কত লোক সন্তানকামনার কত্ত্রার পুর্ণা কর্মের অনুষ্ঠান করিতেছে। অপুত্রতালনা

ক্রত সমসক্ষম ব্যক্তিগণের ক্রাপ্রেলিক প্রেরিনেক প্রির অর্থরালিপরের জোগে বাইতেরে। জুনি কার্যারিতের বাক্তিক করিয়া এই বনবাসিনী ভূঃবিনীকে প্রশ্নে আমার করিবে। তোমার ইচ্ছা অনিকাচনীয়।

शक्ति शतिषात । जना तांकपूज कव शहर कतिरतिन, काथांत्र नगरत मरकार भव क्षेट्रेरन, अमाजावर्शना नाना जारमाम कतिर्द, शार्थनाधिक धंम आख गाठकमिरशत जानी-स्ताम । क्वानाइटन त्राकशूरी भूर्ग इट्टर । आत काथांक आमि डाहानिशतक वनमत्था अनव कतिया नवननीत्व शृ-थिरीटक উচ্চলিত করিতেছি। आहा ! এই अक्रवान् वालक-धन यथन कृथात जानात উटेक्ट जटत द्यामन कतिरव जथन কি খাইতে দিব। শত শত কামধেরুবিনিন্দিত সুর্জি-मक्न याशामिर्शत वाशर्या हुअबना भागिर १३७ । जारा রাই এক্ষণে অনশনে প্রাণ ত্যাগ করিবে। হা ছুরদৃষ্ট! ছুরিছ সকল কর্মের মূল। আমি ত জ্ঞানকৃত এমন কোন মহা পाপ कति नाहे साहाट**७ ७७ क्लिंग शाहेट** हते। अवता ক্ষান্তরীণ ভূরিতের ও ভোগ ইইবেণ হে বিধাতঃ ৷ সামার मृज़ा कर, जामात जात कनकाल वीहिटल माथ नाहे। धरे প্রকার বিশাপ করিতে করিতে সহসা মৃচ্ছিত হইয়া ধরা-उत्त পজ्লिम। मञ्जिमहिना काहात मूर्य नीएन जन मान s कलिक बिनीमन पाता तांगू तीकन कतार**ः क**नकान विनास जाहात मध्या दहेन।

এথানে রাজমহিনী, পুত্রমর প্রস্ব করিয়াছেন, শুনিরা নম্মী সমভিব্যাহারে দেখিতে আইলেন। মন্ত্রিত্রী স্তিকা-যুহের মার উদ্যাটন করিবামাত্র রাজা দেখিলেন, বালক-যুগল গৃহ উদ্ধান, করিয়া রহিরাছে, কি বা স্থানর মুখ, কি A TAKEN I

क्रिकेट गुनाचे कि स एकाक विकि मक्षा मुख्यमञ् अन्तर्भक्षण्याके त्यस्त्रित क्षेत्रम् वाहित्रक प्रदेश को । कर कार आर्थन एक कर दर्भ एत । उन्तक्ष अक्तिर तुमान्यामा स प्रकार शहर कहिए। प्रजन्मभूष प्रमुख्य कविएक हा-विद्यम्। अप्रकाराव स्रातात स्रवस्था मान्त कतिया निर्दाक काजत रहेरान । कथन डें। राज महमसूत रहेरा पत मत अ-व्यस्ताता निर्माण स्ट्रेटिक नामिन। मञ्जी ताकात व्यतान्त्र छान् नुकारत भाविता क्षित्यन, महात्राक । आहा ! कि व्यभूका नानक कत्रियादम्। यनि व्यामानित्त्रंत्र त्रांकव वाकिङ छद्द णांकि कि भागत्मस्य मिन। ठाई विनिट्टिस, विश्वां मक्न लाकटक ममान छत्थ छथी करत्न मा। स्थ अवर प्रश्न अक সময়ে সমান ভোগ করে। আক্রেয়ের বিষয় এই, সুখের কোঁগ অধিক কল হউলেও অস্প বোধ হয় আর ছংখ ভোগ ज्ला काल कतिरमङ अधिक कान खान रहेता शारक। महा-রাজ। ইহা ভাবিয়া ভিরচিত হওুয়া উচিত যে, এই সংসারে क्ट्र नितर्राष्ट्रत सूची नत् । स्वात अवन मसूचा अक्ट्र नाह धिनि नर्वाक्षकादत कृश्यो । अविषय नर्वाषा (मना गांत्र, या-হার এক প্রকার ছংগ জাছে তাহার স্বরণ্ড আছে। আর যাহার এক বিষয়ে হথ আছে তাহার অপর विवरत प्रथ्य तस्तिहा अञ्चर स्कृतिक मूर्य प्रथ्य पूर्वन পৎ अधिकांत कतिया थाटक। बाह्यका विद्यक्रमा मा कतिया । कटरन त्य, जानता सूथी ७ जानता कुरेशी, तम तकरका छीहा त्वत्र अवस्तातः। योशाता स्टब्स आस्तानिक । इत्य क्रिके स हम, काहाताई कामी । मध्यिक मार्गमादक वासका कथा विनवात बारतामन कि छाडा धारन करून। कालामात्र राभन



मक्त विषय विषे देशेश मराष्ट्रके हैं। दिस्त विधारी चानि वह समुगात क्यांक श्रक्ष कृष थागान कडिएकम । यमि वटनन विस्तक गामिनाक कि बाक्षात कविएड निया रामम विकास महिला একটা তুঃৰ উপস্থিত হইমাছিল, ভত্ৰপ বালকৰৰ ইঞ রাতেও অপর তথে উপস্থিত চইল। জনাহাতে সম্মুক্ত প্রাণ ভাগি করিবে ভাছাই দেখিতে হইবে। এই সকল ভাষী ভাষনা ভাষিতে গেলে পুত্ৰ স্বিরাছে বলিয়া কি-किंद माज्य सूर्व द्वाध इह मा। किंद्ध महाताम ! अक्षकात विद्युष्टमः कंश्रमङ कंत्रिद्यम माः; कात्र्य मिनि कीद्यत रुखि করেন, তিনি দেই জীব সমাইবার প্রাক্কালে তাহার জা-হারের হটি করিয়া রাখেন। জামি ইহার প্রতিপালক आमा जिन्न हेरात कथनहै हत्व मां, वाहाता अञ्चलत मत्म করেন, ভাঁছারা অতি নিক্ষোধ। যমন ধনী কোকেরা এক জন ভারবাহক খারা তব্য বহন করান, তেমনি বিধা-তাও এক জনের মন্তকে দিল্লা বহন করাইয়। জন্যকে প্রতি-পালন করিয়া থাকেন। তিনি ভিন্ন কেইই কাহার পাত। नार । जाहात जिस्र कहरे कोहात्र शालिक नार । अठ वत (महे मासियान असम शूक्षहे मकल विषद्यत मूल। जिन এই অথণ্ড ব্রহ্মাও রচনা করিয়া কিয়ৎকাল ক্রীড়া করি-टिह्म, थिला भून इहेलहे मम्नात हूर्न कतिया किलियन লোকের ভাঁহার কুহক না বুকিতে পারিয়া আমি এবং आगास कर कतिया विश्वत तक कृतिए निष्कारी नमाथान कतिरहरू। योगास अक्योत्र अक (बर्ल्स स्था यात्र क्लकोल পরেই তিনি গেই বঁপ পরিত্যাগপূর্বক জরায়ুবপ রঞ্ क्षिट अविक हरेश करा क्ष भारत करूठ भूमताह तम-

विकार करतने भारत नामाध्यकात शोठकशक विकालकरान्त्रः मरनारम् कतिहा व्यापाद रमहे शास्त्रक चना चाकात श्रीकात करतम । चलकर विकिथ परिक पार्व कि विनित्र। बनमेग्रा यथन (य बार पार बोरबर्न जाहाटा असुके थाका विटाइव नकन । स्केर बीता करितादकन, क्रथ- बन्दर इश्य ब्रद्धक नगान शतिवर्ष्टिक स्ट्रेट्टिह । अञ्चद सूच ७ कृ:बन्ने न नमता चाटक म । क्रिका मक्त अक्षात में ब्रेके बाकात स्थ कात विश्रतीरक ष्ठः व रत, यहे स्थ प्रत्यंत्र सक्ता स्तित्ता वक्ता আপনি উপস্থিত বিষয়ে জামোদ প্রকাশ করুন। গ্রত विव्दात अञ्चरमाञ्चात्र द्वाम कत नारे अवर जानामी कार्टन एवं जाननात कि जदका स्ट्रेटन छात्राहरे बादक স্থির বলিতে পারে। হয় ত পুনর্কার পুর্বের ন্যায় ঐখর্য্য-भानी ३ इहेर्ड शारतन। धरे बना विस्त्रता करित्राह्मन, অতীত এবং ভবিষ্যতের চিম্ভায় বর্ত্তমান স্থাবে বিরত ইওয়া উচিত নছে।

রাজা মন্ত্রীর এই সকল হিতরার্ভ উপদেশবাকা অবপ্র করিয়া কহিলেন, মুক্ত ! যাহা ধাহা বালিলে সকলই সভা। আমি তোমার বাকা শুনিয়া চেতন হইলাম। বিশেষতঃ এ সকল ছুর্ভাবনার আবশুক কি। যাহার ভাবনা তিনিই ভাবিতেহেন। এই প্রকার বলিতে বলিতে উভয়ে তথা হইতে যাইয়া এক বটরুজমূলে উপবেশনপূর্বকে পুশুক পাঠ করিতে লাগিলেন। ক্রমে বেলা ছুই প্রহর ইয়া উঠিল। মন্ত্রীর আত্ত্রর বনে কুল লাইরণ ক্রিতে গিয়া-ছিলেন। নধায়ে কাল অভীত ছুইল তথাপি ভাষারা কল শইয়া প্রভাগেত হইলেন না। রাজা ও মন্ত্রী কনেক ক্ষণ

বাসভিন্ত

शर्ये छ छोराटेन्द्र व्यानियां संभाभा हिटलम, किस छार्रापिटभन्न जानियात रक लम मा। उसम मञ्जी छारामिरशत विश्रम त्राकाटक कहिरणन, महाताक। छाहाता करमद বানিতে গিয়াছে এখনও বানিতেছে না কেন। 'বৈধি कति, छाशानिटभत नष्टक कान देववष्टेना इहेन्ना शाकित्व। নতুবা এত বিলঁমের কারণ কি। রাজ্যা কহিলেন, তাই ত এত-বিলয় হইতেছে কেন। চল আমন। খানিক ছুর ষাইয়া मिश्री पानि। धारे विनया प्रहे कम किश्नि अमन क्रिया জনতিবুরে দেখেন মন্ত্রীর মধ্যম ভ্রাত। কলভাজন পাত্র মতকে ধারণ করিয়া কুটারাভিমুখে দৌড়িতেছে। মন্ত্রী त्रांचाटक मदश्यम कृतिहा कृष्टिलम, महाहास । के प्रथम আমার মধ্যম লাভা ক্রতবেণে আসিতেছে বোধ হয়, कमिटर्छत कोन विश्रम इहेब्रा शंकित्व। छाहाता धहेक्श নানা তর্ক বিতর্ক করিতেছেন, এমত সময়ে বলভূৎ ভাঁহা-দিনের সম্মুধে ভাসিরা করের পাত্র রাখিরা কহিলেন, আপনারা কণকাল এখানে অবস্থিতি কর্মন, আমি वनाहरूक नहेन्ना चानिए हि। धहे वनिन्ना चिरित्त वत्न প্রবেশ করিলেন। মন্ত্রী রাজাকে কহিলেন, যাহা হউক, ইহারাত জীবিত আছে। আমার বোধ হইতেছে, কোন व्यकुछ श्रवेन। बणिया शाकित्व। जान त्मथा गाउँक। ताका কহিলেন, আমায়ও তাহাই বোধ ংইতেছে, কিন্তু কোন ৰিপদ্পাত হয় নাই। তাহা হইলে বলড্ৎ পুনরায় धकाकी यारेज मा। धरेकण कथा वार्डा करिएं करिएज **त्मर्थन, कि**ष्मि॰ मृदत्र-बनाष्ट् । वनाष्ट्क नजाभारम अक्षी हानी वन्तवश्रकः गिनिन्ना कामिएएहम। हानीत शम्हार

वामाञ्चल ।

्षेद्र अस्तित्व अस्तित्व वानित्वद्य। े भागा मिटन याह्नात टक्का क्रिक्टर, रिश्ता में वे बारान्य गठा जाकरें। क्रिया कुछ है कि कांत्र कतिएडए । डीराजा अरे अकारत तिहै वर्गमा होती सरेता करें एक जाजरम उनिहर रहेलमा हाना ७ मही जातक मात्रारम करनत शाम वरन करिया गरेका । जाउमा तिहे हानीत्क वांचिता अक सम्बं उत्तर तिब होतात्र विकामार्थ उनविक स्वसार्क मूनीच्य असराहत मन मन मकादत जन्म कन्मर्या तंड-ক্লম হইলেন। রাজা তাহাদিগের নিকট যাইয়া কহিলেন, दिला अधिक रहेबाहि, नकत्वरे कृथिउ, आहेन किथिए कारोत कति। वम्र किर्मन, काशनात निता का আহার করুন আমরা পশাং বাইতেছি। রাজা কহিলেন, ना छ। इहेट भारत ना आहेम मकत्म मिनिवाह किस्नि আহার করা যাউক। ইহা বলিয়া তাহাদিগের হস্ত ধারণ-পুর্বক লইয়া গিয়া জাহার জারতে বসিলেন। যথন স্কর্মের व्यक्तामन इरेबाट उथन ताजा वनारकत्क विकानित्वन, ভ্রাতঃ ! এই ছাগ্নীকে কিপ্রকারে বারণ করিলে ?

वनाहरू कहिएनन, महाद्राम ! खर्न कहन, जामता जा-भनात यमक मुद्धान हरेग्नांट हिलिया रहन कल जानिए यहिएकिनाम। शिष्मद्रधा मधाम कहिएनन, बनाहरू ! एथ महातात्वत कि निश्म यथन कशान मन्न हम उपन मकन क्षनात्वर कृत्य। मद्यान हरून जाहां जातात कृत्यी यमि धक्या हरूज जाहा हरून कान महा त्वना ताव्यक्ति इस्म बाहिएक शातिक। हरू महान यमि दिन्यन ताव्यक्ति वीत समा हर्षत देशव निस्त करत, जाहा हरूना जाना हिन

वामिखिका।

মধ্যে তাহাতে রাজী অপা দিনের মধ্যেই নরগর্ভ পাতিহ ইবে। তাহাতে রাজী অপা দিনের মধ্যেই নরগর্ভ পাতিহ হইবেন। এক্ষণে বুলিলাম যে, যে সন্তান ক্ষরিত্র কোর অন্তত ঘটনা হয়, ত্রীলোকেরা সেই সন্তানকে কহিয়া পাকে এ কথনই সন্তান নয় কোন কলে কার সক্ষে কি শক্তা হিল সেই সন্তান নয় কোন কলে কার সক্ষে কারাছে। এসকল কথা নিতান্ত অমূলক নহে। ভ্রাতঃ! ইহারা কপনই মানুষ নহে অবস্থাই রাক্ষস হইবে। কেবল পুত্ররূপ ধারণ করত রাজীকে সংহার করিতে আসিয়াছে। নতুবা এই অবস্থায় যমক সন্তান জন্মিবে কেন। বুরিতে পারি-তেছ না।

আদি কহিলাম, আপনি যাহ। আত্তে করিতেছেন অবস্থার সহিত তুলনা করিতে গেলে তাহাই বোধ হয় বটে; কিন্তু আমরা ঘাহা বলি আর কই রাজার সতা সতাই মহা বিপদ্ উপস্থিত। এই প্রকার কথোপকথন করিতে করিতে করিলতে বাইরা নানাপ্রকার ফল ক্রমন করিলাম। তার পর প্রত্যাবর্ত্তনকালীন অনতিদুরে দেখিলাম, ক্তকগুলি ছাগ চরিতেছে! তাহার মধ্যে মধ্যে কয়েকটা বৎসপ্ত ছিল। ইনি অনামনক হইয়া আমার সহিত কথা বার্ত্তা কহিতে আদিতেছিলেন। আমি কহিলাম, দাদা! ঐ দেখুন কতকগুলি আরণ্য জল চরিতেছে। যোগে প্রকারেরা ইংর ছাল পান করিয়া বার্ত্তিক বিলি পারা বারিতে পারেন। অতএব বলুন চেন্তা করিয়া দেখা যাতক বদি ধরিতে পারা যার। উভত্যে এই প্রকার পরামর্শ করিয়া সেই ঝানে কলের পার রাখিয়া গে দিগে পাল চরিতেছিল সেই দিগে চলিলাম। আমরা

বাসন্তিক। ।

নিকার হালে ব্যক্তি ছাগল প্রাইতে আরম্ভ করিল, ভাষরার প্রকাশ প্রকাশ দৌড়িলাম। ছাগপাল কিঞ্চিৎ-ভাষ দলবছ হইয়া প্রাইতেছিল বটে কিন্ত আমরা নিকার্বতী হইলে ভাহারা ছিন ভিন্ন হইয়া প্রাইতে

শেষে আমরা একটা বৃহৎ ছাগীকে লক্ষ করিরা তৎপশাৎ धारमान इहेलाम। हाती आगडरम अक मूख जतरना ध-विके इहेल। यपि कांद्र किक्षिश्काल ठाइांटक ना प्रथा गाइँ उत्व कथनई भन्ना गाइँउ ना। अग्रुनाय धाम निन्दन इहेंछ। আমর ঐ कूछ अत्रा প্রবেশপূর্বক দেখি কি কতকগুলি লভায় তাহার শৃঞ্জর বন্ধ হইরাছে। ওটা যত ছাড়াইবার চেটা পাইতেছে ততই ঐ লতা দ্বারা দৃড়কপে বন্ধ হইতেছে। তথন আমরা নিকটে গিরা 'এককালে ছই ভাই ছাগীর গলদেশ ধরিলাম। কিন্তু সে বল্পুর্বক এমন शक लम्क मित्राष्ट्रिल या, जामामिनरक एक ममूनात वर्छ।-বন্ধন ছিল্ল কবিয়া প্রায় দশ পাদ ভুমি দূরে গিলা পাড়িয়া-ছিল। তথাপি আমরা পরিত্যাগ করিলাম না দেখিয়। আরও কয়েক বার বল প্রকাশ করিয়াছিল বটে, কিন্তু পুর্বের ন্যার নহে। লাফা লাফি করিলে আর কতক্ষণ বন্ধ थात्क, कृत्म निःमञ्जि इहेग्रा शिष्ट्रत । उथन आमि धरिया থাকিলাম, দাদা কতকগুলি লতা আনিয়া একগাছ রজ্জ প্রস্ত করিয়া তদ্ধারা বন্ধনপুর্বক টানিতে লাগিলেন। ছাঁগীকে বাধিবার সময় তাহার বৎসের কথা আমাদিণের মনে ছিল না। যখন টানিয়া আনা যায় তথন দেখি বংসটা ভাকিতে ভাকিতে আদিতেছে, ছাগী ছই চারি পদ সন্মধে যার জাবার তৎসম পথ পশাৎ ভাগে বলপুর্বক গমন করে। এই প্রকারে সুমন্ত পথ আদিতে কর্টারে করে। অধিক বেলা হই রা গেল। ইহার পর কে স্বন্ধ মাইনি ইইবাছে, তাহা আর বলিবার আবশুক কি তাহা স্পাসনার প্রভাকেই দেখিরাছেন। যাহা হউক, সেই ছান্তি ছয়ে। অনেক উপকার ইইবে। একণে রাজনন্দনন্তরের ইাচিকার পথ হইল।

রাজা কহিলেম, বলভূৎ! এই উপকারে আমি তো-मांग्रितंत्र निकर्षे ठित्रकीं तिश्चाम, व अन हहेट कान কালেই মুক্ত হইতে পারিব না। ফলতঃ আমি অত্যন্ত वाधि इहेलाम। ताला अहेन्य अपनेक मिकीलाय कति-তেছেন, उथन मञ्जी कहिलान, महाताक ! प्यदिक विनवात প্রয়েজন নাই। আমি ত পুর্বেই বলিয়াছি থে, বিনি শীবের স্থাটি করেন, তিনি তাহার আহারের চেন্টাও করি-তেছেন। ছাগীকে যিনি ধরিবার তিনিই ধরিরাছেন, ইখার। क्तियल डेलंकमात्र। तार श्रुव श्रुव हे हेर्नतिनतात्र मस्रदक मित्रा नानक बरम् त्र आहारी शाठा हमारहन । अशवा আমরা সপরিবারে মহারাজের দাস দাসের ছারা প্রভুকার্য্য সম্পাদিত হুইয়াছে, তাহাতে চিরবাধিত বা উপকৃত হুই-ংৰার বিষয় কি। প্রভুকার্যন সম্পদান করাই ভূত্যের স্লাঘার दिवस । अक्द्रत्व প্রতাবায় আছে। যে ভূতোরা প্রভুকার্য্য क्उंवा कर्म ज्ञान करत ठाहांतार यथार्थ मामशमवाहा। आंत বে প্রভু ভৃত্যের প্রতি প্রভুদ্ধ প্রকাশ না করেন, তিনিই প্রভুনানের যথার্থ অধিকারী। অন্যথায় অত্যন্ত বিশ্বলা ্ঘটে। দাৰও প্রভুকার্য্যে মনঃসংযোগ ও প্রভুর প্রতি ভক্তি করে না। প্রভুও ভূতোর প্রতি শ্লেহ বা আদ্ধা করেন না। অত এব প্রভূকে সর্বতোভাবে সন্তুষ্ট রাখাই ভূত্যের কার্য।

विक्रिका निर्देश नर्दना मधानमात कताहे शकुत

कारी करिएनन, ट्यांमात्रिक्ट त्यम यंश्वाव, उपन्याती तिकार वर्षे। किस उक्कना अधिक श्रमश्ना जायन इट्रेड भौति भी। किन मा समन करनत विश्वका ७ व्यक्ति जेवला ষভাবসিদ্ধ গুণ। তেমনি সাধুর ন্মু প্রকৃতি ও ছুক্টের উদ্ধৃত স্তাব হইবেই হইবে। কথন তাহার জনাথা ইয় মা। সভাব-নিদ্ধ যাহার যে গুণ ভাহাতে প্রশংস। নাই বরং ব্যক্তিক্রম रहेटनहें स्मार्थ चारहं। यह श्वकाद कथा नार्खा कहिएक कहिएक मकरन शहम सूर्य आधात कतिस्नित्। क्लिमनारम वनज्द कडक्छनि सूटन मन्त्र हातीत्क शाहरू नितन सं ভয়ে কিছুই খাইল না। এই প্রকারে ছুই এক দিন কিছু না था अग्राट जिथिक क्यूपा इंडेम अन्य नर्सना प्रमुखा दनिश्ट দেখিতে এক প্রকার ভয়ও ভাঙ্গিয়। আসিল। তথন খা-हैट जातु कतिल। किছू फिटनत मद्या करम करम रशः-षिक इहेता उठिल। उथन वक्षन भावन कविता जिटक्छ ইতস্তঃ বিচরণপুর্বাক যথাকালে আবার আশ্রমে উপস্থিত **२हें छ। এই अकादत ८मर्ट हाशीत छूटक नृशानमन व**रप्रत জীবিকা নিৰ্বাহ হইতে লাগিল। যেমন শুক্ল প্ৰেদ্ধ এশ-ধরের কলার সহিত জ্যোৎস্নার বৃদ্ধি হইতে থাকে। তেমনি नुश्रमस्मानिकातं । किम किम क्षीरतंत्र अव्य (भोन्द्र्य) तृष्टि **२** है रें ज्ञानिक। कर्म कर्म कानू हेन त्वत मगर छेन क्रिक हरेल हरे जारे जा भन्छा हरेंगा हिलाल कि सून्यत भाषा पास जार जार कर्मक है स्निट्ड शिडा माडा-প্রভৃতিকে আহ্বান করিয়া আহুতদিগকে অপার আনক-मार्शदा मिमध क्रिएंड लांशिएलम्। ताका द्राप्रे भूरकत माम

विषयक क किन्छित नाम विविध्वती हा बिर्म । केने धर्म पूर्वक काब्लान कतित्व हुई छोई नाहित्छ ।

अपिरंग मजिजारी। गर्जवजी हिस्सन, ममस्यास की हात अकनि शतम सुन्हती कना। क्षत्रित। मञ्जी के कनाति नाम हेन्छ्रमञी तांचित्नन। वनज् ६ वनाहक मर्या मर्या वान याहेश स्र्विकन लामविभिक्षे छान ६ छानी ब्रिया আনিতেন। এক্ষণে মন্ত্রিকন্যার আহারজন্য কোন ক্লেশ इंहेल मा। এমন কি একণে ছাগছজে সমত পরিবাবের আহার চলিতে লাগিল। মন্ত্রীর ভগিনীরা অত্যন্ত গুণ-ৰতী ছিলেন। উঁহোৱা ঐ সমস্ত ছাগছুদ্দ ছারা তক্র, ক্ষীর, নবনীতপ্রভৃতি উপাদের খাদ্য সামগ্রী প্রস্তুত করিতে लाशित्वन । এই সময়ে রাজার কুটার মেবপালকের উটজ-তুল্য হইল। রাজপুত্রদর ও সন্ত্রীর পুত্র কন্যা ও ভাগি-নেরসকলের শিক্ষার কাল উপস্থিত ইওয়াতে রাজা ও मञ्जी राष्ट्रशृद्धक जाशामिशस्क मिका मिरा लाशितन । वल-ভূৎ ও বলাহক সমীপস্থ লোকালয়ে যাইয়া ছাগ বিক্রয়ের बाता वर्ष मः अस्पृद्धक क्षारमां करना भागधी ক্রম্ করিয়া আনিতেন এক্ষণে ছাগবিক্রম্বপ বাণিজ্যা-ব্লয়নে ধনসংগ্ৰহ ও আবশাক্ষত জ্বা প্ৰাপ্ত হওয়াতে इंश्रीता वरन वात्र कविद्यां स्थाइंख शृहत्यत नागि इहें हो উঠিলেন। आপনারা যথেষ্ট পরিবার ছিলেন, সকলে मिलिया यह एउ शृहे आधारमत कार्य। नमूनात सुगस्करण সম্পন্ন করিয়া তুলিতেন। রাজনদ্দনেরা ক্রমে ক্রমে শিল্প, माहिला, मर्मन ও जनामा विमान विलाम वृद्धभन रहेना তিঠিকেন। এতভিন্ন উত্তমে। শুস বিষয়সকল রিবন। করিতে

ইটারা বনে বাস করিরাও পরম স্থাপে কাল ফেপণ করিতে লাগিলেন। বালকেরা ক্রীড়া করিতে করিতে নানা স্থান প্রথণ করিতেন ক্রিক্থন বা উন্নত পর্বত শিখরে কোন সময়ে উপত্যকাভূমিতে ঘাইয়া বেড়াইতেন। এক দিবস রাজী শিশুসকলকে কহিলেন, বাছারা! তোমরা যে, কাননে গমন কর, তাহাতে জামার মন সর্বদা ব্যাকুল থাকে। তোমরা ছেলে মানুষ, জান না, বনমধ্যে জনেক হিংস্ত জন্ত আছে, তাহারা তোমাদিগকে দেখিলেই খাইয়া কেলিবে জার বনে যে সকল বড় বড় গাছ দেখিয়াছ, তাহাতে ভূত প্রেত থাকে। তাহারা বড় তুরস্তা তাহারা ভন্ন দেখাইয় মানুষ মারিয়া কেলে। সারধান, জার কথন বনে যাইশ না। যদি খেলা করিতে ইচ্ছা হম তবে ঘরে বসিয়া খেলাই খানে বাও জার জামি খানার কথা না শুনিয়া, কিরে কোন খানে বাও জার জামি খানিতে পাই, তবে বিলক্ষণ, শানি পাইবে।

রাজী যত কথা কহিলেন, বালকেরা সমুদার শুনির হাস্তা করিয়া নুতা কবিলে স্থানি শহর্ষহর্মদ গোপনভাবে নান। স্থান জন্দ করিয়া কাইছিল প্রত্ত রাজমহিবী টের পান এই ভরে বদে জমদ জারু বে নক্ষ আকর্ষ্য বিষয় জবলোকন করেন, তাহা প্রার্থ কাছারও নিকট বলেন না।

करम वालक वालिकीया योवनमीमात्र छेजीर्न इहेटलम् 🎣 शक निम मही कुशाइशनरक डाकिश कहिरलने आमि তোমাদিগকে किছू उर्श्वाम मिव, মনোযোগ मूर्वक अवन कत्। त्वामता मकत्वर्षे अक मूक्त क्वका आश स्ट्रेबाइ। অভথব সকল অবস্থাতেই গুড় খনের নিকট শিক্তি হইতে इस्र। (यमन वालककारत विमा निका कहा आवश्यक एउ-मनि (शौरनकाटन नीजिनिका अन्ध्र कर्ड्रवा। রুদ্ধ হইলে যে, কিছু শিখিতে হয় না এখন নতে, ঐ কালেও জ্ঞানাভ্যাস করিতে হয়। তে মাদিগের বাল্যাবস্থার শিক্ষা পরিপাটিরতে নিজ্পন হটয়াছে। একণে যৌব্নাবস্থায় যাহা কর্ত্তব্য ভাষা শ্রবণ কর। এই কালে ইন্দ্রিয়সকল अटक इंड िकर्डशाकर्डश कान थात्क ना। मर्दान भाडी-রিক স্থাবের ইচ্ছা হয়। কিন্তু বিবেচনা করিতে হইবে আ-मता रच मतीदत्र सूच किंछ। कति त्मरे एमर किटन विनिर्मिछ स्रेशांटक अवर जारा मनत कि ना। म्मावेरे अजीि करे-ভেছে, এই বপু পঞ্চবিধ অকিপিৎকর পদার্থ দ্বারা প্রস্তুত। লার তাহা অতির কালমধো বিন্ট হইবে। চিরকাল ক-धमरे थाँकित्व ना। जता हैदात सूच छःच छकी त्य करत, সু, অতি নির্বোধ ৷ কিন্তু একেকালে যে সুখের চেকা हतिए हरेरव ना हितका हरे छु: एवर्ड कान योशन कतिएक न्य काता त्य ऋथ

नामछिक। १

ক্রিক করে করে জনা কুরুর্বো কিঞ্চিৎ শারীরিক কর নাম হয় করে তাহা ক্রিক। আর সংকর্ম দারা কে রেপ ইর জারা জাবন্ধর। দৈহিত সুধ অপেকা নান-কিব কর্ম সহস্র গুণে লোক। ছক্ষ্ম দারা বে ক্ষণিক শা রীরক ক্ষ্ম হয় ভাহার পরক্ষণেই সেই কুকার্মজনিত যে ক্ষমতাপ হর, ভাহা আবার সেই ক্ষণিক স্থ অপেকা সহস্র গুণে ক্লেশ্বর হইয়া উঠে।

কুকর্ম কর। কোন মতেই উচিত নহে। কুকার্য্যকে क्रहें अनःमा करत मा। याहाता, अत्रः कृष्णी जाहाताओं बननगरिक कुक्तिशांत निक्तावान करता। किन्छ प्राशत मा-ধারণ সকলেই সৎকার্যোর প্রশংসা করিয়া থাকে। অভএব কুকার্য্য হইতে বিরত হওয়া এবং সৎকার্ব্যের অনুষ্ঠান করা উচিত, তাহা হইলে লোকেরা মুকুষানামের সৃত্তুম রক্ষা করিয়া চরমে পরম পদার্থ লাভ করিতে পারে, নতুবা कि পশুরা কামকোধাদি ইন্দ্রিয়স্থপ সাধন করে না। জ-গদীশ্বর ফেমন ইন্দ্রিয় দিয়াছেন, তেমনি তাহার শাসনের ক্ষমতাও দিয়াছেন। স্থাবিশেষে ইন্দ্রিয় চরিতার্থ করি-লেই ঈশ্বরাভিত্পেত কার্য্য করা হয় এবং বিপরীত করি-লেই পাপ। ভবাদুশ ব্যক্তিদিগকে অধিক বলিবার প্রয়ো-জন নাই। কারণ ডোমরা নির্বোধ নহ। সকলই জান তথাপি উপদেশ প্রদান করা আমাদিগের কর্ত্তর কর্ম। अकरन जांत्र अवकी विरम्य कथा अहे, मना नडानरथ निष् त्र कत्र। अधरर्भत अश्यदिक मिख रहेव मा। भिछा मार्जा ९ जनामा <u>खक्रकमि</u>नाटक रमता ६ माना कता क्षानाटख्छ মিথা বাকা বাবহার করিতে নাই। আবশ্বক ভিন্ন অধিক कथा कड़ता खुमागा । जाहा इट्टल ल्लाटक वाहाल बदल ।

বাচালের কথার কেই শ্রন্ধা করে হার নিরা উন্নতিত্ব ক্রোধ, আলক্ত এবং দীর্ঘক্ততা এই কয় দেখি আৰু করিছে হয়। ঈশরের প্রতি ভক্তি ও ভাঁছার উপাননা করিছে হয় আর খাহাতে আন্তিকা বুদ্ধির উদয় ও রাম্বি হয়, এনদ বিষয় আলোচনা করা কর্তবা।

बक्रां हें हों विद्युचना करों छे हिंछ त्य, मछा कैंथा वित्रिक हरेंदे विश्वा त्य मछा कथान काहां ति हानि वा मत्म द्भग हर छाहा वित्रिक नाहै। छद कि लात्कर मनञ्जकित कना मिथा। कथा कहित्छ हरेंद्व छाहा के नेट्ट। यदि हानिकनक वा द्भगकर मछा खात स्थकनक मिथा। छे छत्रविथ बाका कहित्छ निषिक्ष हरेंग। छद त्य यहां धमन कथात खातकाक त्यथात कि करित्छ हरेंद्व। ध धालांद्र छे छत्र धरें त्य, छमन यहां त्योनावनयन करिता। थाकांरे छछ।

বিষয়বিশেষে প্রতিদিন সম্ভবমত পরিশ্রম করিতে হয়। পরিশ্রমের অদেব গুন। শ্রম করিলে শরীর সুস্থ ও সবল হয়। তাহাতে মন সর্বাদা সমুক্ত থাকে। বিশেষতঃ রক্ষনীযোগে পরম স্থাবে নিদ্রা যাওয়া বায়। দিবানিদ্রা শতি মন্দ। তাহাতে নানাপ্রকার পীড়া জন্মে, কিন্তু বালক রন্ধ ও যাহাদিনের এ বিষয়ে অভ্যাস পাইয়া গিয়াছে তাহাদিরের প্রতি এ উপদেশ নহে, প্রভাবে গাত্রোপান করা ও সদাকাল পরিষ্কৃত থাকা অতি আবশ্রক তাহা হ-ইলে কোন প্রকার পীড়া হয় না। প্রতিদিন কিঞ্চিৎকাল নির্দোষ ভামোদ করা বিধেয়।

পরিবার পরিপালন, দীনের প্রতি দয়া, সাধ্যানুসারে ক্সভাতীয়ের সাহায্য, বিপক্ষের বিপত্নরার, অক্তকে জ্ঞান

সামাতে সাধারণের উপকার হয় তদিববের অমু-कि कर हैं नेसर्यान्द्रशत कर्डना। शहाता अहे मकन महाबादमात अपूर्वम करतन उँदाता है कननमाटक थ-भारतीक जन । समुचा विजिहा शना इस। अञ्चव मार्यान, त्यम मन्द्रक्रमिश कि कार्गा (जामागिरक्षत श्रवृधि करण ग। ्यश्चीत् प्रदेशम मञ्जटनमञ्जूर्व वाकाविन अवन कतिहा कुमातनान औछ धरः उपन्यसन कार्यः कतिएक माउछ इहे-त्वन। अहे नमस्य वनज्द काश्रात्वं कि इन। विवास अकाकी বাটী হইতে যাইরা নান। দেশ ভ্রমণপূর্কক প্রায় এক মাসের পর গৃহে প্রত্যাগত হইলেন। পরিধারবর্গ তাঁধার অদর্শনে নিতান্ত মুংখিত ও ভাবিত ছিলেন, একণে ভাষাকে প্র-ত্যাগত দেখিয়া সমুষ্ট ইউলেন। রাজা বলভূৎকে জিজানা করিলেন, ভাতঃ ৷ এত দিন কোখায় গিয়াছিলেন, বলভূৎ কৃহিলেন, মহারাজ! এই স্থলের উত্তর পশ্চিম দিলে কা-শ্মীর নামে এক অতি রমণীয় মগর আছে। দেখানে যত প্রকার দ্রব্য দেখিলাম, সকলই আশ্রেগ আমি তাহার थकी ज्रावात्र वर्गना कतिए नक्त नाई। महतावत्रमधा ভাসমান শক্তক্ষেত্র তথাকার এক অন্তুত পদার্থ মধ্যে গণা। তাহা হইতেও পারে, কেন না তজ্ঞপ অনা কোন স্থানে मिश्र नाइ वा श्रमि नाइ। आत मह नगरतत क्रमान काटा अक अज़ुक भर्के जाहि। तम्हें भर्काएत नाम काश्मन-कृषे। जामि अक अकवादत त्रांजि आत हरे शहरतत ममय নিজা ভঙ্গ হওয়াতে শুনিলাম, পর্মতের উপর গীত বাদা इहेएएह, किन्नु छोड़ा ल्लाकेन्द्राल वृक्टिक लातिनाम ना। लाइनिन প्राण्डकाटन उथाकात निवानी अक्की लाकरक (महे विषय जिल्लामा कताएउ तम किल, एकवादत अधिक

রাত্রে একপ ধনি শুন। যায়, কিন্তু কে করে, ভাষা বুলিছে। পারি না। তবে গুরুপরম্পরায় শুনিয়াছি । পরতে তর-বতা কাত্যায়নীর এক মন্দির আছে, তথায় দেখতারা আসিয়া পুলা ও মহোৎসব করিয়া থাকেন। ও স্থান মনু-ধোর অগম্য যদি কেই গমন করে, তরে নে তৎক্ষণাৎ ভন্ম হইয়া যায়। সত্য মিধ্য ঈশ্বর প্রসাণ। আমি উছিব নিকট এই সমস্ত রুতান্ত শুনিগ্র তাহা দেপিতে একবার द्योकुर्माकान्त्र बरेबाहिमाम शतकर्भाष्ट्र क्या बहेबाब करव মে ইচ্চা একেকালে দুরীভূত হইল। সমস্তর ভারেও অনেক ভ্রমণ করির। নানা জাশ্যর্য, ব্যাপার দেখির। জন্য বার্টা आहेगाम। तनकृत्कत निक्छे धके मभाव निवत्र अनिया রাজার জ্যেত পুত্র বিজ্ঞান্তে সেই স্থানে মার্চতে নিতা ই खंडिलासे, व्हालम । এवा निम निक्कांस सीम कमिए विकित विर्यादक करितनमः लारः । वामातः निजास हैध्याः इत्राद्धः क वांत राज्य ज्ञान कृतिया ज्यांनि । विक्रियतीर्या कृश्यालन, नामा ' आमायक केला कारक किन्नु केला वाकिरन कि केहर्य পিত। মাতে ত কপনই আমাদিগকে কে।আনু খাইতে দি-दिस सा। कादय काटमङ हुन कविष्ठा तकिशाहि । विश्वस्तककु दृष्टित्सम्, द्वाम कामान गरि दर्शायस द्वायदम काशाद्यत কিছু না বলিয়া এক দিগে চলিয়া ঘাই তবে ও পিতা মাতা-टिंद भाटेटन मः । विधित्ववीर्था नच्याः सहेता कविटलन, তবে সেই ভাল কল্য প্রভাষেই বাইতে ২ইবে। স্বিধান যেন কেন্ন জানিতে না পাতে। ছুই জনে এইৰূপ প্রামর্শ-शृक्षक हारत काहात कतिहा नवन कविरतन । कनक याई-वात छेटहरण मिछा इहेल मा। ठाँशांपिरशत निक्छे रत ৱাত্রি যে কত ৭৬ বেশে হইতে লাগিল তালা বলা যায় ম।।

ক্রিক করে ক্রিক প্রতিরা প্রভাত হই ছাছে কি না, বেশিতে লা-বিলেন। অনেক কটে রাজি প্রভাত হইল। তথন উভয়ে ক্রিকাকেও না কলিয়া অভি প্রভাবেই বলভূৎকবিত পথ ব্রুক্তিয়া উত্তরপীশ্চন গ্রেখ চলিতে আরম্ভ করিলেন।

किरम माना श्रान श्राणिकम कृतिया नामक्यात कार्यात स्थाप श्री स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्थाप

ক্রেরা শায়ন করিলেন, বিচিত্রবীর্ঘ্য অবল ক্রেরাশায়ন করিলেন, বিচিত্রবীর্ঘ্য অবল ক্রেন্যোই নিডিত ক্রেন্য, বিজয়কেছু জাগ্রন্থ ইট্টা রকিলেন। রাক্রি
ছুই প্রের ইইল, জীন্তর্গা নিজান্ত অভেতন : পৃথিবী নিজক;
তর্গান নিজান ইইলা। তথ্য ভিজনকেতু জনিলেন, যেন
অধিক দূরে কোন হাজি ধীনা বাননপূর্বক গান করিতেছে।
অবল ক্রেণের আর কিছুই শুনিতে পাইলেন না। তরে
নিজা গোলেন।

विकारक व किटलन, जारे । देशता ताकती मार्क विकास हे छिहाटम विविद्यान विविद्या बाहा असियाह है है। गरक मिश्राहे जानाहे त्यांच नहेटलटहा विविद्योगि कोईन लाम, जाल एटरा बाँडेक । এই वित्रिया छूट छाई महनादवार्थ-पूर्वक मिथिए अभिरेष माशिएनम । उश्रम क्षेत्रामी इस्ली मझीड ममाशन कतिसा नाना जांदकश । तामन क्रिक वार्तिरतन। ठिकदवरा नाटन अक जन महस्ती जामिया वमनाश्रदा एक् मूर्वाहेश मिता कवितन, अमा अ कि! हितका गर्रे कि छूद्ध डांग योगम क्रिट्र । असन ज क्थन टार्चि नाहै। यामताच कर मेक्ष (निम्यू: शकि। यनि एक्ष পত্য হয়, তথে কিনা স্ট্রে পারে। ধিনয় করিতেছি, ক্ষাপু পত। অন্ন দেখিয়া কি এত ব্যক্ত হইছে হয়। তিনি এই সকল কথা শুনিয়া চন্দের শ্বন মুহিতে সৃষ্চিতে কহিলেন, त्ताम्। भागांदक भात कि दूवाथ। मठा मठारे कांद्र तिह, পেই চিস্তোরকে না পাইলে এ প্রাণ পরিতাপে করিব। साह कृषि त्व कविता, पृद्ध महा इह मा। विन्तु अक दर-সত্ও গত হর মাই, এক দিন প্রভূচে ক্সপ্লে দেখিলাম, বেন নিয়েশক আভার মৃত্রেংবাদ-প্রিপুরিত গত পাঠ করি-তেছি। ভালার এক প্রহর বিলমে সভা সভাই সেই কল পত্র পঠি করিতে হইল। যখন আমাকেস্থানান্তরে যাইতে ছত, তাহার জ্বাণত তিম চারি দিন পুথের যেন নৌলারে:-ছन कतिया स्कार्थात्र योहेस्टिकि, धरे ए**श** मिथि। यानस्ट कामि एक एक प्रविशिद्धि, कहित अवाष्ट्री मिक्क बहै-রাছে কি না বলিতে পারিনা। কিন্ত এই বার বুরি কি প্রকার হয়। অধবা এই স্বপ্ন কালস্ক্রপ হইয়া নিক্রাবস্থার ध्यां मोटक दम्या पित्र हिया। मिथे, कि कतिव ! काथां त्र त्यां क्षेत्र कार्यक्षात्रके स्त्रण शाहित । यदश स्त्रिश्चा अवस्ति छ। कार्यकार्यक्षिते युक्ति नामात्र समस्य काश्यक वृद्धिशहरू ।

विकार का वह नकत कट्यालकथन खनिए हिरतन। निकारतक किंग्जिमीर्शास्त्र कहिला, जाहे! छनित्व छ, सामि गरा रनिवाहि जाना मङा कि ना। अकार रहागात न अपने एका रहेगा एवं याद विवास आहाकर कि, क्रिया छ्रहामित्यात निकटि याहे । विकित्य विकित्य विकित्य महा-नाम कि छेबाख क्षेत्रांटकन ? वस्तुन एमचि, छेशामिरशव निकट विवेश जाउसका कि ! ताकरनत मंत्रा ताका वक् कित। श्रामि क मूर्कि मैनियाहि, स्वर्यानि कोभक्ती। हेण्हानुंगादत मानाक्षकार चाकात थावन कतिएन भारत। अहे दिश्वा मार्बर्डि। कानांत्र अथनहे दिक्छे। कात्र চইম' উঠিবে। বিজয়কেই ক্চিলেন, ভাই। সতা দেব-त्यानित तम क्या पारक। जाम, काहा इहेरलह रा ५० किया त्कन। आमतः शृह्यकः छहाता माती. जीव मिक्छे शृहासत निरम्य इस कि। विकित्नीयी करिस्मम, कि मान्दरी। जिला भक्ताकृतन बार्यादिशक या भक्त डेशक्तम निरंडम, छार्र कि मत्न १८६ मा। विक्यत्कर् यहित्वन, ना च विवतत्त्र छेलारांभी धमन कान छेलान्नकथा आबाद मान हर ना निष्ठिवरीयां कवित्तन, महामहं। अकृतिम मन्तात् श्रह शिला योगापिशतक मिकरणे जाकिया किळाता कदिलान. एउ। मोनिद्भव बाहात हर्माटा ? मही तस्मा कतिता करि-ब्बन, छोड़ा त्ये आवात विकाना कतित्यक्रन, क्यनंत्र कि नाकि बाह्य। हेरांत गत्या घर जिम यात्र रहेश विशादर। त्ममन त्रुष्ठा कि मा। विषय्राके के किराम, के जूमि विशिधा यात्र । अष्ट वष्ट वष्ट कतिया कथा करिष्ट मा । विक्रियवीर्मा

13

श्काराको गृष्ठ् यता कहितान, जागात श्रे विक श्वेवात देखिहान कहित्तन, ता नकत कि मान नही বিসমবেতু কহিলেন, হাঁ কডক কডক, বিশ্ব প্রায়ের বিশেশী পহিত তাহাঁয় কোন উপযোগিত। নাই। বিভিন্ন বিভিন্ন লেম নাই কেন সেই ব্যাহের ইডিছাস। বিশ্বপ্রকর करिएगर, करे छारा छ आभात मत्न नारे नाम, तेन दर्शिके बिहिजदीया कहिरलम, दम भाष्णिति विकास अकान मिनयो ছিলেন, স্বামি সেৱপ করিয়া বলিতে পারিষ না। তবে ভাষাৰ ভাৎপৰ্য্য বলিতেছি, অবণ কলন। একটা নাম্ভ कंडकर्खाल मारक मटक करिया निमीत कीत निमा गा हेटलिक, अ मगत्य अक काछ्य जीत्र के विवाधिन, तम बाहि दादिता প্রোণভন্নে কলের দিনো প্যাইতে থারত করিল, ভাষা নেখিয়া নাম হাসাপুর্বক কহিল, হে কন্ত্র। ভুমি পলাও क्य, सामात निक्ते क्षामात पानका कि? जामात कर उ নহ অপেকা ভোষার পরীর অভি দুড় ও ফুর্চিন। করুপ ক)হল, ভোষাকে বিশ্বাদ কি। আর তুমি কহিলে, আমার শরীর অংশেক্ষা ডেমার নম্ভ ও নথ কোমার অভ্যন আমার শরীর তোগার নাম ও নাখে ভেদ হইবে না। একথা দ্যার্থ बढ़ि; किन् बिटकमा फनिश तन तमिन, भीतक मश्रद्धना শ্রপেকা দুড় ও কঠিন হইয়াও কোমল নেমশুকে পড়িলে ভথ হয় কেন? পত্ৰৰ ছোমার দত্ত ভুনথে আমার শরীর इंडन, न। महेवात व्यमान कि। निठा वह शैंजहाम है। क्यनामस्त हैश दिनता छेशमरशांत्र कतियाहित्यम, त्म छेशत व्यत्भका আমি বলির্জ, ও আমার কি করিতে পারে, ইহা বলিয়া प्रवर्द्धरमत निक्छ भयन कहा अमात । छाष्ट्रांट्ड खोत विश्रम् हरेएक शादत । दिन्यन महानेत्र । शिष्टा हेश विनिताहित्सन,

विकारमञ्जलकात् है। जहे । यसन सामा

विषय त्वर्थ वक्कान्त्री नामा चाटकल कविएए प्रियम क्रम नमका श्रिकारिको साम कक मस्क्री कार्नित विकाशकात्र, मश्चित्र भाव भावि भावातः कतित स्ता आहि आम शतिजान क्रिक्स नरूव राजमा रहेटच क्रू रहेर । आति सनर्गक व भारमणि असर (मर्काइ तहन क्षत्रिकात कांद्रभाक माहे। इत्रोध क्षत्र ज्ञानतम दृत, यहर्ड प्यशिव मिक्छे **कांक्र**भवीय क्लिमांन करिता निर्वादमा हरू। ইছা বলিয়া রোদন করিতে কাগিলেন। এমন সমতে ম-शना नामी अक महरुदी आंतिश करित्तन, मधि। अ कि । वक्कंटम स्व भागम स्ट्रेसना कारा। कक्कारम म ल्यान শরিত্যানের উপক্রম করিয়া ভুলিলে, সোণার অঙ্গ কালী हरेंगा नियादह। तम् की नाह, दम मात्रश नाहे, तूरकत अन्दि-গুলি এক এক খানি করিয়া গণিয়া সভয়। বার। সার कराक पिन प्रमन कतिया किए। कदिएन अपून कतिया ভুলিবে, মহারাজ চক্রকেই ও মহারাণী বৈজ্ঞত্তী লিভত্য পুরের শোকে মৃতকম্প আছেন, জাবার তুমি বুরি তাল্ল-मिश्रक मासून प्रत्यकात्रकाश कतिहरू विभाग है। हो स्मिनिया वन प्रति, त्यांगांत किरमङ्ग अजात। सजादक कहिरण তিনি आकारणत ठक्के आनिया पिटल शास्त्रम, गरंब मरम नक्न कथा ताथा जान नम्। अक वात पण, यहसे कक्षी शूक्रम टारिया हिनाम, उहारक मन छा। धर्मन कृतिग्राहि। तम जिम क्षांग तालिक मा । कावाह किकामा कहिरतक बाह किन्न का किन्ना वन को। सकत कर्पा (शाके करिन्ना ताचित्र

কি কৰা সংগাৰ ভাষা বন গেৰি, ছুমি দাহানে গাৰ জেনি নাহ, ভাষাৰ কেমন কাকার ও কত এছৰ এবং কেন্দ্ৰ দেশীৰ মনুষ্য।

তিনি কহিলেন, রোন্। তত চলিতে পারের হা জেলা ভাষার থেকপ রপলাবনা তাহাই থলিতে পারি আৰু ক্রার जागात कमश्रकाश नाजिश्वत, नाजिमीय, मनीक मुक्क ভাহার সৌন্দ্রহার কথা কি বলিব। তাহা বর্ণনা করা বার ना । डाँशत अनुष मलाहे, सुनीय त्याहम, विश्वात वकायुक् सूत्री इत्राखन, उरुम्भू विभिन्ति नामा, इत, इत्राखन धवः अर्थवृत्रम दक्तवनं । उष्टम्म त्नीत वर्ग, बिलाटफ कि एट-भम अन्दर्भ श्रुक्त रवाद कति, आह हती माई। विधान वृद्धि मभूमात जताह भोक्या এक शहन (मधियात समा मस्त्रीन-পূর্বাক সেই পুরুষরত্ব প্রতি করিষাছেন,। কন্যাপর ৰূপ-हर्ल, कुमाद्वत सुकुमात्रण त्म हे शुक्रापत मिक्छ मणमलाद রহিয়াছে। পূর্বে জী চক্তমন্তব আঞ্জয় করিয়া কমপের শোভা দেখিতে পাইতেন না। পদ্মে ধাকিয়াও সুধাকরের माञ मन्तर्गत विक्लं हित्तन, धक्तन धंहे भुक्तवारकृत इर्मछल जाअप कतिमा दूष १९ मिलनी अ निमाकरतत मोक्स्या , दर्शश्रहा धीटा व्हेटेट्ट्स । याप कविकटत कार्कण लांच मा थाकिछ, यानि कमनम्गाम कफैकहीन इहेछ, यनि কলানিধি কলক্ষ্যপেক-বিবৃত্তিও ইইতেন, তহে৷ ইইলেও यथाकरम जीवात छक, कत अ मूरशत छेशमान करेक कि ना मराम्हण्या। याद्यां मकन दक्षत्र औं अक स्राप्त राशिस्त চায়, যাহার: গ্রীতিকর পদার্থের অন্বেষণ করে, যাহার। भृषितीत्व मध्व कि हैश कानित्व देकृत, वाशता तमहै शूक्यटबर्कटक (पशुक निष्ठा, हेर। विनिद्धाई मकन वला रहेन।

विकि रहात् देखमन सम्मत श्रम्य व्यामि ववटिएउटना दासि विकि शिक्ष में स्टाटक अमम सम्मत्र दासिशाष्ट्रि, यजावजः में काबि द्वारकमन सुकीई एटेटन।

अक्रमा कविद्वान, यनि अमन हम, তবে তाहाँ अना क्रिकेट रहेगांत मंडर मारे बढि। छोज, छेहित्यत अत्या-कार माहे। देशवा क्ट्रेंटन मकन कर्या मिन्न क्या अक्रात् हेम्स, भाशासि करा गाँउक ; कना एकदा प्रशासिक नना ্ ঘাইনে, ভিনি ভাবৎ দেশে চিত্রকর পাঠাইয়া রাজপুত্র ও সম্ভান্ত লোকের পুরুদিনের প্রতিমূর্ত্তি আনাইলে তাহার मस्या यक्ति (कह तम्हे शृक्त रुस, उत्य उ लामात आमा मकत हरेदा। सञ्चा आत कांन छेशार नाहे, यनि भूश ना हहेशा যথার্থই কোন পুরুষের সহিত তোমার সাক্ষাৎ হয়ত, ठत ठ कान कथाई किन ना। किन्तु <u>वित्रित्</u>र खाँउ धक প্রকার, ভূমি ৰয়ে কাছাকে লেখিলে, তাছার নাম কি ও নিবাস কোথায়, 🚁 হাহার বিস্ফুরিসর্গ অবগত নচে; তবে কেমন করিরা ভোষার অভিলাম সিদ্ধ হইতে পারে। जान कृषि क वानिका नह, मकतहे दुक्टिक भाव दन एकि, अञ्चकांत्र विषय सिंग व्यास स्था स्था क्या एक इंग्ड अवर एउम्सार कहें यिन छेश्रासम्बद्धिः इंडेंड, उद्ध छोड्याकः कि विनादः। वि-বাই দৈবনিৰ্বান্ধ, যাহার সহিত শেখা গাকে, তাহায় সহিত্য हरेरव । क्लनहे उद्दिन जनाथा हरेरव ना । क्य, पृज्ञ, वि-ৰাহ এই কৰ্মজিভন্ন ঈশ্বরাধীন। তাহা প্রভন করিতে कारांत्र माथा नाहै। यनि स्पर्धे स्थान्ये पुरुष्यत्र महिल ভোমার বিবাহ লেখা থাকে, তবে অংখ্যই হইকে। জার यिक रज्ञथा ना भारक, उत्त कथनई हरेटन ना। उत्त त्वथा चार्ष्ट् बिन्सा दिन्ही-कदिएक हुईदिव म' अभन्न महि । किन्न

रामिका ।

প্রবিষয় চেকার অসাধা। যেখানে চেক্ট ক্রিলে ক্রাড় সিন্ধিনা হয়, সে খলে ঈশরের উপার ভার সেওরা বহু আর কি উপাব আছে। অতথ্য বিধাতার মনে বাহা আছে ভাহাই হইবে, ভোষাব আমার কথাতে কিছুই হইজেল পারেন:।

ইছারা এই প্রকার নানা কথোপকখন করিতেছেন, এছ नकत स्त्रीनिया निकासक्ष्यु कृष्य स्ट्रेट्ड खरद्यास्ट्राव टेडफीन कतिरु विभिन्नवीर्गः विश्वत्र बात्रः। कतिरुष्टम, जिनि विभूष्टे ना श्रमित्रा महीतः इंहेट्छ कुछत्त अवछोर्ग इंहेरलन। दिछिब-বীর্যা অগত্যা সেই স্থানেই থাকিলেন। বিষয়কেতু নিঃশক্ষে পদ সঞ্চারপুরাক ঘেষানে খ্রীলোকেরা ক্থোপক্ষন ক-রিকেছিলেন, তথার গিয়া উপস্থিত হইলেন। রন্ধীরা তাঁহাকে হঠাৎ সেখানে দেখিয়া ভীত ছওয়াতে বাজনন্দন च छत्र मिता करिद्रतम, धामि अनुष्ठा, जाश्रमानिद्रात निक्के শংপ্রতি অতিথি। উচ্চার এই বাক্সপ্রনিয়া রমণীগণ স म्यूलं मिन्न इड्राज পाরিলেন मा। डाइफिलाর बाकात र्रेक्टिंड ७ कथानाई।इ उत्प्रत नकन स्भिनेहें स्तथा याहेरड वाभिन। धित्रदेश मळवारक करितम, मणि मङ्दन! नाश्त रहा। अञ्चलित महाभारत्व मध्याति क्तिएत हता। कृषि ভোজনগৃহ इरेट जल जानश्रने कता अकारन यरथंछे আসন আছে, তাহা আরু আনিবার প্ররোজন নাই। ইহা বলিয়া ভাঁছাকে জল আনিতে পাঠাইয়া বাগনদানের मिरा पृथिभाङ क्त्रङ कहिरलन, महाम्य ! এই স্থানে উপ-বৈশন করিয়া বিশ্রাম করুন। র**্জপুত্র** উপবেশন করি-वामाज समना एमादत कतिया पुरातिमिखिए जन ९ जन-পানীয় নানাবিধ নিউল্ল স্থানিলে ডিনি ডাহা হইতে কি-

सम्बद्धिका।

32

कित्रदेवनः कविकान, महान्यः शिन्वः वाहित्यः, वक नायक विवासि-द्विर्वादात्रं अक कृत्र कार्ष्यः, आमाणित्रद्रं महे कृत्रः क्या उत्तर्वाद् मामक वाह्रा कार्याप्रदेशं कि भाषित्रितः व्याप्ति क्याप्ति निवासिक्षां कर्षाम क्षेत्रं क्षित्रं कि भूदतः अन् वास्तिका माभी आमाणिद्रातं त्राक्षातं पूर्वितः कि भूदतः अन्ति वक्षी वक्ष व्याप्ति माभी आमाणिद्रातं त्राक्षातं पूर्वितः कि भूषाद्रम् अक्षी वक्ष व्याप्ति । अहे कालावित्रो क्षित्रमाखित अमा भूषाद्रम कामा श्रीवाद्रमः अहे कालावित्रो क्षित्रमाखित अमा भाषाद्रम क्षित्राक्षा अवाम श्रीति क्षित्रमा भूषावित्रम क्षित्रमा । भाषाद्रम क्षित्रमान क्षित्रमा क्षित्रम क्षित्रमा भूमन क्षित्रम माख्या भाषाद्रम क्षाप्ता कामकावित्रीः, हेक्स क्षित्रम सिरम्बमद्रश्चा विद्याक स्त्रम क्षित्रक श्रीति।

রাজপুত্র, করিলেন, জোপনার: বে, দেবকনা ভারা কি

धारात विश्वाम कर्ति, शिव तिनक्ना। इहेटवे, उद्देश क्रांबर्स क्रिया कर्ति । विश्वास क्रिया । विश्वास विश्वास । विश्वास विश्वस विश्व

অধানে রাজকনা বিজয়কে ভূকে দেখিরা অহবি উ।হার নাম ধাম জানিতে নিতান্ত অভিলাত্মিনী চইকোন। তিনি বাছাকৈ সংগ্রে দেখিরাছিলেন ইনিই সেই পুরুষরত্ম। বিশ্ব লক্ষাপ্রতুক দেখাছিলেন ইনিই সেই পুরুষরত্ম। বিশ্ব লক্ষাপ্রতুক দেখা দিনে রাখিলেন, কাছারও কাছে প্রকাশ করিলেন না। চিত্ররেখা রহসা করিব। কহিলেন, মহি বাস্থিকে। যে অতিথিটা আসিরাছেন, তিনি কেমন স্থলাল ও কেমন হারপ্রকৃতি, দেখিলেই একটা মহঙ্জ মনুষ্য বোধ হয়। মুখে যেন হাসি লাগিরা রহিয়াছে। ভূমি ঘাহাকে স্থপ্নে দেখিরাছ, ইনিত সেই মহাপুরুষ নহে। হদি হন, তবে প্রকাশ করিয়া বল এবং যৌবনরূপ উপ্নের দিয়া এই অতিথির সংকার কর। রাজকন্যা শুনিয়া লক্ষায় মুকুলিভাকী হইয়া রহিলেন। মঞ্চলা কহিলেন, স্থি। হানি কি, শ্রু ত হইয়া যাউক। আমাদের এই ইছো

বাসভিক।।

বিশ্বিদ্ধি করি করি ভাষা হইয়াছে, এফালে তোমার মত ক্রিক্টি করি নির্দ্ধি নির্দ্ধিনা লক্ষার পান্তনভূমী হইয়া কহি ক্রিক্টিলি করি কেন। অথবা তোমালিলের মনের ক্রিক্টিলিই করি একটা পাত্র, তোমরা ছইটা কনা। এই ক্রিক্টিলিই করি একটা পাত্র, তোমরা ছইটা কনা। এই ক্রিক্টিলিই ইইবে। এই প্রকারে নানা পরিহানে করি-তৈ করিতে ভোজন করিয়া আচমন ও সামুল মেরমপূর্ত্বক করিয়া লইলেই ইইবে। এই প্রকারে নানা পরিহানে করি-তৈ করিতে ভোজন করিয়া আচমন ও সামুল মেরমপূর্ত্বক কর্তনে ক্রেজিল উপবেশন করিলেন। রাজপুত্রও মাহার করিয়া আচমন-পূর্বক তথার উপবিষ্ট হটয়া চিত্ররেথাকে কহিলেন, তারতি! ভোজনাত্তে সমন্ত রুক্তান্ত কহিবেন, বলিয়াছেন, এফাণে যদি কেনা বোধ না হন, তার সেই সমুদার আজ্ঞা কর্কন।

চিত্রবেশ কহিলেন, মহাশয়! প্রান কাল। পুরাকালে ব্রন্ধার ইন্থায় পুরুরবা নামক এক থকের উৎপত্তি হয়। তাঁহার প্রকৃতি ও পিলিতা নায়ী ফুই ভার্দা ছিল। একের সন্থান বিশ্বপ্রবা, যাঁহা হইতে কুরেরপ্রভৃতির জনা হয়। তিনি তপংপ্রভাবে ব্রন্ধার্ম ইই্য়াছিলেন। মার পিনিতার গর্ভে ভদ্রপ্রবা ও সোমপ্রবা নানে ছুইটা পুত্র জলা। সোমপ্রবা কৌমারতপত্তী, স্বত্রাং তাঁহার সন্তান দি হইল না। ভদ্রপ্রবা বছদিন পর্যান্থ তার্ম দ্রমণ করিয়া শেষে দারপরিগ্রহ করেন, ভাহা হইতে আমাদিগের এই কুল উৎপত্র হয়। নেই ভদ্রপ্রবার পৌত্র স্নমানী ভগ্রান ভূত-পতির দাস ছিলেন। তিনি এক দিন শিবের আজ্ঞা উল্ল-ভ্রম করিয়া কৈলাস হইতে মন্ত্রা লোকে জাগমন করেন। তাহাতে ব্রিলোচন ক্রম হইয়। এই স্নভিসম্পাত করেন বে, সদ্যাবধি সুমালীর বংশের দেশত বিভিন্ন করিছে কর্মনার জ্বামরণের বশবর্জী হইবে।

সুমালী এই ভয়ানক অভিনম্পাত শুনিয়া নিহের অভ ন্তৰ করাতে তিনি প্রসন্ন হইয়া কহিলেন, ক্লিমার ৰাক্ষ कमा प्रभाश स्ट्रेटन मा, व्यवश्रद्ध स्थामात नश्म अक्षामान-ণের বংশ থাকিবে, কেবল এই অনুগ্রহ করিলাস, ভোমার বংশের দেবত রহিত হইবে মা। আর তালারা কামচারীও इहेट পातित। अरहिस यमा **किंदू** वि**र्गर कम**र शोकित না। ভোমরা অর্গে বাদ করিতে পাইবে নাবটে, কিন্তু ইছে। कतिदन्दे ऋर्ता व्यक्तिरुक्त शहरव । उथन सूराली कहिरणन, প্রভাে তবে আমর। এক্ষণে কোন্ স্থানে গিয়া বাস कतिर, उन्न निर्मित्ते कितिमा रसून। ज्यांनी शिंख कहित्सन, হিমাচলে যে মানস সরোবর আছে, তাহার উদ্ধ তীরে ट्यामता वान कतिरम । जन्नम जिमि रमवीपिरमन भगारमरनत চরণে প্রথাম করত মানস সংখাবরের উত্তর কুলে আসিয়া ভিমত নামে এক মগর পান্তন করিকেন। তদবদি আমান দিগের সেই প্রদেশে বাস। এখান হইতে পূর্জামুখে অ-विज्ञाम शमञ्जूष भ्रमन कहिएन क्षाप्त एरे मार्टन स्मर्थात ट्रिश्चिम यात्र। किङ्ग त्रथ च्यक्ति कत्त्र्या। विस्थितः श्रदेश सामां अकात हिस्स ब ब जारह, धरे बमा हर खान पहुरगात জনমা। আমরা বিমানে জারোহণ করিয়া থাসির। থাকি अञ्चना रकान रक्षण इत्र ना। आमानिरशंत रादवश्रण कव বটে, কিন্তু দেবতারা যেমন এক স্থানে বসিয়া তাবৎ প্র-छाक एर्निएड अस्तिरंड व्यवः कानिएड शास्त्रन, प्यामहा **उद्या शाहि ना कात ज्याना निर्देश मुद्दा हरेरत । ज्यामता** (कर्रे हितकोदी महि। कलकः (मवद ও कामधातिक ভिन्न

বাদাভিক।।

প্রতি আন নিমিন্ত আর কোন বিশেষ কনতা লাক। এই নিমিন্তই প্রথমে আপনাকে দেখিয়া শস্তুতিত-লিম্ব বছরাছিলান। আনাদিলের রকান্ত ে এই শুনিলেন। একান্ত আপিনাকে কিছু জিল্ডানা করিতে চাই।

বিষয়কৈত্ কহিলেন, ভগবতি : যাহা অভিয়াচি হয়, का करमा। अ वागरमत मिक्छे अश्रम भीवना अवनंत ্বিক্সিয়া পাপনার অবমাননা করিতেছেন কেন? চিত্ররেখা কহিলেন, নহাশৰ আপনার যেৰপ মধুবাক্তত দেখিতেছি উহৈতি বোৰ হয়, জাপনি সামান্য লোকের সন্তাম ম श्रुरियम। रम्मन शक्तमञ्ज सूर्यग्रिखिङ श्रुरण, शित्रक मणि का-ঞ্চনে জড়িত ইইলে জ্বিক শোভ্যান হয়, কেমনি আ-पनि क्य टाइन कताटक टकान मानागरन **अधिक उँव्ह**ाल ह-देश थ कित्व। आशिन किर्मिन्छ वहे अनमा सामि आग-নন করিয়াছেন, অনুগ্রহ করিয়া সনুদায় কহিলো ফুডার্গ भेरे । वि**वस्तिक प्राप्त भरम** किरवटमा क्रिक्सिम, हेराजिन ণের নিকট অকুত পরিচয় এনেনে কোন থানি নাই। অন্ত-এর মনার্থই বলি। এই ভারিয়া ফাপনার পরিচয় ও ভ্রমণ-कृषाश्व व्यादमात्राष्ट्र वर्गन क्रियम । किस् मदक व्य महरा-ण्डारक अनिवारक्रम, जाहा अकाम क्रियम मा। आध-পরিচয় প্রদানকালে তদ্বিষয় গোপন করিবার জন্য অতি भावभान-भूतंदः कथावार्धः कहित्सन।

हिजदेश कहित्वन, महाभग । धना चालनात णाहम, खामानित्यत शूक्त्वासकतम প্রতি শুক্রবারে এখানে पाठी-गाउ खाद्दि, किন্তু এখানে বে মনুবা আসিতে পারে, ভাদা কর্মনও শুনি নাই। যাহা হউক, এ বিষয়ে জাপনাকে ধনা-বাদ করিতে হয়। রাজনন্দিনী ও রাজপুত্র উভরেরই উ-

भट्डर अफ़ि सञ्चारभंड मकात हरेशायिक विकास है किकात विकेश किकामा कविएउ आंडणीबी के अमा विक কিপ্রকারে ভংগ্রের উপস্থিত করিবেন, মাস নাম কা कारभागन कतिएक कार्यायकार्य के बात जीवन, करोड़ी ক্ষায় উপত্তিত করিয়া দেই। স্বাবার ভাবেন মদি ফোন-মন্দ্র ভাষ্ট্রিকার প্রকাশ হয়, তবে হিতে বিদরীত হইছা জ किरन । मृद अपन, अनन निषय फेटलरचंत्रहें श्राह्मन साहि है ष्यथव। क्यांचि । इद्यानिशतक स्वतंत्र मनागत्र स्विद्रेज्ञ हैं शंख वाथ रूप कान अहा करिएन जनाकण विद्याना कहि-र्वन नः। याहा रूक्षेक, भत्रहित्व व्यक्षकात्रमय, जामात्र मानवान ছইয়া জিজান। করাই উপযুক্ত। নতুবা কি বলিতে কি विभिन्ना र्ल्लिन। बहै छादिश खेटिनस विघटन विधादकारक मार्थाथन क्रांत्रेश क्रिंट्लन, स्मित्र होगरनत हम्स्थहणात ন্যার মূকের বজুভার দাখে, অন্ধের মূকুরে প্রভিবিধ দর্শ-त्मत्र माण, भटकत পर्वाउ डिल अन्ता मात्र आपि वकति छेक काकालक कतिरहिष्टि । भूज भनुषानिगरक दक्षि निर्श्व जामता अवश्कृष्ठ महेता भारत। पाम महेत, याभनाविधात मधूत मदाया बांकल व्हेंत्रः वयः बागाविक जान । संविक्तः **डेरमार भारे**बा ७ (भोसमा कर्मात्म निर्देश स्ट्रेश क्रकी প্রস্তাব করিতে যাধা হই ছে। চিত্ররেগা কহিলেন, ভ-का अठ विद्नुष्यात अद्याक्षय कि, याश देखा, यमधुष्टिक চিত্ৰে জিজাসা কছন।

রাজপুত্র কহিলেন, দেবি : আপনাদিশের রাজার করটা সন্তান। তিত্ররেখা বিজয়কেতৃর অজ্ঞাতসারে প্রিয়তা-বিদীকে স্কাং হাসা করিয়া ইঙ্গিত ছারা কহিলেন, সুখি। বুকিতে পারিয়াত, পাখী ফাদে পড়িয়াছে। প্রিয়ত।বিশীও

विश्व किया

क्षेत्रक विकास अक्कारण अतिलाह প্রিক্তি কেছা কর্মেই ভোর অধীনতাসূপ क्रमन हेन श्रीतशृत हेहैं (न हे ताक आनिता মান্ত্রিক কর্তন করপুপে অননত ও মুখোর হৈছে এক নটক সাদিয়া ভাহিয়া কেলায়। एउम्ब कार अम्प्रता नकत अकात्र छटन विकृषिण का करलारकत নিকট খ্যাতি প্রতিপত্তি লাভ ক্রিতে গাকে, তথনই তুই কাহাকে তোর অর্থনিত কঠরানলৈ আহতি এদান কৃতিসং ेहा । धनि भश्यमञ्ज्ञ स्ट्रेट्ट्या वात ए। किनु क्रिन्ट्र भाके मा। मन निस् पूजा दिनशिक्ष । माग १ कि हरूम। স্থানি কোথায় গেলে তৌনার দেখা পাইব। ভুনি সকল विषयि अञ्चल स्ट्रेट्स । क्रम्युक्ट क काल जुनिक स्ट्रेया-ছिলে! ष्यतिहा भवनमभक्ति षात्व एकं छान क्रिका। দালা। আমনা তিরকাল ছাই তাই একর আছার করিয়াতি। একংগ তোৰার একাকী তপ্ৰজন পাৰ্য়া উচিত নুহে। ক্ষণেক অংগণান কর। আংগ আমি আমি, তুই চাইনীকর इंद्रा निवालाञ्चांच পांन कविन, कि जाल्ला। ভূমি यथन বেখানে যাইতে, তথন ভূমি জানাকে সঙ্গে করিয়া লইতে, এখন ভাষার বিপরীত করিলে কেন। পর্লোকে গমন-काटन कामांटन मनी कता दूरत थाकुक, अक्षे। सून्तेत कथांड किछाना कतित्य मा।

অনন্তর রাজা চেতন। পাইরা নানা আক্রেপ কুরিতে লাগিলেন। মন্ত্রী কৃষ্টিলেন, মন্ব্রাজ : বৈহা ছউন । জন-র্থক রোদন করায় কল কি, বিশেচনা করিয়া দেখুন নেখি, কাঁদিলে আর কি পুঞ্জ, পাইবেন। আপান মহাজানবান ভাপনাকে আমি কি প্রবোধ দিব। মন্ব্রাজ : জ্য ইই-

বাসভিদ্যা

্য কাছে। নেমন কলোকাৰে একটা আন আন্তর্গন প্রিয়ার পরিত্যার করে। তেনান কালা প্রায়ার প্রিয়ার করে। তেনান কালা প্রায়ার প্রায়ার করে। তেনান করে। প্রায়ার করে। প্রায়ার করে। প্রায়ার করে। প্রায়ার করেন, সে কর্মাই আপনার মন্ত্রান মতে। প্রায়ার করিছাই নিকট কি অপরাধ করিছাছিলেন, সেই সন্তানকাপে করেছাই করিছা বাদ সাধিয়া নেল।

ं ताका करिटनन, अभवा जामि जनगरे कानि। किस मत त्य त्कान बारशरे थादांव भागिएउटह मा। मुने कहि-লেন, মহারাজ! সকলই সত্য, কিন্তু আগনি ও প্রকার ক-तिरम उ औरमांकिमिन्दक वृत्तान योहरव मा। अऋता हित ষ্ট্র। এ বিলাপ করিবার সময় নহে। বিশেষ্তঃ বিলাপ कतियाहे ना कि स्टेरन। अभूत हाजि अधिक स्टेट्ड ल-গিল। শনের অক্টোর্কি ক্রিয়া করিতে ছইবে। তাহয়ায়ে সম্ভেট্ট হউন। রাদা কহিলেন, হা সে ও এক কর্ম আছে। কিন্তু গুছে একাকিনী স্ত্রীলোক্দিগকে রাখিয়া সকলের श्रामादन पाउन्ना केविक सरह। अया करनत अथारन पास्त শাকুন। মন্ত্রী কহিলেন, আপনি আর আমি গৃহে থাকি, আমার ভাতারা ও বিচিত্রবীর্ঘ্য ও কর্মা স্মাধা করিয়া জা-द्यन। ताका नच्या स्ट्रेलन। शरत वनज्ञ । वनाङ्क भव महेराम । विध्विदीया धक हरा ही म ८ वर्गत हरा अक थामि निज गरेशा भारत भारत छलिएनम। धारक अक-কার রাত্রি জাহাতে জাতাশমগুলে ঘনতর মেঘ ছইরা थक अक रात विष्ठार, रहेबा खारात शत करन रू नज सनि करिया वसुभएन स्टेट्डिका। छोराजा किंत्रमृत अमन

क्षिक राम स्थेशिक कम रहेटल भव मार्गहेटलन। ৰ জীয় প্ৰতিষ্ঠ কৰিব মোচনপূৰ্ণক স্থান করাইয়। ও নব প্ৰাৰ্থীয় বোদন কৰিছে কৰিতে কহিলেন, দানা। विश्व हे के विश्व कर । आहे। ! जूमि कि महिलाइ। ক্রিক্টেক্টেক্টিলেন দেখ দেখ, দাদার সেই মুখ, সেই कार्यक अरे जी. मञ्चर महेबल बहिना एक, काल जीवन কাই। কি সাম্প্র। বাহাকে এক দও না নেখিলে শত যুগ कान हरेज, थाकि का हाइवे की दसर्मा तह तिथिया छम किय-ेंखरह । त्रांतन कतिरंड कतिरंड किश्लान, पाण : त्यांगांतक अभारत कि कतिरू आविद्याहि, तुनिरू भाविर्द्य रा। जानि তোমাতে कटमत ना विमर्क्तन मिन्ना गहेरा। व्यक्ति অবধি তোমার নাম অস্ত গেল। জার এ জগতে কাচারত স্থিত তোমার দুখল রহিল না। আর কেন তোম কে प्रिश्चिट शाहेरव ना, वा कृषि**ड का**हारक प्रिश्चिरव ना। व्यमखंत व्यक्षनि शूर्न कतिए। क्या वहेंचा कहि त्यम, माना ! ত্মি বড় পরিপ্রান্ত আছ, এখন তৃত্তিপুর্নক পরঃ পান কর। এই তোষার শেষ নাম গ্রহণ করিলাম, এখন তোমার নাম কেবল ছুঃ খের ফাস্পান स्हेश। प्यात (कह স্থে তোমার নাম গ্রহণ করিবে না। এই অবরি হাহা-কার উপাধির সহিত বিজয়কেতু নামের উল্লেখ হইবে। ভাই। তুনি আমাদিগের কৃষ্ণিত যেৰূপ অসৎ ব্যবহার क्रिया शमन क्रिल जारा जात यनिवात नटर । जाल याह यिन मञ्चलास्ट कहेसा स्माटन कृदव द्यामात नाम जात जा-कात वतः प्रस्तव भागानिकात প्रशासन्द मुख्यिय । व-जिल्ला याहेरा दक्त । असन छेहा नहेता न्याक स्वामहा कर-নই কোমার ক্ষতি প্রবিধতে পারি না। একনা তোমার বিশ্ব বস্তু শারণ করিয়া দিতেছি, ধান জুলি এ শাসত বস্তু জামানিগকে নিয়া থাক তথাপিও কোনাকৈ শানবার কি বিঘা লইতে অভুৱোধ করি। কেন না ভোনার কোনা নত্ত্ব আমন্ত্রা এন্য ক্রিব না। এই প্রকারে নানা ভাকেশ জুল রিতে লাগিলেন।

वराष्ट्र परिस्थान, विधिववीर्या । ध कि ! अक्सार्य (भै अक्षान स्टेंद्र । तथा कें। फिरा कि स्टेंद्र । अरमा, अथन कर्डवर क्य ममाधा क्रिया घाउमा बाउक, এই विविधा धक्यी विश्विका यानिया कहिटनम, धर, प्रशामन कर । विधिववीरी विकित लहेसा छेटेक्टः खरत रमामन कदिएक कविएक कविएमन, माना ! আমি তোমার এমন নিছুর ভাট হইরাছিলান, যে ভো-মার চন্দ্রবদনে প্রস্থাতিত ছতাশন প্রদান করিতেছি। এই বলিয়া বিমুখ **হই**য়া মুখে অগ্নি দিলেন। তার পর রুহ্দাকার এক গাওঁ খনন করিয়া তথাধো পর রাখিয়া কুডাজলিপুটে কতিলেন, তে মহাশার ' একণে আপুনি আমাদিণের নিঃ সম্বন্ধ হইয়াছেন, এজনা আর ভাতৃ সংখ্যাধন করিলাম না। সম্প্রতি নিবেদন, যে কোন অপরাধ করিয়াছি তাড় মার্চ্জন। করিবেন ৷ জলদীশ্বর প্রেসম ক্টয়া আপনার ছরিত দূর कक्रम। आह आश्रीम नाश्चिमनित्म अनुशास्य कृतिसा পরম **পুরুষার্থ মৃ**ক্তিপদার্থ লাভ ককন। তার পর ধবণীকে मरमाधम करिशा करिएलन, छन्नविं वस्त्रवि ! ठूमि मर्ख-সহা এবং সকলের মাতৃত্বরূপ।। যথন সকলে পরিত্যান তখন ভূমি দেহকে আত্রয় দান কর। পার-বারে সঙ্গীর শরীরের আদর করে, কিন্তু ভুমি কি সন্ধীব কি निकींव भक्त कवछाटिक एएएड बाजाबरकू। धनवड व्यक्तन्त्र्वं त्यावरम अम् अम् वंवरम मृख भतीहरू मरचाथन কৰে ক্ষাৰ্থন হৈ প্ৰিজনেত। এফাণে ভোষাকে সৰ্ব প্ৰেক্ষাৰ ধৰণীৰ কোড়ে রাখিয়া আনৱা চিত্ৰত বৈত্ৰ কা বিষয়ে ইইলান। পৰে মৃতিকা দ্বাহা দেই এই পূৰ্ব কাৰ্ম্য কালিতে কালিতে সকলে নাটা প্ৰভাগিত চুইলেন। ইই য়ালি চাহাৰার বাবে প্রভাত চুইল। সকলের ছুই ভিন ক্ষিয়ালি গোক ছিল, ভার প্র ক্ষমে মূল চুইয়া স্থামি। তে লাগিক।

-

ष्यसीय तर

প্রায়ক্তা উপতিত। বসত তাহার আগমন অবণ্যাতেই देशनाभाष्यक्रमञ् लेलाग्रन-लंदाकः स्टेल्वन। त्याविक आह क्रमत हैशाता एडे बन कर आशास्त्रह समा अस्तर राजीवड क्षेत्राचित्र ! वाकः भवामनकात्व अकाता निकत्वे ना वः-ए। यदम कविमा वर्षमा बाँग्रेड शाहित्य मा। स्ट्रांश তাখাদিগকে কেভিয়া নাইতে হইল। ভাষাই। গুই জন অন্য র,জার জনিকার ও প্রভূব প্রায়ন শুনিয়া গ্রহমে প্রা-ইবার পদ্ধাই দেখিতেছিল, কিন্তু তাথা না পারিয়া ছড়তেশে कामान काम करिएक गाणिम। अकार काकिल आह श्रीष कता कवाताली करा ना अवश्वामत आता निवेशीकण वसुद्ध भूष्णक्षण रनम क्षम करत मा। माईछ । यस मीनटकालान माश्टमत शामश्रह केतिया बलशृक्षक त्यय ६ द्यदक धतिहरूमन। লোকে তিলমাত্র শুনিবে তাল প্রমাণ করিয়া তোলে। কেই কতে, রবি সেই ছুইটা পশুহত্যা করিয়া তাতার মাংস ভোজন क्रिटिट्स्न। त्क्ह करह, आमि এই मिरिया आहेगान, डिन

নি এখনও বধ করেন নাই। ক্লভঃ নে জানুলা কি বিদ্যালয় কিবলে কিবলাকের নিকেব কিবলাকের কিবলের কিবলের

 বিষাই বিষাধ করেন, এই ভারে কিছু বলি আলা করিন। জালা করিনে, এই ভারে কিছু বলিতে টারি দান জালা করিনে, ভালা । আমারও তাহাই ইজা কনি উদ্যোধি করে, সময়ক্রমে কার্য্য করা বাইবে। মন্ত্রী নিশক্তিবাদের প্রবাদনমভ সমত সামগ্রী প্রভৃত করি করি এক করে মুগনালনের সহিত বেদ্বিধিনতে ইন্দ্রমালর বিষাইবিধি নিজ্ঞার ইইল। মরে'চ দেপতি স্থানীত ভারে কাল বাপন করিতে সালিতেন।

ें अहे ममरत घारतच्यत अंक मिन रेगमानामध मनिजाा-हारत अने कामरम मृशश करिएड आहेरलन । नाका जावासक ছিলেন, একটা মৃগ দেখিয়া শরাস্থান শর সন্ধানপুর্ধাক দেই মুগের প্রতি অশ্ব চালম করিলেম। রাজাকে মলিচিত ও শরচাপধারী দেখিয়া দে প্রাক্তরে ক্ষতারেরে প্রাক্ততে কারেজ করিল। রাজাও তাহার পদলং পদলং চরিত্রন। তার প্র এক म**হারণো পভি**ত হইবল মূপ জাঁভার দু**ঠিপথে**র বহিন্ত ইইল। তথ্য স্থায়ি কাল উপস্থিত। ব্ৰহা क्षूप्राकृतिके अणि कार्ट्स इहेरजम। शक राह स्वयास्न रेमना-সাসৰ ছিল তথায় কিবিয়া ঘাইতে ইন্টা করেন, আবাহ **जारतम, त्काम् शय निशार्षे वा यादेश किट्टू हे किमि हो।** कलका अमन कहिला अकाकी जामा वृद्धिभारत्व कार्या इस नाहै। এক্ষনে কি করি ভাবির। স্থির করিতে পারিতেছি মৃ। পিপাগায় কণ্ঠতালু উদ্ধ ইইয়াছে। নিকটে জলও নাই व शांन कतितं। ता घोष्ट्रा एकिंक, नक्षमी केशन्त्रिक क्रेटन कारात्र शांकित। आंकि अहे वेदनहें हिश्य शक्त होटड প্রাণ याहरत। याहा इंडेक, विशास देवर्शावनयन कता উচ্ছি, मध्य मध्य हैजाकात माना ७० विजर्व कतिया निक्जेन्ड একটা সহকার ভক্তশাখান অধ্য নম্বন্ধক স্থানীকল আই করবসন পাতিয়া বসিয়া নারা বিষয় ভারবতে শালিক্রে এমত সময়ে বলভূৎ কোন কার্যারশভঃ সেই স্থাবে সা উপাস্থত ২ণরাতে রাজা প্রথমে তাহার সক্ষম শিরা দেয়ি किथिए जी उ रहेटलन । किस यथन ब्लाइक डाइन बिसाब जानिया नमञ्जातशुक्तक शतिष्ठत क्रिकामा क्रिस्टान, जन्म তাঁহার আর কোন প্রকার আশক্ষা রহিল না । পরে ব্রক্ ভূৎকে কহিলেন, মহাশর ! আমি ক্ষুণাড়কীর অন্তার কাতর, কথা কহিতে আমার ক্লেশ বোধ ইইতেছে। আ-भारक किছू जाहारी अगान करून। उलक्ष कहिरमानु মহাশয়। যদি অনুগ্রহপুর্বক আমাদিদের আশ্রমে প্র मार्थन काबन, उटन बाधाया मिर्ड शासि। महूना असारन কিছু পাওয়া যায় মা। চাজা কিজানিকেন, জাপনাদিগের कारणम ज्ञान इंड्रेंट क्ल पूर्त इंड्रेंट । नवजूर किंद्रितन, বছ দুর হইবে না নিকউই আমাদিনের আক্রম। তথন রাজা অনত্যা উহেদর সহিত যাইতে সম্মত ইইয়া অবপুর্বে आदिशहन-शूर्यक अरल्भ अरल्भ प्रजिद्ध आंत्रक करितन। বলভূৎ অত্যে অত্যে পথ দেখাইয়। চলিবেন। কিঞ্ছিৎকাল পরেই জাশুনে উপস্থিত হইরা স্লান ও আহার করত काकान विद्यां । कतियां आछि मूत्र कतितन । विकासत्मन ও বুষস্তপ্রভৃতি সকলে রাজার সহিত নান। বিভান্তালপে করিতেছিলেন, ছারেশ্বর কহিলেন, মহাশ্য ' मिन्नारक (पश्चिमा: ब्यामात अञ्चलकत्तर) मोना जाव उपायुङ **रहेटलटक। अक वात जाबिटलहि, जाशनाता लेमानीन स्टेटनन** किन्तु जाताद्र शतिवादः नमञ्जिगाहादत् एमशिश कम्म क-तिज्ञाहै वा डेनानीन वर्णि। यनि आशनाता उशवी नरहच

ক্ষিত্র লৈক বলা দৃহিতে পারে। কেন না কাননে ক্ষিত্র করি প্রাণ্ড করি প্রাণ্ড করি লাকে। কিন্তু আপানি দিলের বাকপট্টা ছানা থেরপ বিদান লার লালন ক্ষিত্র করি করি লালনার লালন ক্ষিত্র করি করি করিবলালা সামান পরিন্দান মানা নাকে। কোন করিবলালা সামান পরিন্দান করিয়া অবগানী আতার তরিয়াছেন। কলত এনকা মানা পরিন্দানি শাভ শাভ স্থানে দেখিয়াছি। যালা লালক, থানা প্রাণ্ড করিয়া আতার করিয়াছি। যালা লালক করিয়া করিছে। করিছেটি। মানাদিলের ইভিনান অভি আশ্রেমা ইট্রো: আলি একাপ করি কাবি করি করিছেটি। মানাদিলের করিছেল করিয়া করিছেটি। মানাদিলের ক্রিলালি প্রতিরা করিয়া করিছেটি, সাধ্যান্ত্রাক্র আলি প্রতিরা করিয়া করিছেটি, সাধ্যান্ত্রাকর আলি প্রতিরা করিয়া করিছেটি, সাধ্যান্ত্রাকর আলি প্রতিরা করিয়া করিছেটি। মানাদিলের সেই গোভার ন্যা করিয়া।

विकारमन करिएकम, बहानमा। जामता उपरी श कार क्रिका करिएको महिए। आणि पुर्नेद आगीत है लिएमें क्रिका महिए। मिरा आणि पुर्नेद आगीत है लिएमें क्रिका महिए। मिरा क्रिका करिएको क्रिका मिरा करिएको क्रिका मिरा करिएको क्रिका मिरा करिएको मिरा करिएको क्रिका मिरा करिएको क्रिका मिरा करिएको क्रिका मिरा करिएको क्रिका करिएको क्रिका करिएको क्रिका करिए क्रिका करिएको करिएको क्रिका करिएको क्रिका करिएको क्रिका करिएको क्रिका करिएको करिएको क्रिका करिएको क्रिका करिएको क्रिका करिएको क्रिका करिएको क्रिका करिएको करिएको

বাসন্তিকা "

এই বনেই আগমন করেন। তদব্ধি সকলে মিনিয়া আই সামে বাস করিতেছি।

প্রতাপমুকুট এই সমস্ত গুনিয়া ভাঁহার ধর্মনিটার
পরীক্ষাল্লা কহিলেন মহারাজ। আমি পূর্কে না জনি
নিয়া মহাশার বলিয়া সম্বোধন করিয়াহি, তাহাতে কাল
মাকে কলা করিবেন। বিক্রমসেন কহিলেন মহাশার টি
পূর্কে যাহা বলিয়াছেন, তাহাতে ক্ল্যা প্রার্থনার প্রয়োজন
নাই। কেন না বনবাসীদিগকে রাজা বলিয়া সমোধন কলিলে রাজশাদের সার্বিভা হয় না। কিন্তু সম্পতি আসনি
আসাকে কেই শব্দে সম্বোধন করিয়াছেন, অভ্নত্র তজ্ঞা
আসাকে কেই শব্দে সমোধন করিয়াছেন, অভ্নত্র তজ্ঞা
আসাকে কেই শব্দে সমোধন করিয়াছেন, অভ্নত্র তজ্ঞা
আসাকে কেই শব্দে সমোধন করিয়াছেন, অভ্নত্র তজ্ঞা
আসাক করা প্রাক্তা কহিলেন, মহাশার। আপনি
অতি শান্তপ্রকৃতি, ভালেন্তর বলপূর্কক আপনার রাজা
প্রহণ করিয়া বড় ভাল কর্মা করেন নাই। আনি ত্রমান
কলেন করেন তবে
সেই স্কুরাচারকে সন্কিত লও দিয়া আপনার নাই য়াজ্যের
উক্লার করিলা দিব।

ি বিজ্ঞানেন কছিলেন, মহাশারকে যেৰাগ ভদ্র দেখিতেছি, আর আপেনি যে রাজ। বলিয়া প্রিচয় দিলেন, আপনার বাক্তা সেই সূই বিষয়ের সম্পূর্ণ অব্যাননা করিল। ছারেন্ছ্র কহিলেন, কেন? বিজ্ঞানেন কহিলেন, আপনি রাজা বলিয়া পরিচয় দিরাছেন, একতে মহাশার না বলিয়া মহারাজ বলাই উদ্ধান কপে। মহারাজ। এই জনা আপনকার বাক্তার দোষ দিতেছি যে, আপনি সেই ভদ্র লোকের্ছ অনর্থক নিন্দা করিতেছেন কেন। যদি বলেন তিনি ক্রন্দায় ক্রিণ্ড ক্রিয়াছেন। অন্যায়কারীকে নিন্দানা করিয়

अध्याप्त्रा कदिव । तम मडा, किन्नु त्रनूच त्यांच, एक छन् মাদ বাহিত কৰা করে, তাহা বলিয়া কি আপনিও ভালাই केंद्रियंन, भवनिक्त ए। दूरव, त्ववव एम्हे त्व भाभावाती ক্ষা থেমৰ নতে। বাহাত ভাষাত্ত মুখে শ্বনে ভাছার। এই িনিরয়ে পতিত হয়। ভাতএর কমা করন, কার প্রশিক্ষ क्वित्नम ना। के खिलिन वह मगण श्रमिश मिठाछ शीन छ हम १ क्रज कहेरत्न। स्थाव मान मान क्रिं। ह लानिर शन. विकास गत्य जुला माद् । मध्यित भएषा काणि कर्यस । रमिश्र नाहे। जान वात निक्रू कि आया कतिशा उनिथ । यह क्ष नित्तवन। क्षित्रः कृष्ट्रियम, महास्य । आश्रीम प्राया ৰলিলেন, ভাগ কেনে মতেই যুক্তিমুক্ত নহে, কেন লালগুল माह्य कथिए चाहर, थाएए। मामिक्टक विराम कडिल भारत भावित महि। संस्था पार्यक्षत साधामात सामाप्तरा করিয়া জাতেতায়ী হইয়াছেন। তাহরে অন্তি । নিজ্ र विद्वा (कोम गटक भाभ रम मा। श्रृष्ट्राव धर्म-गाँट व्याची ক্ষা করা হয়। অভানে আপতি হুল কেন কটা ভোগ ক-বিতেছেন। আমার সঙ্গে চলুন, সামি মাপনতে হাকেন্ উপক্ষে কৃতিৰ : জাপুনাৰ সমতে দ্যাৰ্থ কৃতিতেছি, সেই হুনকৈ দৰোচিত প্ৰতিকল দিব।

বিক্রমাসন কহিলেন, মহাশার আর বেন গথেও হছয়াছে। একান করিছা ছার্নীভাগী হইতেছেন কেন।
বার বার নিন্দা করিছা ছার্নীভাগী হইতেছেন কেন।
মহারাজ! আপেনি পুনরায় তাঁহাা নিন্দা করিলে বোল
হয়, আনি ক্রোল করিব। দ্বায়েশর কহিলেন, মহাশ্রা
আমি বুঝিয়াছি, ভাগালক্ষী আপনাকে পরিতাগ করিলহেন। সহজেই হিতবাকো বিপরীত বোধ করেন। মুখে

अहेकि विलित्स तरहे, किन्न मान मान स्थापित विलित्स तरहे किन्न किन्न प्राप्त मान स्थापित कर नमूची। स्थान अपन लाट्य विषय नहेंया होता कर्य कर्त मार्थी। साम अपन लाट्य विषय नहेंया होता कर्य कर्त मार्थी। साम हहेंया, जाट्य वाक्यानीटक गाँहे, शांत हैंदे। विशा शृक्ताधिकात शून धारान क्तिय। अहेंक्ल दिते किन्न शांक किन्न शांक किन्न शांक किन्न शांक किन्न किन्न

ব্র্যাকাল উপস্থিত। আকাশমন্তল ঘনতা খন্মটার আক্তন্ন ইজ। হাতক পক্ষীকুল মনের জ্ঞাননের ' পিয় পিষ্ব" ধনে করত বারিদ-বিভানিত বারি পান করিয়। বছ কালের পিপাসা শান্তি করিতে লাগিল। নব জনগরের উদয় দেখিয়া শীথিকুল পুন্ছ নিস্তান করিয়া মৃত্য করিতে-छिन। उद्गिरात गृजानिष्या विश्वति हार कार्यकी **उभवाहत्व क्रेयर अम्। क**त्रल अस्थिमक-नारित मान्याह निटंड नाजिन। मञ्चन जनमभग्रेरतार्भाव क्रियाक्त्त्र क्रा-নিকর প্রতিত হওয়াতে ইন্দ্রবন্ধর উদায় হইল, তাহার সঞ্চ ধাতিম বিভিন্নপ্রকার বর্ণ দেখিলে নয়ন শীতল চয় ৷ শক্রবনুর নিকট ক্টতে বারিধারা সতেকে ভূতলাভিন্তব নিপ্তিত হওরাতে থোধ হয়, যেন সুরপ্তির শরাসন হট-তে শবর্ষ্টি ইইতেছে। ভোষধারের বিক্ষণদ্রার নিঘোৰে প্রবাসস্থ জর্মগণের চিত্ত বিচঞ্চল করিয়া দিল। সত্তরণশীল কীটতুল ও সর্পায়মান বক্রগতিমান শুষ্ক জুণবিশিক্ট নবো-मक प्रकत्त खेगाली विश्वा निष्नां छिपूर्य हिला पृथिवीत গ্রীশ্বক লীন রজোবাশি গৌত করিতে লাগিল।

कृषि, कवाति, काकममध्यक्ति कारणुष्ण मकल अण हिल् किया महिर्विद्यात भाम तृष्ट्य कृतिन । क्रिक्ती पृशिश्वकृति किया के कृष्ट्र पत्र भाम वनक्षी आह्यानिक कहेना । व्यक्ता कृष्ट्र को को भक्तकभार जानम् श्रकाम स्टूर्व ना । व्यक्त मिक्याता क्रिक कृष्ट्र कृष्ट्र कृष्ट्र मांच्रत क अस्त गृष्ट्र के स्ट्रा क्रिक्त गृष्ट्र के स्ट्रा क्रिक्त श्रा क्रिक्त क्रिक्त मांच्रत क्रिक्त क्र

থাণিকে বাস্থিত। যাত্যরণের প্র তানীর প্রাক্তি করি-লেন। দৈবারত উাহার পিতারর গায়েশক-প্রাপ্ত চইল। তিনি যুগগৎ পিছুমাছুখীন চইর গভীর মোকদাগরে নিমগ্র চইলেন। সামীনবর্গের মানাপ্রকার সাম্যা কার্তের লাগিলেন। শোক পার কত দিন থাকে, ক্রমে ক্রমে ক্রিল

प्रकार वामिन्त्र नय त्याच्य छैन्य त्याच्य प्रशीन प्रतिक् छेमानक क्लीम छ्ल्म भयन क्रिक्टन प्रयम ममस्य क्ली-नामाळ्यात क्रिक्शणकथन क्रिक्टिक प्रयम ममस्य क्ली-क्षांडिट ध्यक्ती छक् भक्ते वह छात्र यक्ती शांच क्रिक्ट व्याणित्र । " हा जित्य । उर्काटन त्याहे ब्रोक्टा क्रिक्ट नाव दिश्रों वह हथाना छिन्द्रिक भूतीका क्रिक्ट यक्त क्रिक्ट ध्यक्तात्व विकृष्ट व्रमाव । यथन दामिन्न छक्त বিনিগত এই গাড়িটি অবণ করিলেন। তথন তাঁইবি বিজ্ঞানী কেন্তুর সহিত পূর্বপরিচয় শৃতিপথে পতিত হইল। তিনি তথন বেপ্রকার অভির হইলেন তাহা বলিবার মাই মথীগণের সহিত চিন্তা করিতে কারিতে অব্যাজেই বার্টি প্রত্যাগণন করিলেন। রাজকনা আব কোন বিষয়ে সন্তুটি হন না নিরন্তর কেবল রাজপুত্রকে চিন্তা করেন। আহার, বিহার, ব্যন্তিপ্রশান, সকল কর্মেই নির্ভ স্কাইইলেন। কাত্রি দিন কেবল কিপ্রকারে ক্লমেশ্বকে প্রান্ত ইলেন। ভিন্তালেই মন্ত্র থাকেন। লক্ষ্যপ্রক্র কাহারও দিক্টি

उक् किम जिल्लातया शिक्षुकाधिनी अकृष्टि वांत्रशिकान क-য়েত্ব সংগী এক স্থানে যদিয়া নানা কথোপকখন সংগ্ৰিছে । ছিলেন। চিত্রবেখা কমিলেন, ভাল ভোমর। নল দেখি, রাজকলা দিও রাদি আহার নিজ্ঞ পরিভাগ কবিল কি ভাবেন ? প্রিয়ভাবিণা কছিলেন, ভাষা না বলিতে পারিব কেন। রাজক্ষারে পিতা মাতার হুড়া হইরাছে ডাঙাই भक्तमा लाविद्या भारतमा । हिजरतथा कहिस्सम, मा मा अभि । তা মধ। আমি নিশ্চয় বলিতে পারি ইয়ার মধ্যে কোম বিশেষ রস হাতে। শুদ্ধ পিতা মাতার জন্য এমন ১য় মা। ভাল কোমরা কণেক অপেক। কর, আমি সম্লায় জানিয়া चामित्टिছि। এই अकात बांगाः। वाकनिक्नीत भागमाजादत প্রকিট হইয়া দেখেন, ডিনি করতেলে কপোল বিন্যাস ক রিয়া ভির নেত্রে কি ভাবিতেছেন। চিবরেখা কাঁহার নিকটে গিয়া আফ্রান করিলে তিনি চনকিয়া উঠিলেন। পরে চিত্রবেখাকে দেখিয়া বনিতে বলিলেন, চিত্রবেখা আদন পরিগ্রাহ-পুরুক কৃষ্টিলেন, দখি বাসন্তিকে ! ভুমি নিরস্তর

कि किया कर ? ताकमिननी छाष्टांत अब स्थानिया दिएउडमा क्रिंत्रिक्न, यथमं थ जिल्हामा क्रिन उन्न महान कथा राजा ক্ষিতে হানি কি। বিশেষতঃ পূর্বে এই আশস্কায় কাছা-्त्र निक्ष किष्ट्र विलट शांतिकाम नः त्य, त्नादक किरत, এই সে দিন ভাইটা মরিচাতে আর এই কল দিনখাত পিত। িমাতার মৃত্যু হইরাছে তাহাতে কিছুমাত্র তুর্ন্থেত হয় নাই। **একং**ণ বিবাহ করিতে বাস্ত হইয়াছে। ডিত্ররেখা যদি শাপন। ইইরেই উপস্থিত কবিল তবে काর বলিতে বাধা कि। अहे अकात विद्युष्टना कतिता क्रिट्टान, मूचि छित-तिरथे। किवल फुल्थ फूल्लाई आमात क्या लिए। बिश्वकात অবস্থায় চিন্তনাগ বাস করা অতি ক্রেশকর, তাই জাবিয়া চিত্তিয়া ক্ষির করিয়াছি শুন দেখি, ভালা কি খনদ। ভারি-লাম, আর চিয়কাল হথা চিন্তা করিম। কৈ করিম। যত দিন প্রমায় আছে, জ্জ দিন সংসারে অবশ্রই গারিতে হইতে। जार मार्गादिक कार्या मनःभरद्यान कवि, छाहा हरेया यमि अभवन पृथ्ये रिकृत रहे। विवादाध करितन, त्यान् ! आमोमित्वत ए हाहाई हेव्हा, वामिष्टक कहित्सम, मिथे! যথন যে কর্মা করিতে হয় ভাষার পূর্বের ভগবতী কাতণ্য-মীর পুজা করা আমাদিনের কুলব্রত। বিশেষতা খনেক मिन अर्राष्ट्र मिदीत मिन्दित अमन अ हर्मनाहि कांत्र नाहै। छल, अक मिन काक्षनकूटि निश्चा स्वतीत भूका कविक्र न्यामि . চিত্ররেখা কহিলেন, এত দিন আমাদিগাক বলিলেই ত १**३७। এकरा** जिनि उथाय आहम कि या मटनम्बन । यामस्तिक। कृष्टिरमनं, जिसि तक ? जुभि कार्यात कृषा कृष्टिएः, काणांत्रमीत कथा कहिरल छ। छिन छथ। हहेर्ड काथात्र যাইবেন ? ইছা বলিয়া ঈবৎ হাত্য করত লক্ষ্ণায় মুখ কি-

राहेटनन । विज्ञातमा कवित्वन, मर्चि । किनि कि, नेश्रम् তেমন অংপনি করিয়াছ ভাষার উত্তরও কেমনি অধুপ্রনা हरेएडरे हरेग: कृषि जारांक राम कि ना, **रकामांत कैय**ें शभा हे ममुन। य कविटल हा भागि अहे माज विदेश कहिएक शाहिता. जिनि त्नवी नत्त्रम किन्दु तन्त्र। साहा इंखेक, काश्रम-प्राटी अक्षी दर्शक পाठाइंसा खाना घाउँक, गनि हा जनस्त তথার খাকেন তবে পশ্চাৎ সকলে গমন করিব, নাসন্তিকা किंदिलान, मिथ ! छिखम यून्ति कविताइ विद्युपन कर दर्शन একলে কালাকে পাঠান যায়। চিত্ররেখা কলিলেন, কেন লোকের অসম্ভাব কি। মঞ্জাকে গাঠাও, সে অভি চতুরা, গমনমাত্রেই কার্গা শেষ করিয়া আসিবে। বাদলিকা কহিলেন, ভার নেই ভাল মঞ্জাকেই পাঠান যাউক। নি-करते सूजका नामी अक क्रम विकास दिल, ७१०।एक क्रिएलन, क्रत्म ! कृषि गीख मक्ष्मादक काकिया काम । कूनमा त्य আজা বলিয়া মঞ্লার নিকটে উপান্তত ২ইল। মঞ্লা রাজনবিদ্নীর আহর্মে অবণ করিবামাত্র অতিমাত্র সভ্র ছেইয়া বাদভিবার নিক্ট গননপুদাক কহিলেন, স্থি। কিজন্য ভাকিয়াছ? বাসনিক। স্বয়ং বলিতে লক্জ: ্রাদ লরিয়া চিত্তরেখার জাতি দৃষ্টিপাত করিলেন, তিত্তরেখা কুমারীর অভিপ্রায় বৃষ্ণিতে পারিরা মঞ্লাকে কৃথিলেন, मित मन्द्रता । जूमि बहास दाक्यकूछे विद्या विश्वस अ। हेम उथाय ताक्ष्युं आहरून कि नां। यक्ष्मा अहे वादः श्वितः वियानारताद्यः । शृक्षेक काक्षमकुर्णे याजः कविरत्न ।

মঞ্চল: বিদায় হইলে পর বাসন্তিক। চিত্ররেখাকে কহি-লেন, সপি চিত্ররেখে! মঞ্চলা তথায় গেল বটে কিন্তু তিনি তথার আছেন বলিয়া আমার এতীতি হইতেছে ন।।

শিক্ষাত্রান সমিত অনাধত ভবে ভার হইতেছ কেন? मार्थक का का अपना अपना । हेर्सा के दलाव का अक्षान्य न क्रिएटाइम, इंटारमा प्रमा प्राप्त कि क्षेत्र अनावर्षन करिया , नुश्नकिनीत समीत्म धा-ক্রিনি ক্রিনি ক্রিনি আমি তথার স্ভতেছিলার. कर्मा स्टेक्धनि किन्त्रुक्यवर्ग-निवामी अन्मवानिस्मद শিক্তি শিক্ষাৎ হইল। ডাহারিলকে জিলাসা করিলে কহিল. ক্ষামর কাঞ্চনকৃতে কাতাায়নীয় পুঞা কবিতে নিয়াছি-ें लोग। बाजनमहानद्र कथा किल्कामा कविएल कहिल, कहे मा আম্যা দেখানে প্রায় পঞ্চল দিন তিলান কিন্তু ভাষারও শহিত কোন দিন সাক্ষণ, হয় নাই। ভারাদিগের দুলে এই कथा श्विमा ज्या बाहर्ड जानमाक वाथ कतियां म मा अहे करा अब हतेएउ कितिमा आमिमाहि। याकः रुकेक छान হার বাসস্থান আমি অবগাত আছি ৷ বদি ভোমার হাড়া क्ष उत्त जन। महेडा बाहेटा लाति। डिब्रदाया कवित्नम, मनि प्रक्रमः। कृति एति तक्तिनस्ट्विव मानक्रात्व कथा কহিতে পাব, তাহা হইলে জার কোন ভাননা নাই। অকি अवास मधीरक खित्रमह मःमिल्य कांत्रेया पिर ! काल वन দেখি, ত্রাজনন্দনের বাসস্থান কোখায়, আর ভূমি কৈ একা ति क्यां वहें सहित नकता कहिएलन, मधि । यव कृदिन তোমর কাঞ্চনকুট হইতে সকলে আলমন নৰ তথন দে-शास्त आभारक ध्वाकिनी व्राथिश कानिहाहिल, कामि त्राष्ट्रभन्तम् वामञ्चानाहित প्रतिष्ठत लहेश-किलान।

नृश्यनम्भ करियाणित्वन, त्य कात्म जनवान् जनायीश्रति सीव जावी जनवजीत स्थादक अवीव व्हेंसा जनवाः करिया- হিলেন, বেখানে দেবগণ-প্রেমিত কামদের তার্থনি করিছে।
ভঙ্গ কৈরিতে আদিনা অবশেষে উনীন কোপানতে ভঙ্গার
শেষিত হন, যেখানে পতিবিমোদ-বিশ্বা রাজির বিশ্বা
শুনিনা পশুপদ্যীরাও শোদে অধীর সইস্থাজিল। বে হাজি
অত্যুক্ত নেনে ক কল নানাপ্রকার বেচর পর্যাগালের কি
বাসস্থান ইইছা পত্রবাপ সভ্তা লোচন সালালনাভ্রমার
যাসস্থান ইইছা পত্রবাপ সভ্তা লোচন সালালনাভ্রমার
যাসস্থান ইউছা করিয়, পরিজ্ঞান্ত পথিকদিগকে নিক্ষাটে যাইছে
করে, নেই স্থানের জনতি দুরে প্রাক্র লাম্প্রেক স্বোধর
স্থাতে। দেই সরসীর প্র দিগে রাজনন্দ্রেরা কান
করেন।

नवम मर्ग ।

वानित्रकः मक्रमात भूट्य खारमाभाख करे नमछ रूखाछ क्रिता विजयतकारक करिएमन, मुखि विजयत्वय । भक्रमा कार्याक का कार्याक कि भए, ना भणा कि यामा-कार्याक विकास का कार्यायका कि उत्तर अन्तर के कार्याक विकास का ना। मनना कि तिना, गाँव गाँव विकास कि अक्षाक कि? तिना कि कार्याय कार्याय देश वि कार्याक कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय कार्याक कार्याय भणा के कि कार्याय कार्याय कार्याय पाँचिक। वाक किना कहित्यन, जान कार्याय कार्याय

গ্রিদন প্রাভিকালে বান ভিকার নিক্ট আদিয়া ন'বেল্ল,
দাখি। সত্ত্বা হও, প্রানের সমুলার আয়োজন হওলাছে,
কলা হইতে লাগিল, বিলম্বে প্রয়োজন নাই। বাস ভিদা এই
বাকা শুনিয়া গদন করিতে প্রস্তুত ইলেন। লমনকালে
উল্লেখ দিক্ষি লোচন স্পান্দন হরতে লাগিল। তথ্য তিনি
সাম কলস্চনা দেখিয়া চিত্ররেখাকে কলিলেন, নিজ তিন্তু
থ্রেপে। আনার দক্ষিণ লোচন নৃত্য করিতেছেকেন লবেলে
হয়, কাছের কোন অশুভ ঘটিয়া থাকিলে। জহুল ভিলি
আমাকে প্রহণ করিবেন না। স্থি! যদি তা হয় ওবে হ বড় লক্ষা। চিত্ররেখা কছিলেন, প্রতিকূল দেবতার তোন্ধার অনুক্ল হতন। আয়ি রাজনানিলান। ভূমি কি, লান না,
কপ্রের ভূমণ হার আর হারের ভূমণ কঠু। ভূমি হেমন স্থানরে, ভিনিও ভেমনি স্থানী প্রস্বা। তিনি কথনই ভোমালে
অসামনা, করিবেন না। স্ক্রিয়া কে কোনাই কোনানা,
ক্রিয়া কুছানে নিক্ষেপ করে? বাস্তিকা গ্রিদেশন, লাধি! প্রনিমন্ত দলন করিলে অনেক সাধিক জাতিক দিয়া কালিক কিলেনে, অনর্থক বিলক্তে অন্তিন্ত কিলেনি কালিক কিলেনে, অনুধ্বক বিলক্তি কালিক কিলেনে কালিক কিলেনে কালিক কিলেনে কালিক কিলেনি কালিক কিলেনে কালিক কিলেনি কালিক কালিক

বাসন্থিক। এই সকল প্রামশ নিয়া সচিবকে বিচায় করিয়া চিত্রবৈধা ও মঙ্গলার সাহত বিমানারোদল-পুরুক্ মুন্তুসাধা কাংকেকুটো উপস্থিত হইলেন। দেবীর মন্দিরাভান্তরে নিলা সালিছে প্রণিপাত-পুরুক্তর কহিলেন, ভগরত জগদরে। যেন মনোজিলায় সিদ্ধ হয়। পরে ভোজনগৃহে গমন করিয়া ছিলেন, স্থি চিলুরেখে। কাল এইখানে আহার করিয়াছিলেন। আলা। এই বানে আমহা সকলে বিসাল জাহাকে লইয়া কত আমোদ করিয়াছিলাম। চিত্রবেখা রাজনন্দনের একুখানি প্রতিক্ষতি প্রস্তুত করিয়াছিলেন, তিনি সেই প্রতিক্ষপ ধানি বস্ত্রগধা হাইতে বাহির করিয়া বাসন্থিকাকে কহিলেন, স্থি। দেখ দেখ, এই চিত্র ধানি কেমন হইয়াছে। নাসন্থিকা জনিমেন লোচনে চিত্র

মানিক প্ৰাৰ্থ কৰি কি চিত্ৰ ! আমাৰ ৩ চিত্ৰ বলিয়া ক্রিক বিষ্টা কার্থিক হয়, প্রাণকণর ওকস্কে আন केट व्यक्तिकार हम । हिजादार्था कहिएलन, मधि । दिसन ক্ষিত্ৰ বিশ্বন হইয়াছে? বাসন্থিক। কহিলেন, দ্বি। क्ष्मिक रमेरे क्षांहम रमहे चरत्र दर्गित्छहि। क्ष्पकाल के कृषि मेंबुरमणंद्रपश्चित्छ (पश्चित् व विश्वा छिक्रित्वम, त्वाध क्रिक् रमस्मान वर्शन मालात भीष्रांभव न वहेश सामित्य। আর কান্তের এই কমনীয় কাশ্বি দেখিতে পাটব নাঃ চিত্র-রেহা কহিলেন, স্থি ! তুমি প্রতিরুচি দেখিয়া চি মুখ रहेटन : a cu bal अथवा bayarfa सम्मन गा माहे, ভজ্জনা আমাৰে বিজ্ঞাপ করিতেছ। তথম বাধান্তকা নৈতন্য भारेक कहित्सन, है। मसि ! इस ए कामात वशासंहे जाताः হ্রমাছে, ন্য তো**মাকে** বিজ্ঞাপ করিলান। এই বসিয়া क्रेबर होता क्रबंड कहिरलम, मिन् एउद्यानि वदार्थश् উত্তম হই থাছে। বলিতে কি, আদি প্রথমে চিত্র বলিণ। दुनिएड भाति माहै। जामि मेडा मेडाई लाविदी।हिनाम, তুনি নাথকে লুকাইয়া রাগিয়াছিলে, শস্তাভি অ'মার নিকট আহিয়াত !

वहें अकात करणाशकश्यमत श्रय मकल स्थिति आ-हातानि कित्रता श्रमहात विमारिन आर्ताहर श्रमें के नेत्रम कित्रता मक्तात मध्य भिष्टे कानरम उश्लिख हहें जन। यामिक्ट किन्नतार किहिलान, मिर्थ हिन्दत्य १ श्रीमात महमा छथ। यहिल अद्धि हहें छहि मा, दृषि आर्थ निमा मश्यान मात्र। यनि काहाता अशास आमिया कामारक महिता याम, छर्व याहेन। हिन्दत्यी ही हांत आर्थ अथुः मात्र आर्थ आर्थ आर्थ साआर्थ हें शहिए हहें का विहिन्न नेया छोहोट विकास कहितन, बालीय के स्व र। এবানে একাকিনী आश्रमम कविश्वास्त्रम किरा रुध्दिनन, महाभन्न । जाशनात नाम कि शक्तिक विश्व मिटलन। हिजदत्रथा कविदलन, नहामक विकास विकास ফোথার, তাহতে জান্তান করুন, তিনি জার্মারু বিরেছে गातित्वन । विविद्धवीरा अहे कवा स्वित्रा स्वरमक कल शराह দেখিরা ভাঁহাকে চিনিতে পারিলেন। দেবক্রাদিগকে ভাঁচার যে বাক্স বা প্রেত্যোনি বলিয়া এন ছিল একংশ ভাষা এককালে বেল। তথম ভ্রতার কথা মনে ক্রিয়া केरेक इन्दर्स सामन कतिएक कथिए कि स्टान, स्मित ! स्था-প্রি ঘাঁছার অংঘ্রণে জানিয়াছেন, ভাঁছার লোকান্তর-अर्थि श्रेगाङ । करं यशिक्षा मानाळकात जारकन कहा द्यापन कृतिहरू गाविस्तन। कैं।श्रीत क्रन्सन्थ**न** श्रीनन्नः সম্ভ পরিব।ব বান্ধ সমন্ত হট্য। তথার আইলেন এবং আন্যোপেনে তাবে নুকান্ত অবগত হইয়া সকলেছ ক্ৰ্ন কার রর্ফে হোলন করিতে লাগিলেন। চিত্ররেশা এই সমস্ত দেখিলা শুনিয়া হতবুদ্ধি ও নিজন হইর। বাসিয়া রচিত্রন। আর তাঁহার ন্বন্দ্রিয়া হটতে দর দর অঞ্চলরা নিপ্রিভ **এইতে লাগিল** !

বাস বিকা ও ম দলা অনেক ক্ষণ চিত্ররেখার অপেকা ক্ বিরাহিলেন, কিন্তু রাত্রি অধিক হওগাতে আর সেই ঘোর যনে থাকিতে সাহস পাইলেন না। অপে অভ্যান আল্রান মালিমুখে লম্মন করিতে লাগিলেন। আল্রম যত নিক্ট হইল, তত্তই স্পত্তকপে রোদনম্বনি শুনিতে আরম্ভ করিলেন। আল্রমে উপস্থিত ইইয়া দেখেন, সকলেই রোদন করিতে-ছেন। ইহার কারণ ফাহাকে জিঞালা করিবেন, কে উত্তর क्रिका स्थापन है। क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र का विद्यान है। (एक्षिण क्षेत्रका क्षेत्रका का के अक्षेत्रमाने। विद्यान ।

ক্রিটিপ্রার পোকারের সংবরণ করিতে না পারিয়া क्रिक करिएक सामिश्वकारक करिएतन, अप्रिक्य-क्षान काम कि हमेथिएलहिम, एमाइट नर्यनाम इरेश शिक्षार भ्यामिका वह कथा स्थितिश हाहाकात उरव हित-্ল ভারত নামি ভুডালে নিপভিত হট্লেন। চিত্ররেখা ও जेकिका कारनेक बाज ६ शुक्कवांस ठाइ। र पृष्ठः पानानन क्तिरन जिनि क्षाटन क्छनायाज कर्व । तानम क्रिएक वोभित्नमः। कत्म ठाँशतः भ्वतिभक्षः छथनितः छिवि। मामाध्यकात बाटकश कृतिया कहिटलैंने, श गांध । छः जि-দীকে পরিভাগে করিয়া কোপায় গদন করিবাভ, আমি ত ভোষাৰ সহিত কোন গুৰ্বাবহার করি নাই। এক লাতিদাল माधाने हम डाहाटड धमम क्लाम दित्यम कवाड इत माडे। ष्मधरा जुमि मुकाहिष्ठ इहेशा वहना प्रधिटिक् । नाथ ! ভাষার মনে এই আশতা ইইয়াছে যে, ভুমি সামাকে প্ রিতাগ করিবে, ভোমার মুখে এই বাকা অবণ লালসায় জামে মরণ ও জীবনের মধ্যে রহিয়াভি, ষ'ংল আমাকে একটা প্রতিবাদন প্রদান কর। ডোমার বাকা শুনিয়া বে-श्रोकाञ्ज इस उपमुक्ता कार्या कार्ति । दूशा तकम मानीटक अव-ঞ্না করিতেছ। সামরা স্ত্রীকাতি দরশহালয়া, প্রভারণা काहाटक वरन जोहात विन्युविमर्भेख अवश्य सहित अवदा ষ্ণকরালে থাকিয়া স্থামার প্রণর পরীক্ষা করিতেছ। তা था करो मझ कतिवात शासालन कि, जूबि समाक आश्रमन कर्त, जामि मुक्करके किन त्य, जामि ट्यामा किन जात काशादक कानि मा अवर जुमिह आंगात सन्तरमञ्जू पनि

তোমার শুদ্ধ কথাতে বিশাস না পা প্রায়ে নিয়ে করিছে করিছে করিছে করিছে করিছে করিছে বিশীপ করিছা দেখিতে চাহ ভাইছি করিছিল সাজি

হা দথ বিধাতঃ আমি লোকদিনা ক কিন্তানা কর পরিত্যাগ করিয়া থাঁহাকে সনঃ প্রাণ্ড সম্পূর্ণ করিছান, ক্রাথনির আশা পূর্ণ না হইকে হইতে তাঁহাকে ভোক করার কবলে নিকিপা করিয়াছিল।

रा टाउ! रा माठ:! रा जार: रा ठिकिने । रेजे भरा किथा अवस्। এक बाद व्यक्तिया अ कुश्चिमीत कृत्य प्रतिशा सांछ। श प्रतिकाशिश आणि एकामानिका निक्छे কি অগরাধ করিয়াছি, গ্রুঁ পালে প্রে আমাকে ছুঃখ দিজে-ह। बदम बदम कर शास्ट्र क्रियाहि, धमकन सहावहे ফল, আনা আর কিছুই নহে। জামি তোমার জন্য নিতার ক্ষতের ইইয়াছি। এক বার স্থাসিয়া স্বামাকে দেখা দাও। পাহা! ভোমার সেই স্থকোমল শরীর ফি মৃত্তিকার নিচিত ইইরাডে। সধি চিত্ররেখে আর আমি যাতনা সহ্য ক-রিতে পারি না। এক্ষণে প্রাণকান্তের অনুবর্ত্তিনী ইইয়া তাবৎ ক্লেশ হইতে মুক্ত হই। সবি। ভূমি জামার প্রাণ অপেকাও প্রিয়। এক্ষণে তোমার নিকট এই প্রার্থনা করিছেছি, আ-यांत पृष्ठ दिन वांपकारखत नगावित्व नगाहित कतिया यात भागात जीननीभूवण भभगक, वित्नवटः भन्भ कात्न মাতৃথীন মইয়াছে। তাহাকে উত্তমকপে লালন পালন ক্ষরিবে। সধি! আমার মাঝা থাও, তাহাকে অবভু করিও मा। जानात जवर्डमात्न छोशात्रहे मालामस्यत्न अधिकात भवन महीत्क करित, अशिवमुक स्ट्रेश्न त्यन जाहात्क्र থ্যক্ষ ইটাদ করে। সঞ্জাতি ভাষ্যকেই স্থান্যরূপ শিক্ষা

ৰাপতিকা ৷

कार्य करिका दोना कारन निकास रहना करितन मनुगा क्षान्द्री नेक्षिक्य १० क्लानियान् स्ट्रिक, शास्त्र मा। तन्थे, मिनि। अविधान, त्यन श कत्नि कथा तिभुड स्टेल मा। छात श्रीक सम्भारक करिएनम, भवि मण्यान । हरणारक छात कि विनित्। दुमि मर्थनः मानशाम श्रीकरत। जात समानित ध्यामगुर्व भागीत्थि १३८७ पुत्र किल्याम । वह अनिव खूमि खोधीमा सहरम्। अहं तिहारा ताम शार्थाक काम रहे.. তে তীক্ষবার ছুরিকা নিক্ষাধণ-পূদিক ব্যাণ্ডরে গুণ্ডরন্দরে আগতে কবিতে উবেশ্যন করিলেন। গ্রন্থেন ভূ মঞ্জ হাছাকার করিয়া, কাছাকে পরিতে গেলেন। বিক্তাহাল मा महिएल परिएम्स वामस्तित उदश्याल काम ए कतिया ষরাশান্ত্রিনী হইকেন। চিত্রবৈধা উত্তৈত্ত্বের জ্ঞানন করিছে করিছে। তাঁহোকে ধরিমা। জুলিবলন । বাধান্তিকারে নলাংন্ত ষ্টতে অবংরত রজের রা নির্গত হট,ত সার্গ্রিম । উপ্রায় स्थम ५० दिदर्भ क्षेत्रम्, क्रीता ददा इंह्या शक्ति । क्राप्त शदम ও দৰে মুভ্ৰুত্থ খিল কাগিতে লাগিল, ঠাহার লোচনগ্র श्वि स्टेश ।

চিত্ররেখা রোদন করিয়া কহিলেন, হা প্রিয়নখি।
মহারাজ দক্রকেত্র নাম এককালে বিলুপ্ত করিলে, হান
কি হইল। স্থি। তোমার জীবন কি এতই ভারস্কপ
হইয়াছিল যে, জার বহন করিতে সম্থা হইলে ন:।

বন্য রে কাল: তুই কি জবিচারক, একফালে দেবরা-জের বংশ লোপ করিলি, এককালে সামাদিদের সফ্র-নাশ করিলি। একফালে জির্মখীকে তোর ক্রাণ ক্বলে আছতি দিলি। এককালে জামাদিগকে অপার ইংখদাগরে ভাসাইলি। হায় কি স্ক্রাণাণা এখন কেথার पात! मधि वामित्रक! अक वात अधिवहन अमिन हेतुनी आहा! जुनि कि अमन निर्मता, आमोनिनाटक मां बिद्या हिन्दि ए। जान का जान का कि अकृतिक मना है हैं मां। दानिन याहेगा कि विनिन, हैहा विजिन्न के कि उन्हें दिन का कि विनिन, हैहा विजिन्न के कि उन्हें दिन के विनिन, हैहा विजिन्न के कि उन्हें दिन के विनिन, हैहा विजिन्न के कि उन्हें दिन के विनिन, हैहा विजिन्न के कि उन्हों के विनिन के विन के विनिन के विन के विन

বাসভিকা অতি কোমল স্থান্ন কহিবেন সুপি আমার আবে বড় বিলম্ব নাই। অপা কানমধাই প্রাণ বিনির্গত ইইবে। তোনাকে যে যে কথা কহিয়ছি, লাহা বেন সারণ থাকে। মলি। আনি অনুনক যাতনা পাইয়াছি। একবেন সকল ক্লেন হইবে মুক্ত ইইলাম। ভোমরা আমার নিকটে রোদন করিও লা। একে আমি বিষম আঘাতে জন্তারিত ইইয়াছি, প্রাণ ছট কট করিতেছে। আনার তোমরা ঘদি একবে আমার নিকটে রোদন করে, তবে অধিক যাতনা হইবে। একট স্থিয় হও, আনার জার উঠিবার শক্তি নাই। হইবে। একট স্থিয় হও, আনার জার উঠিবার শক্তি নাই। স্থি। তোমরা একেবারো ছই জনে আল্যুন কর্মুআমি উত্থকে জন্মের মত যুগপং আল্লুক্তন কর্মুআমি কর্ম বলিতে বলিতে ইছিরে প্রাণ বিনির্গত ইইল।

চিত্রবেখা ও নজলা মৃত শরীরের নিকট ধরালুপ্তন করিয়া বোদন করিতে লাভিলেন। রাজরাণী ও রাজা সেই শবের শরীর স্পর্শ করিয়া কাদিতে কাদিতে কহিলেন, লা পুরে : তুমি মগ্রেই গমন করিয়াছ। একানে তোমার প্রণবিনী আসিয়া তোগার অমুবর্ত্তিনী কইলেন। হা পুরি : একালে কাপরিচিতাবস্থায় আসিয়াছিলে, আনাদিগের সালত একটা কথাও কহিলে না। যাহা হউক, তুমি সভাই প্রেম করিয়াছিল। অথবা মন্তের বাকা কথনই স্থালিত হয় না, যাহাকে মনে মনে বরণ করিয়াছিলে তাহা ভিন্ন আর কালাকেও পাণি

বিভিত্তবিধ্য এই ঘটনায় অতান্ত নোকাকুল ব্রিয়া ভাবিলেন, আমিই জাতুহতা। ও শ্রীহত্যার কারণ। বদি তথ কালে দাদাকে উন্মাদ এবং দেবক নাগদগকে রাফনী জান না করিছাম, লাহা হইলে দাদার কগনই মৃত্যু হইত না। আর কজনা দেবকনাাও জাল্লঘাতিনী হইদেন না। এজ এব জামিই এত্যুভংগুর মরণের কারণ। হা। তথকানে বিবেচনা করিয়া না দেখিয়া কি পান্যায় কর্মা করিয়াছি। ইহাতে জানী লোকেরা কহিয়া গাকেন, যে অপ্রিশ্ব-দশী লোকেরা পশ্চাৎভাপে মহাক্রেশ পান্ত। হা আমি কি মহাপাপ করিয়াছি এজনণে আমহত্যা করিয়া এই মহা-পাপের প্রাথশিত্ত করিব, অথবা তাল কবিলেই বা এমন কি বিশেষ কল হইবে। মাতা পিজ সংপ্রতি আমাকে দেখিয়াই জীবন ধারণ করিতেহেন। যদি নৈবাৎ আমার কোন জুম্বদির্ঘ হয় তবে ভাঁহারা কথনই বাচিবেন না। এক পাপের প্রায়শিত্ত করিতে গিয়া আবার জনা একার শুফতর পাপভারী হট্ড। ব্রান্তনার বিশ্বস্থা এই লাভি করিতে লাগিলেন।

ক্রমে বর্ণার শেষ ইইনে শার্থ উপাছিত ইইলা প্রের্থিন কাশ কুম্বেন, সরোবর শেতগালে ও সভরন্দীল মর্থেমি-থানে, রসনী তারকাডোন-মধাইটী শশ্বনের ম্বাকরে ওমিন্ত হইল। ব্যাতল বিশ্বত্যান্ম, নাগার জল প্রিষ্কার হইল।

এক দিবশ রাজা বিক্রমণেন মন্ত্রীর সাঁহিত এক শীলা উল্লে বসিয়া নানা কংখাপকখন করিভেডিলেন, এমত সময়ে কতকগুলি দৈনিক পুল্যে লেন্টিত এক ব্যক্তি তাঁহাদিলের নিকটে স্থান্ত্রন করিণ স্থানেস্থরের লিখিত একখানি পত্র खानाम कविष्य । द्वाङा भव जरेत्रा भार्क कविराउ वार्धियनम् यशे दर महानाः। इति स्म तिन मृत्यातः कियो व्याधनात আএমে উপস্থিত হই ৷ তার পর আপ্নার ভাতৃত্য সন্তাব-হার দেখিরা মনে মনে নিজান্ত লজ্জিত ২ইটারি ৷ কেন सा ज्यामरे बङ्ग्किक आशमात हाडा अदिकात कविया ছিলাম। দেই গড়িত কর্মে আমার যে। সুগেনেও অধর্য হইয়াছে ভাষা হটতে আগে কথনই নিমতি পাইৰ না । स्य सं इंडेक, बकल जाशनांत सङ्ग्राका जाशनात्क भूगः **প্রদান করিতে** ইন্সা করিয়াছি, খনি করা প্রদর্শনপুরিক ष्योभिता ष्यांभेमात दियह जालांग अध्य कराम, जस्य मिलाच চরিভার্প ইট। রাজা পত্র পাঠ করিয়া মন্ত্রীকে সকল ক্রা कहिरतर। मही खाँनमा सर्वेषिष्ठ ७ घारतघरतत धारार মুক্ত ইতেম, সে নিন সেই স্থানেই বাস করিয়া পর দিন ইাড়িংফালে সপরিবারে ছারপুরে উপস্থিত হওয়াতে দ্বা-क्षिक्षे ममामत-शूर्वक छाशानिगरक अर्ग कतिरलम छ

रामाध्या ।

कि १ कि तिस्मेर्ध के कि कि जो कि कि कि । जनस्-कि कि श्रीहरू नाना जारमाम स्टेट क्रांनित । करवक महिन्द्र स्टेमर्ट गठ स्टेन।

अध्यानिक्षत्र द्वारम, विकासत्मनत्क मण्डिगाहादत कविता विकास निर्मालक मदी बन-ममत्क विकास नित्व करिएनन, হিলি । সাপনাৰ ৱাদ্য আপনাকে প্ৰতাপণ কৰিবাম. कार्यान इंट्रमम् तात्र अहन अ यथाना अमे अवा भागम क्रीमा । दिक्तमानन कहिएलन, ताकन ! आंशनि त्य आखा ক্রিডেছেন, তাহাতে আমি কোন কলেই অসমত হইডে शांति ना, किल आमि आत विशमकालकश विषयकांदक केषिह इंदेरिक देख्या कति मा। यनि यालमात व्यक्तिकारी इश् अति कामाद एक व्यक्तियक सुनील मधाम जाएए. ভাষাকে রাজা **প্রদান করন।** রাজা, শুনিয়া সম্প্রভ চ**ইলেন** পরে শুভ ফানে র'কপুত্রকে অভিযেক করিয়া রাজ্যাদিকার क्षान क्रिटेंसन। ब्रांका विकायमन कराक किस छश्चा व्यवकार-शृक्षक भिकीषादा विनास महेना मिक बाक्यानीट है গমন করিলেন। প্রজার। পুরাতন প্রস্তুর সমাগমে সক্সেই व्यानमन श्रुक्षक वाकात महिन्द्र कावनंद्र कावता बद्भरवी-बाणि भन्ने ६३म। नगरत <u>अण्निर्ह</u> भागः **मर**ाध्यस ছইতে গাগিল। রাজা আত্মসন্তানকে রাফ্যায়া করিছে দেখিব। এণয়গরিত্র পরস মিত্র স্থাকের দহিত গর**ম জ্থে** বাস করিতে লাগিলেন।